कोरिया
एक परिचय

Bhushan
bushan Lal Koul
Mohan
R/o Kashmir.
was a clear

कोरिया
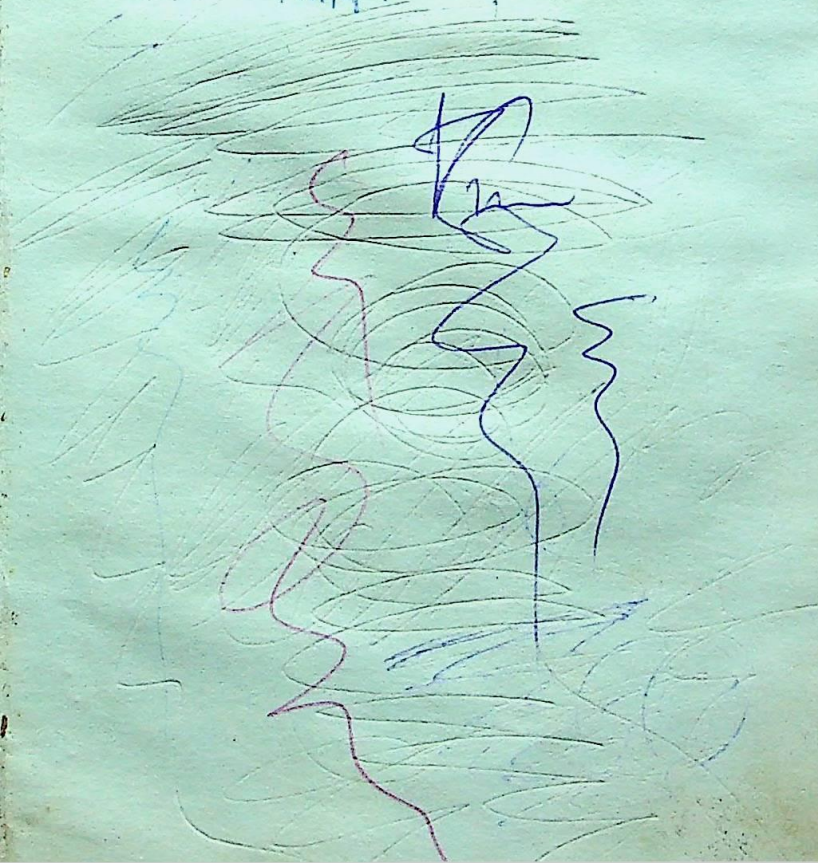
एक परिचय

१९७४
कोरिया की समुद्रपारीय सूचना सेवा

कोरिया गणतंत्र के राष्ट्रपति पक चुंग ही

विषय-सूची

छह करोड़ आबादी वाली कोरिया की राजधानी सउल का एक दृ

वार्षिक राष्ट्रीय खेलकूद के प्रारम्भ के अवसर पर देश के विभिन्न भागों से
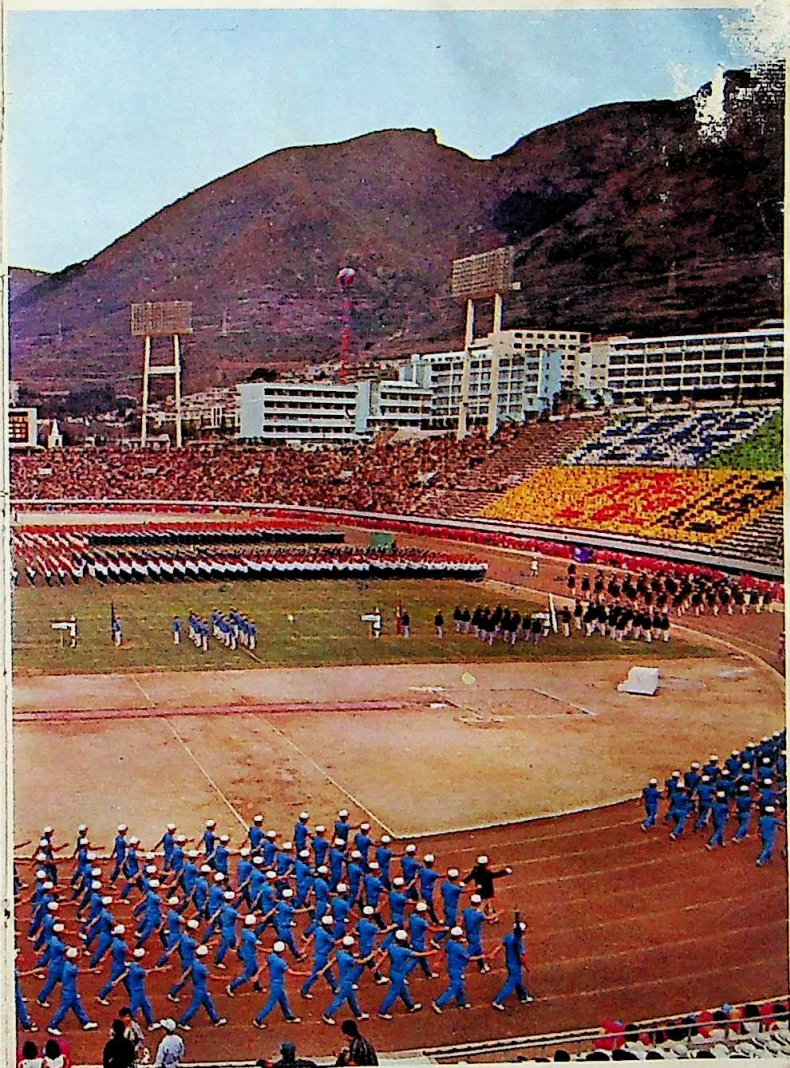
आये खिलाड़ियों के परेड का दृश्य

धिपत्य रहा है, का क्षेत्रफल १,२२,३७० वर्ग किलोमीटर है। दक्षिणी भाग कोरियाई गणतंत्र, कुछ छोटा है। इसका क्षेत्रफल ९८,४४७ वर्ग किलोमीटर है।

कोरिया का तटवर्ती क्षेत्र, जो काफी कटावदार है, कुल १७,२६९ किलोमीटर लम्बा है। पूर्वी तट पहाड़ी और उबड़ खाबड़ है। यहां आने वाले ज्वार की ऊंचाई केवल ६० सेंटीमीटर तक होती है। उत्तर में वनसन और च्योंग जिन के अलावे अच्छे बंदरगाह बहुत कम हैं। पश्चिमी तट नीचा और काफी कटावदार है। तटवर्ती क्षेत्रों में मिट्टी के मकान देखने को मिलेंगे। यहां ज्वार का पानी ६ से १० मीटर तक उठता है। सबसे बड़ा बंदरगाह इंछन है, जहां पानी का उतार चढ़ाव १० मीटर तक होता है। यह दुनिया का दूसरा सबसे ऊंचा उठने वाला ज्वार है। दूसरे अच्छे बंदरगाह गुनसान और मोजपो हैं। दक्षिण में बूसन भी अच्छा बंदरगाह है।

कोरिया के इर्द-गिर्द छोटे बड़े लगभग ३,३०० द्वीप हैं। इनमें २०० के करीब आकार की दृष्टि से इतने बड़े हैं कि वहां लोग बस सकते हैं। दक्षिण में ९६ किलोमीटर दूर स्थित जेजू द्वीप का आकार तो इतना बड़ा है कि उसे प्रशासनिक दृष्टि से एक अलग प्रांत का दर्जा दिया गया है।

कोरिया एक पहाड़ी प्रदेश है। उत्तरी भाग में अति प्राचीन चट्टानों वाले पहाड़ भरे पड़े हैं। यद्यपि कोई भी पर्वत अधिक ऊंचा नहीं है, इनकी शृंखलायें खड़ी ढ़ाल वाली, चट्टानी और बेढंगी हैं। फिर भी, इसकी विशालता और भव्यता के कारण कोरिया को "एशिया का स्विटजरलैंड" भी कहा जाता है।

मध्य तायवेग पर्वत शृंखला, जहां से अनेक नदियां निकलती हैं और दक्षिण की ओर बहती हैं, मध्य के मैदानी और पठारी इलाकों में आकर समाप्त होती हैं, जिन्हें कोरिया का "अन्न का भंडार" कहा जाता है। छोटी छोटी पर्वत श्रेणियां सर्वत्र फैली हुई हैं। देश में शायद ही कोई ऐसा स्थान है, जहां से पर्वत के दर्शन न होते हों।

नदियां आम तौर पर छोटी और कम गहरी हैं, लेकिन पहाड़ों की भरमार और प्रायद्वीप की संकीर्णता के कारण उनका प्रवाह तीव्र है। सबसे बड़ी नदी सुदूर उत्तर में एवरोग है, जिसकी लम्बाई ७९० किलोमीटर है। दूसरी बड़ी नदी दुमान भी उत्तर में ही है। यह ५२० किलोमीटर लम्बी है।

दक्षिण की मुख्य नदियां नागडोंग (५२५ किलोमीटर) हान (५१४ किलोमीटर) और गेयम (४०१ किलोमीटर) है। कोरिया की राजधानी सउल हान नदी के मुहाने पर बसा है। इनके अलावा बहुत सी पहाड़ी नदियां हैं, जो बहुत लम्बी नहीं हैं, परन्तु उनका तीव्र प्रवाह और मार्ग में स्थान स्थान पर जल प्रपात उनकी शोभा बढ़ाते हैं।

कोरिया की जलवायु समशीतोष्ण है, महाद्वीपीय और समुद्री जलवायु के बीच की जैसी। लेकिन, समान ऊंचाई वाले अन्य क्षेत्रों की तुलना में यह महाद्वीपीय ही अधिक है। सबसे गर्म महीने जुलाई और अगस्त होते हैं तथा सबसे अधिक सर्दी दिसंबर और जनवरी में पड़ती है।

सुदूर उत्तर को छोड़ कर कड़ाके की सर्दी वाला साइवेरिया जैसा मौसम देश में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। कोरिया की हल्की सर्दी के बारे में कहा जाता है कि तीन दिन लगातार सर्दी पड़ती है तो फिर चार दिन लगातार मौसम अपेक्षाकृत गर्म रहता है।

वर्षा ऋतु जून में शुरू होती है और अगस्त में समाप्त हो जाती है। इस अवधि में औसतन वर्ष भर की ५० प्रतिशत वर्षा हो जाती है।

प्रशासनिक दृष्टि से कोरिया को १४ प्रोन्तों तथा दो विशेष नगरों में बांटा गया है। इन नगरों में सउल भी है, जो राजधानी है। १९७० में इसकी आबादी ५५,०९,९९३ थी। दूसरा नगर बूसन है, जो दक्षिण का सबसे बड़ा बंदरगाह भी है। १९७० में इसकी आबादी १८,७८,७८५ थी।

निवासी

कोरिया के लोग, प्राग ऐतिहासिक काल में उत्तर (आज का मंचूरिया) से आने वाले मंगोलिया के विभिन्न वर्गों की आदिम जातियों के ही वंशज हैं। फिर भी वे जल्दी ही परस्पर मिल गये और पड़ोसियों से भिन्न उनकी एक अलग जाति बन गई। चीनियों और जापानियों दोनों से ही इनकी भिन्न प्रकृति भी प्रकट हुई।

नवीनतम आंकड़ों के अनुसार १९७२ में कोरिया गणतंत्र की आबादी ३,२४,१६,००० थी। इसमें १,६२,९४,७०५ पुरुष और १,६१,२२,२९८ महिलायें थी। आबादी के घनत्व की दृष्टि से कोरिया का विश्व में चौथा स्थान है।
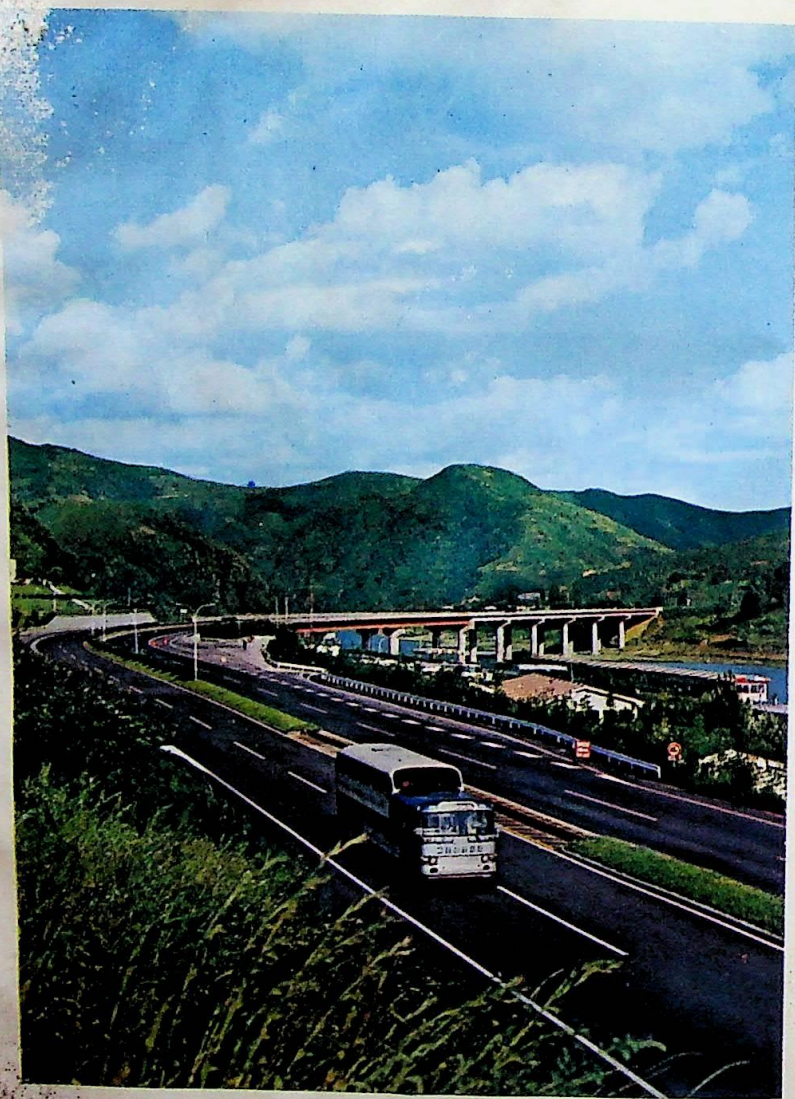
कोरिया के देशव्यापी आधुनिक सड़कों के जाल का एक दृश्य

आने वाले दशक में आबादी में २ करोड़ २० लाख की वृद्धि की संभावना है, जिसे रोकने के लिये स्वास्थ्य और सामाजिक कार्य मंत्रालय ने राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम बनाया है।

कोरिया की सरकार १९६१ से ही परिवार नियोजन कार्यक्रम चला रही है। पिछले दशक में अनुमानतः १२ लाख जन्म रोके जा सके।

१९६१ में जनसंख्या वृद्धि की दर २.९ प्रतिशत थी, जिसे कम कर १९७१ में १.९ प्रतिशत तक लाया गया। १९७६ तक सरकार इसे १.५ प्रतिशत तक ले आना चाहती है। अंतिम लक्ष्य २००० तक इसे ०.५ प्रतिशत तक ले आने का है।

देश के बाहर रहने वाले कोरिया के नागरिकों की संख्या ७,०२,९२८ है। जो स्थायी रूप से विदेशों में नहीं बसे हैं, उनकी संख्या ४०,३८७ है। ये आंकड़े जून १९७१ तक के हैं।

विदेशों में बसे लोगों की संख्या के विश्लेषण के अनुसार जापान में स्थायी रूप से बसे ६,०२,२१८ और अस्थायी रूप से रहने वाले ६,३५२ कोरियायी नागरिक हैं। अन्य एशियायी देशों में स्थायी रूप से बसे कोरियायी नागरिकों की संख्या १,३७८ है और अस्थायी रूप से रहने वालों की ७४,१५१। उत्तरी अमेरिका में ५१,३२२ स्थायी और १६,३७५ अस्थायी रूप से रहने वाले कोरियायी नागरिक हैं।

इसी प्रकार यूरोप में १,०९५ स्थायी और ९,१९१ अस्थायी, अफ्रीका और मध्यपूर्व में २२ स्थायी और ४९८ अस्थायी तथा लैटिन अमेरिका में ६,५०७ स्थायी और ५५६ अस्थायी रूप से बसे कोरियायी नागरिक हैं।

कोरिया के प्रवासियों की संख्या में १९६२ के बाद से प्रतिवर्ष वृद्धि होती रही है। यह संख्या ३१ अगस्त, १९७१ को ६३,११८ थी।

१९६२ में प्रवासियों की संख्या ३८७ थी, जो १९६८ में ५,१९५ १९६९ में ९,१६५, तथा १९७० में १६,२०७ तक पहुंच गई। १९७१ के प्रथम आठ महीनों में यह संख्या १२,४९८ रही।

ऐसे कुल प्रवासियों में से ४४,५७७ अमेरिका, ६,०९९ ब्राजिल,

१,७९८ पराग्वे, १,६९९ अर्जेन्टाइना, ३,७६१ कनाडा, ७२० बोलिविया, ४,३४४ यूरोप और १४४ विभिन्न एशियायी देशों में गये।

कोरिया के सभी लोग एक ही भाषा बोलते, लिखते और समझते हैं। यह कोरिया के नागरिकों की सदियों से एक मुख्य विशेषता रही है, जो राष्ट्रीय एकता और एकात्मता की भावना बनाये रखने में बहुत सहायक हुई है।

कोरियायी भाषा के व्याकरण में, जापान की तरह ही वाक्य विन्यास में कर्त्ता-कर्म-क्रिया की पद्धति अपनायी गई है।

इस सादृश्य का यहीं अंत हो जाता है, हालांकि, १५वीं शताब्दी तक एक और सादृश्य था। ध्वनि पर आधारित कोरियायी भाषा का वर्ण-माला, जिसे हंगुल कहते हैं, जब तक विकसित नहीं हुई थी, तब तक जापानी और कोरियायी, दोनों भाषायें चीनी चित्रलिपि में ही लिखी जाती थी। लिखावट की इस अयोग्य पद्धति के कारण सदियों तक दोनों ही देशों में साक्षरता के प्रसार में कठिनाईयां आती रही, क्योंकि जिनके पास समय और अवकाश होता था, वही जटिल चीनी भाषा सीख पाते थे।

आखिर सेजोंग नरेश के शासनकाल (१३९९–१४४०) में भाषा वैज्ञानिकों और शब्द शास्त्रियों का एक आयोग नियुक्त किया गया, जिसने वर्षों के अध्ययन के पश्चात् ध्वनि पर आधारित कोरियायी वर्णमाला (हंगुल) की रचना की, जिसके आधुनिक स्वरूप में केवल २४ अक्षर हैं और यह लिखावट के लिये सबसे सरल, संक्षिप्त और योग्य माध्यम मानी जाती है।

कोरिया का राष्ट्रीय संग्रहालय, जहाँ ८०,००० से भी अधिक राष्ट्रीय और सांस्कृतिक निधियां सुरक्षित हैं ▶

इतिहास

प्राग् ऐतिहासिक काल

पुराने देश, अक्सर अपने इतिहास का संबंध किसी न किसी पौराणिक कथा से जोड़ते हैं। कोरिया प्रायद्वीप में प्राग्-ऐतिहासिक काल में जन जातियों के एक राष्ट्र की स्थापना के संबंध में भी एक पौराणिक कथा है। कहा जाता है, डांगुन नामक एक देवता इन पुरातन कालीन जन जातियों का नेतृत्व करने के लिये सीधा स्वर्ग से उतर कर आया था।

तीन राज्य (ईसापूर्व ५७–६७६ ई०)

कोरिया में कांस्य युग की शुरूआत ईसापूर्व पांचवीं शताब्दी में हुई, जब चीन से धातु शिल्पकला का प्रवेश हुआ। जो प्रारम्भिक लिखित इतिहास उपलब्ध हैं, उसमें तीन राज्यों के उत्थान पतन की चर्चा है। ये तीन राज्य हैं—दक्षिण मंचूरिया और उत्तरी कोरिया में कोगुर्यो (३७ ई० पू०—६६८ ई०); हान नदी की घाटी के चारों ओर पैकचे (१८ ई० पू०—६६० ई०) और दक्षिण में नागडोंग नदी के किनारे सिल्ला (५७ ई० पू०—९३६ ई०)।

चीन की मुख्य भूमि से सामीप्य के कारण, कोगुर्यो पर सबसे पहले चीनी सभ्यता और संस्कृति की छाप पड़ी। बौद्ध और कनफ्यूशी धर्म के भी प्रभाव पड़े। इस प्रकार इसका एक सबल और अति उन्नत राज्य के रूप में विकास हुआ। फिर भी, इसकी भौगोलिक-राजनीतिक स्थिति, इसकी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये सबसे अधिक बाधक थी। अतः सर्व प्रथम १०८ ई० में स्थापित हान के चीनी उपनिवेशों को उखाड़ फेंकना पड़ा। पुनः सूई और तांग के आक्रमणों का सामना करना पड़ा, जिसमें उसकी राष्ट्रीय शक्ति का क्षय हुआ और अन्ततोगत्वा उसका पतन हो गया।

पैकचे की स्थिति ऐसी थी कि वह चीन और जापान के साथ निकट का संबंध बनाये रखने में समर्थ हुआ।

सिल्ला की भूमि उपजाऊ और जलवायु अनुकूल होने के बावजूद राजनैतिक, सैनिक अथवा सांस्कृतिक, सभी क्षेत्रों में उसकी प्रगति धीमी रही।

तीनों राज्यों ने अपनी परम्पराओं की रक्षा करते हुये चीनी प्रभाव को आत्मसात किया और उच्चकोटि की संस्कृतियों का विकास किया। इन्हीं छोटे राज्यों से गये दूतों, राजनीतिक शरणार्थियों एवं प्रवासियों ने चीनी साहित्य, बौद्ध धर्म, खेती के तरीके, कपड़ा बुनने की कला, औषधि, चित्र-

कारी, संगीत आदि के सम्प्रेषण से जापान में सभ्यता और संस्कृति की नींव डाली।

संयुक्त सिल्ला (६६८–९३५)

यद्यपि तीनों राज्यों के निवासी परस्पर हिल मिल गये थे, फिर भी उनके शासकों के बीच कई सदियों तक शत्रुता बनी रही। सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सिल्ला ने गोगुर्यो के विरुद्ध पैकचे से संधि कर ली तथा बाद में तांग चीन को सैनिक सहायता भेजने के लिये राजी कर ६६० में पैकचे को, और, फिर ६६८ में कोगुर्यो को परास्त किया।

फिर भी तांग, जिसकी कोरिया पर एक लम्बे अर्से से आंख लगी थी, ने न केवल पैकचे और कोगुर्यो पर अपना दावा जताया, बल्कि सिल्ला पर अधिकार करने का भी अपना इरादा प्रगट किया। जब सिल्ला कोगुर्यो के बचे खुचे सैनिकों की सहायता से तांग चीन के सैनिकों को भगाने में सफल हुआ, तभी ६७६ में सम्पूर्ण कोरिया प्रायद्वीप की एक राजनीतिक इकाई बनी।

सिल्ला की सीमा का विस्तार उस रेखा तक हुआ, जो प्योंग यांग और वनसन को मिलाती है, हालांकि उसकी राजधानी पूर्ववत् ग्योंगजू में ही रही। इतिहास में पहली बार बाह्य आक्रमणों के खतरे से मुक्त होकर सिल्ला के शासक आन्तरिक प्रगति, मुख्यतः सांस्कृतिक विकास पर, ध्यान केन्द्रित कर सके। बौद्ध धर्म राजधर्म था। पुरानी राजधानी के भग्नावशेष आज भी बौद्ध वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला आदि की उपलब्धियों के प्रमाण हैं।

फिर भी, आपसी झगड़े, शासकों में व्याप्त भ्रष्टाचार, और विद्रोही सामन्तों के हाथों शक्ति के विकेन्द्रीकरण के कारण राज्य पतनोन्मुख हुआ। ९१८ में एक सबसे मजबूत विद्रोही नेता वांग ज्योन ने सोंगडो में कोरियो नाम से एक नया वंश चलाया, जिसका उद्देश्य किसी समय के शक्ति सम्पन्न कोगुर्यो राज्य के प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त करना था। उसने अन्ततोगत्वा ९३६ में सिल्ला के अंतिम राजा को आत्मसमर्पण के लिये बाध्य कर दिया।

९७३ में खुदाई में प्राप्त यह शानदार राजमुकुट, जिसका निर्माण पांचवीं
ाथवा छठी शताब्दी के लगभग हुआ

कोरियो वंश (९१८–१३९२)

नये वंश के प्रथम राजा थैजो ने, राष्ट्रीय स्तर पर शांति व्यवस्था बनाये रखने के उद्देश्य से सिल्ला के भूतपूर्व अधिकारियों को, जो इमानदार और योग्य थे, दरवार एवं शासन में विभिन्न पदों पर नियुक्त किया। उन्होंने ६९९ में कोगुर्यो से निष्कासित लोगों द्वारा स्थापित राज्य वाल्हे (जो बाद में ९२६ में तारतारों से परास्त हो गया था) के शरणार्थियों का भी स्वागत किया। थैजो और उनके उत्तराधिकारियों ने उन क्षेत्रों को पुनः अपने राज्य में मिला लेने की एक राष्ट्रीय नीति चलायी, जो किसी समय कोगुर्यो के अधिकार में थे। उन्हें अन्त में राज्य की उत्तरी सीमा का पश्चिम में एवरोग नदी तक और पूरब में उस क्षेत्र तक विस्तार करने में सफलता मिली, जिसका अधिकांश भाग आज का हमग्योंग नामडो प्रान्त है। इस प्रकार कोरिया की निर्धारित सीमा लगभग वही थी, जो आज है।

बौद्ध धर्म को दरबार का विशेष संरक्षण प्राप्त हुआ। लेकिन, इसके बुरे परिणाम हुये। बौद्ध धर्माधिकारियों ने राजनीति में पर्दे के पीछे से अपना प्रभाव बढ़ाना शुरू कर दिया। इस बीच राजधानी में एक विश्वविद्यालय तथा प्रान्तों में विद्यालयों की स्थापना से कनफ्यूशी धर्म और दर्शन के ज्ञान के प्रसार को काफी प्रोत्साहन मिला। सरकारी नौकरी की आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति के लिये राष्ट्रीय परीक्षा पास करना अनिवार्य कर दिया गया। फिर भी कोरियो को उत्तर से तारतार और मंगोलों के उत्पात का लगातार सामना करना पड़ा। १०१८ तक उनके तीन बड़े हमले निरस्त किये जा चुके थे। १२१३ में कुब्लाई खां के गिरोह, जो न केवल चीन, वल्कि रूस को भी तवाह कर चुके थे, कोरिया पर टूट पड़े।

कोरियो के राजा ने हमलावरों से बदला लेने की तैयारी करने के लिये गंधवा-डो द्वीप में शरण ली। लेकिन, पहले हमले के बाद ५० वर्ष से भी अधिक समय बीत जाने के वाद, १२७ में संधि करने को बाध्य होना पड़ा। कोरिया के निवासियों को विजेताओं के हाथ भारी शोषण और अपमान सहन करना पड़ा तथा उनकी राष्ट्रीय शक्ति और साधन का क्षय होने लगा।

फिर भी, मंगोलों को स्वयं विद्रोही चीनियों के बढ़ते हुये दबाव का सामना करना पड़ा और अंत में १४वीं शताब्दी समाप्त होते होते उन्हें

चीन की भूमि से निकल जाना पड़ा। इसी समय, एशिया महाद्वीप में मिंग नामक एक नये वंशका प्रादुर्भाव हुआ। फिर कोरिया की भी बारी आयी। मिंग समर्थक गुट के नेता जनरल यी-स्योंग्ये ने मंगोल समर्थक दरबार के विरुद्ध विद्रोह किया और १३३२ में अपना वंश चलाया। नये राज्य का नाम करण चोसुन किया गया।

कोरियो की जनता ने अनेक संकटों का सामना किया और कष्ट झेले, फिर भी उनकी उपलब्धियां सराहनीय रही। उन्होंने दुनिया में पहली बार धातु के टाइप का आविष्कार किया और ८०,००० से भी अधिक काष्ठ-पट्टिकाओं पर देश की भाषा में बौद्ध धर्म ग्रंथ "त्रिपिटक" का मुद्रण कराया। इसके अलावा कोमल रूपों और पानी का हरापन लिये कोरियो चीनी मिट्टी की वस्तुओं की गणना विश्व की अत्यन्त अभिलषित कला-निधियों में होती रही है।

यी-वंश (१३९२–१९१०)

जनरल यी, अथवा, राजा थैजो अपनी राजधानी हन्यांग (सउल) ले गये और सम्पूर्ण राष्ट्र में न केवल सरकारी काम काज के लिये, बल्कि व्यक्तिगत जीवन के लिये भी निदेशक सिद्धान्तों के रूप में बौद्ध धर्म के स्थान पर कनफ्यूशी धर्म को उन्होंने प्रतिष्ठित किया। सरकारी पदों पर उन्हीं लोगों को नियुक्त किया गया, जिन्होंने चीनी क्लास्क्सि में राष्ट्रीय परीक्षा पास की, जिसमें काव्य, साहित्य, आचरण और अनुष्ठान के ज्ञान पर विशेष बल दिया जाता था।

राजा थैजो ने किसानों की अवस्था सुधारने और मिंग चीन से मैत्री-पूर्ण सम्बंध रखने की एक राष्ट्रीय नीति अपनायी। इस नीति को उनके उत्तराधिकारियों ने भी ईमानदारी से चलाया। फिर भी राज्य में आन्त-रिक स्थिरता चौथे राजा से जोंग महान के शासनकाल (१३९७–१४५०) में ही आ सकी।

राजा सेजोंग के शासनकाल की सबसे बड़ी उपलब्धि रही ध्वनि पर आधारित कोरियायी भाषा की वर्णमाला का विकास। यह वर्णमाला, जिसे हंगुल कहा जाता है, लिखावट की सबसे अधिक संक्षिप्त और वैज्ञा-निक प्रणाली मानी जाती है।

उन्होंने विज्ञान, दर्शन, संगीत, प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में भी प्रभावी विकास के लिये पहल की। उनके शासनकाल में पूर्वी तट पर उत्तरी सीमा

का विस्तार दुमान नदी तक हुआ।

सोलहवीं शताब्दी के शुरू में इस वंश के शासक वर्ग के आपसी झगड़े शुरू हो गये, जिनके फलस्वरूप सरकार की पकड़ ढीली पड़ने लगी। जब चीन पर विजय प्राप्त करने की आकांक्षा से जापान ने जोरदार हमले शुरू किये तो कोरिया की स्थिति और भी बुरी हो गई। पर जापान की महात्वाकांक्षा भी पूरी न हो सकी।

कोरिया में, बन्दूकों से लैस जापानी सेना की लगभग हर लड़ाई में जीत होती चली गयी। कुछ ही माह की लड़ाई में सउल और प्योंगयांग आदि नगरों के साथ साथ उत्तर पूर्वी सीमा पर हमज्योंग प्रांत के अधिकांश भाग पर उनका कब्जा हो गया।

पर समुद्री लड़ाई में स्थिति भिन्न रही। कोरियायी नौसेना के बेड़े अपनी गतिशीलता और आग्नेय अस्त्रों की प्रहार शक्ति की श्रेष्ठता सिद्ध करने में सफल हुये। एडमिरल यी-सन-सिन की रण-नीति और उनके कुशल नेतत्व के कारण जापानी नौ सेना को मुंहकी खानी पड़ी। जापानी नौसेना कोरियायी नौ सेना के लौहआवरण वाले नये युद्ध पोत "टर्टल्स" से सबसे अधिक भय खाती थी, क्योंकि यह पोत निर्भीक होकर बड़ा ही साहसपूर्ण आक्रमण करता था।

कोरियायी नौ सेना ने जब समुद्री मार्गों की नाकेबंदी कर जापान की स्थल सेना के लिये कठिनाईयां पैदा कर दी और उसकी सहायता के लिये मिंग से भी सेना आ गई, तो जापानी आक्रमणकारियों को मजबूर होकर १५९८ में संधि करनी पड़ी। फिर भी, ६ वर्ष की युद्ध की विभीषिकाओं से त्रस्त कोरिया को फिर से उठ खड़े होने में कई वर्ष लग गये। भागते हुये जापानी सैनिक और नाविक अनेक वस्तुयें, खजानें, मुद्रण के टाइप और कुम्भकार अपने साथ लेते गये, जिनकी सहायता से उन्होंने अपने देश में संस्कृति का विकास किया।

इन घटनाओं के बाद कोरिया ने एक लम्बे अर्से तक अपने को सबसे अलग रखने की नीति अपनायी। मानो वह एक "संन्यासी राज्य" हो गया। यह स्थिति १८७६ तक रही, जब न चाहते हुये भी, वह अपने बन्दरगाहों को जापान के लिये खोलने को राजी हुआ। १८८२ में कोरिया और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच एक मैत्री और वाणिज्य संधि सम्पन्न हुई। अगले दो वर्षों में इसी प्रकार की संधियां इंगलैंड, जर्मनी, आस्ट्रिया, रूस और इटली के साथ भी हुई।

कुछ ही समय बाद, कोरिया जापान, रूस और चीन के अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति-संघर्षों का अखाड़ा बन गया। पहली टक्कर १८९५ में जापान और चीन की हुई जिसमें जापान विजयी हुआ। १९०५ में जापान ने रूस के साथ संघर्ष में विजय प्राप्त की। इससे कोरिया पर जापान के आधिपत्य का मार्ग प्रशस्त हो गया और १९१० में जापानी कब्जे के साथ ही यी-वंश का भी अंत हो गया।

जापानी आधिपत्य (१९१०–४५)

१९०५ में एक संधि हुई, जिसके अनुसार जापान कोरिया का संरक्षक बना। कोरिया के कूटनीतिक अधिकार जापान के पास आ गये। यह भी तय हुआ कि सउल में जापान का एक रेजीडेण्ट जनरल रहेगा। यह कोरिया की प्रभुसत्ता पर जापानी पंजे की शुरूआत थी। राजा कोजोंग को १९०७ में अपनी सत्ता अपने पुत्र को सौंप देनी पड़ी। २२ अगस्त, १९१० को जापानी आधिपत्य संबंधी संधि पर हस्ताक्षर हुये, परन्तु, उसकी विधिवत घोषणा २९ अगस्त को हुई।

जापान ने पुलिस राज प्रणाली के आधार पर कोरिया पर शासन करने के लिये गवर्नरों के पदों पर केवल जनरलों और एडमिरलों की ही नियुक्तियां की। जापानी, उद्योग, वाणिज्य, खनन और कृषि की प्राप्तियों में बड़ा अंश लेते रहे।

ऐसी स्थिति में कोरिया के अनेक देशभक्तों ने बाहर जाकर दूसरे देशों में राजनैतिक शरण ली। अन्य लोग देश में ही रहते हुये, राष्ट्र को पुनः स्वाधीन बनाने के लिये अवसर की ताक में रहे। उन्हें सभी छोटे बड़े राष्ट्रों के लिये "आत्म निर्णय" के अधिकार के सम्बंध में वुडरो विलसन के सिद्धांत से बड़ी प्रेरणा मिली। कोरिया की स्वतंत्रता के लिये वे जन-प्रदर्शनों के आयोजन की गुप्त रूप से तैयारी करते रहे। एक ऐसा अवसर उन्हें तब प्राप्त हुआ, जब रहस्यमयी परिस्थितियों में राजा को-जोंग की मृत्यु पर सार्वजनिक रूप से शोक प्रकट करने का आयोजन हुआ।

कोरिया के ३३ जन प्रतिनिधियों ने स्वाधीनता के घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किये और कोरिया की प्रभुसत्ता वापस लौटाने की मांग करते हुये जापान की सरकार को पत्र भेजा। घोषणा-पत्र की प्रतियां सम्पूर्ण देश में वितरित करने के लिये उसका प्रारूप पहले ही तैयार कर लिया गया था तथा उसके मुद्रण की भी व्यवस्था कर ली गयी थी।

जापान की सरकार ने इसके प्रत्युत्तर में घोर नृशंसता का परिचय दिया। हजारों प्रदर्शनकारियों को गोली से उड़ा दिया गया अथवा गिरफ्तार कर लिया गया तथा उनको तरह तरह से उत्पीड़ित किया गया। परन्तु, इससे कोरिया के नागरिकों का उत्साह ठंडा नहीं हुआ। प्रदर्शनों की लहर सारे देश में फैली। सम्पूर्ण विश्व में इसकी प्रतिक्रिया हुई और कोरिया की आजादी की लड़ाई के प्रति सहानुभूति प्रकट की जाने लगी। इसी बीच शंघाई में कोरिया के राजनीतिक नेताओं ने देश के बाहर कोरिया की अस्थायी सरकार की स्थापना की।

१९३७ में चीन के साथ और पुनः १९४१ में अमेरिका और इंगलैंड के साथ संघर्ष छिड़ जाने के बाद जापान ने कोरिया में अपना दमन-चक्र तथा शोषण और तेज कर दिया। उसने कोरिया के युवकों और छात्रों की जापानी सेना में भरती शुरू कर दी। कोरिया का राष्ट्रीय-चरित्र नष्ट करने की दिशा में भी प्रयास शुरू किया गया और इस संदर्भ में भाषायी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। कोरिया वासियों को अपने नाम भी जापानियों की तरह रखने का आदेश दिया गया।

फिर भी जापानी छलकपट से अथवा धमकियों से कोरिया वासियों को अपने देश को स्वतंत्र करने का इरादा छोड़ देने को मजबूर करने में सफल नहीं हुये।

कोरिया की आजादी की लड़ाई कभी बंद नहीं हुई और यह तब तक चलती रही, जब तक जापान की साम्राज्यवादी सेना मित्र राष्ट्रों के हाथ १९४५ में प्रशांत युद्ध में पूरी तरह परास्त नहीं हो गयी।

देश का विभाजन

मित्र राष्ट्रों ने, जिनमें अमेरिका, सोवियत रूस, इंगलैंड और चीन शामिल थे, २७ नवंबर १९४३ को कैरो घोषणा में और २६ जुलाई १९४५ को पोट्सडम घोषणा में एक "स्वाधीन और स्वतंत्र कोरिया" का वायदा किया था।

कोरियावासियों को जब १५ अगस्त १९४५ को मित्र राष्ट्रों के समक्ष जापानियों के आत्मसमर्पण का समाचार मिला, तो उसी समय उन्हें विश्वास हो गया कि उनकी पितृभूमि अब शीघ्र ही स्वतंत्र हो जायेगी। फिर

थी, सारे देश में जो खुशी की लहर फैली थी, वह निराशा और क्षोभ में बदल गई, जब देश का विभाजन हो गया और ३८ वीं समातांतर रेखा, उत्तर और दक्षिण के बीच एक सीमा रेखा बन गई। यह विभाजन क्यों हुआ, यह आज तक स्पष्ट नहीं हो सका है, हालांकि इसके परिणाम स्वरूप उत्तरी भाग सोवियत रूस के अधीन छोड़ दिया गया।

अमेरिका और रूस दोनों ही ने, कोरिया में जापानी सेना के निरस्त्र किये जाने के बाद भी, कोरियावासियों को अपने देश का शासन भार सम्भालने देने के बजाय, अपने अपने अधीनस्थ क्षेत्रों में सैनिक शासन कायम किया। कोरिया में अंतरिम सरकार की स्थापना के लिये अमेरिका, रूस और इंगलैंड के विदेश मंत्रियों के बीच, २७ दिसंबर, १९४५, को मास्को में एक समझौता हुआ, जिसके परिणामस्वरूप अमेरिका और रूस ने, जो क्रमशः दक्षिण और उत्तरी भाग पर अधिकार किये हुये थे, एक संयुक्त आयोग गठित किया। प्रस्तावित अस्थायी सरकार में कोरिया के सामाजिक और राजनैतिक संगठनों के प्रतिनिधियों को शामिल किया जाना था तथा इसका संचालन अमेरिका, सोवियत रूस, इंगलैंड और चीन की देख रेख में एक "ट्रस्टीशिप" द्वारा होना था। इस अस्थायी सरकार की अवधि, अधिक से अधिक पांच वर्ष निर्धारित की गई।

संयुक्त आयोग को अस्थायी सरकार के गठन एवं बाद में सम्पूर्ण कोरिया के लिये एक "संयुक्त लोकतांत्रिक सरकार" की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करने के लिये एक फार्मूला तैयार करने का अधिकार दिया गया। इस आयोग की बैठकें १९४६ और १९४७ में क्रमशः प्योंग यांग और सउल में हुई, परन्तु, यह किसी नतीजे पर पहुंचने में असफल रहा। दूसरी ओर अधिकांश कोरियावासी कोई "ट्रस्टीशिप" नहीं चाहते थे। उन्होंने अपनी पितृभूमि के तत्काल स्वतंत्र किये जाने की मांग की।

जब रूस और अमेरिका के संयुक्त प्रयासों का कोई ठोस परिणाम नहीं निकला, तो कोरिया का प्रश्न, संयुक्त राष्ट्रसंघ की साधारण सभा के समक्ष लाया गया, जिसने सितंबर, १९४७ में कोरिया को तत्काल स्वतंत्रता दिलाने एवं उसके एकीकरण के लिये आम चुनाव कराने के सम्बंध में एक प्रस्ताव पास किया। १९४७ में कोरिया के लिये संयुक्त राष्ट्र संघ का एक अस्थायी आयोग गठित किया गया और चुनाव की तैयारी कराने एवं चुनाव का निरीक्षण करने के लिये उसे सउल भेजा गया। लेकिन,

रूस और उसके साथियों ने संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रस्ताव को अमल में लाने से इन्कार कर दिया और उत्तरी कोरिया में आयोग के सदस्यों के प्रवेश का बहिष्कार किया।

गणतंत्र की स्थापना

अत: संयुक्त राष्ट्रसंघ की देख रेख में राष्ट्रीय संविधान सभा के लिये १७८ विधायकों का निर्वाचन केवल दक्षिण कोरिया में, १० मई १९४८ को सम्पन्न हुआ। कोरिया गणतंत्र के प्रथम संविधान की धाराओं के निर्माण के लिये संविधान सभा की बैठक ३१ मई को बुलायी गई तथा १७ जुलाई को संविधान की विधिवत् घोषणा हुई। राष्ट्रपति प्रणाली के अन्तर्गत कोरिया गणतंत्र की सरकार का गठन हुआ। श्री सिग्मन री प्रथम राष्ट्रपति चुने गये। जापान से मुक्ति की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर, १५ अगस्त को कोरिया गणतंत्र की सरकार का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

उसी दिन, नई सरकार ने अमरीकी सैनिक सरकार से, शासन का कार्यभार अपने हाथों में लिया। १२ दिसंबर, १९४८ को संयुक्त राष्ट्र-संघ की साधारण सभा ने ४८–६ के प्रवल बहुमत से कोरिया गणतंत्र को मान्यता प्रदान की और यह भी घोषणा की कि कोरिया देश और उसके निवासियों की यही एक मात्र वैध सरकार है। अमेरिका, इंगलैंड, चीन, फ्रांस, फिलीपीन, एवं अन्य मित्र राष्ट्रों ने भी कोरिया के नये गणतंत्र को मान्यता प्रदान की।

कोरिया की लड़ाई

कोरिया गणतंत्र ने, एकीकरण के उद्देश्य की पूर्ति के लिये संयुक्त राष्ट्रसंघ के सहयोग से रूस और उसके साथियों को, उत्तर कोरिया से संविधान सभा में प्रतिनिधि भेजने के लिये, संयुक्त राष्ट्रसंघ की देख-रेख में चुनाव कराने का बार बार निवेदन किया। लेकिन, उत्तर कोरिया के कम्युनिस्टों ने न केवल इस प्रस्ताव में कोई रुचि नहीं दिखाई, बल्कि उन्होंने २५ अगस्त, १९४८ को प्योंगयांग में किम-इल-सुंग के नेतृत्व में कम्युनिस्ट सरकार की स्थापना कर दी।

सोवियत संघ ने, ३१ दिसंबर, १९४८ को उत्तर कोरिया से अपनी सेनायें वापस लेने की घोषणा की। अमेरिका ने २९ जून, १९४९ को दक्षिण कोरिया से अपनी सेनायें वापस बुला ली। उनके केवल ५०० लोग सैनिक सलाहकार के रूप में रह गये।

रूस ने अपने आश्रित उत्तरी कोरिया को आधुनिक हथियार, विमान, टैंक, तोप आदि दिये।

इन्हीं हथियारों की सहायता से उत्तर कोरिया के कम्युनिस्टों ने बिना किसी उत्तेजना के २५ जून, १९५० को कोरिया गणतंत्र पर हमला कर दिया। दक्षिण कोरिया इस अचानक हमले के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था। कम्युनिस्टों ने तीन दिनों के भीतर सउल पर अधिकार कर लिया और अगस्त तक बूसन की सीमा तक आ गये।

२५ जून, १९५० को संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद की बैठक बुलायी गई, जिसने उत्तर कोरिया के कम्युनिस्टों को हमलावर घोषित किया तथा सदस्य देशों से कोरिया की रक्षा के लिये सहायता भेजने की अपील की। इस अपील के परिणामस्वरूप १६ राष्ट्रों ने स्थल या वायु सेना, अथवा दोनों को ही, कम्युनिस्ट हमलावरों को रोकने के लिये कोरिया भेजे।

ये राष्ट्र थे आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, कनाडा, कोलंबिया, एल-सल्वाडोर, इथियोपिया फ्रांस, ग्रीस, थाईलैंड, टर्की, इंगलैंड और अमेरिका। इनके अलावा डेनमार्क, स्वीडन, नार्वे, भारत और इटली ने अस्पतालयुक्त जहाज एवं औषधियां भेजी।

नवम्बर १९५० में, हमलावर परास्त कर दिये गये थे। लड़ाई में लाल-चीन "स्वयं सेवकों" के बड़े-बड़े दल भी शामिल हुये, लेकिन, उन्हें भी मुंहकी खानी पड़ी। इस संघर्ष के बाद, लड़ाई १९४५ की मूल विभाजन रेखा पर सिमट कर रह गई।

कोरिया की लड़ाई २७ जुलाई, १९५३ को हुई विराम संधि के बाद स्थगित हो गई। इस पर कोरिया गणतंत्र ने हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। इस समझौते से कोरिया की समस्या के अंतिम समाधान की कोई आशा नहीं बंधती थी। इसके विपरीत यह सेना मुक्त क्षेत्र अथवा सीमांकन रेखा के दोनों ओर तनाव एवं शत्रुता बढ़ाने में ही सहायक हुई। इसके अलावा युद्ध से त्रस्त कोरिया गणतंत्र के ऊपर उत्तर से भाग कर आने

वाले लाखों शरणार्थियों का एक नया बोझ आ पड़ा। यह इस बात का प्रमाण था कि कम्युनिस्ट कोरिया की जनता का दिल जीतने में असफल रहे।

युद्धोत्तर पुर्ननिर्माण

कोरिया की समस्या का राजनीतिक हल निकालने के लिये कोरिया की लड़ाई में रूचि रखने वाले सभी राष्ट्रों का एक सम्मेलन, २६ अप्रैल, १९५४ को जेनेवा में बुलाया गया। लेकिन इस सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधि किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सके। अतः सम्मेलन स्थगित कर दिया गया। कोरिया के पुर्ननिर्माण के लिये संयुक्त राष्ट्र संघ की एजेंसी ने १४ जून, १९५४ को एक पंचवर्षीय पुर्ननिर्माण योजना की घोषणा की, जिसकी कुल लागत १.९ अरब डालर थी। इस बीच १९५३ से १९५६ तक अमेरिका ने कोरिया को आर्थिक एवं सैनिक सहायता के रूप में १.३ अरब डालर दिये।

छात्र आन्दोलन

राष्ट्रपति सिगमन री १९५२ और १९५६ में पुनः राष्ट्रपति चुने गये। लेकिन, १९६० में सत्तारूढ़ लिबरल पार्टी में उनके समर्थकों ने जब चौथी बार उन्हें राष्ट्रपति चुनना चाहा, तो चारो ओर यह आशंका व्यक्त की जाने लगी कि इस चुनाव में धोखा किया जा रहा है। जब चुनाव परिणामों की घोषणा की गई और राष्ट्रपति सिगमन री और उनके साथी भारी बहुमत से विजयी हुये तो लोगों का संदेह और बढ़ गया। सारे देश में असंतोष की लहर फैल गयी और चुनाव में धोखाघड़ी के विरोध में छात्रों का देशव्यापी प्रदर्शन शुरू हो गया।

राजधानी एवं अन्य बड़े बडे नगरों में स्कूल और कॉलेज के छात्र सड़कों पर प्रदर्शन करने लगे और राष्ट्रपति का नया चुनाव कराने एवं वृद्ध हो रहे राष्ट्रपति सिगमन री से स्वयं इस्तीफा दे देने की मांग करने लगे। यह आंदोलन जब अत्यंत उग्र हो गया, तो १९ अप्रैल, १९६० को मार्शल-लॉ की घोषणा कर दी गई। लेकिन, यह असाधारण कदम भी प्रदर्शनकारियों को शांत नहीं कर सका, बल्कि, साधारण नागरिक भी

इस आन्दोलन में शामिल होने लगे।

राष्ट्रपति सिगमन री ने २६ अप्रैल, १९६० को त्यागपत्र दे दिया। इस प्रकार उनके लम्बे शासन (१९४८–६०) का अंत हुआ। श्री हू-चुंग ने अंतरिम सरकार की स्थापना की। संसदीय मंत्रिमंडल प्रणाली और दो सदन वाली राष्ट्रीय असेम्बली का प्रावधान करने के लिये राष्ट्रीय असेम्बली ने १५ जुलाई, १९६० को संविधान में एक संशोधन का प्रस्ताव स्वीकार किया।

राष्ट्रीय असेम्बली के लिये २३३ प्रतिनिधि तथा ५८ कौंसिलर निर्वाचित करने के लिये २८ जुलाई को नया आम चुनाव हुआ। इस चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार दोनों सदनों में भारी बहुमत से जीत कर आये। युन-पो-सुन राष्ट्रपति चुने गये और भूतपूर्व उपराष्ट्रपति चांग म्योन द्वितीय गणतंत्र के प्रथम प्रधान मंत्री हुये।

फिर भी, जनसाधारण की अपेक्षाओं के विपरीत शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि मंत्रिमंडलीय उत्तरदायित्व की शासन प्रणाली का नया राजनीतिक प्रयोग कोरिया की महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने में समर्थ नहीं है। यद्यपि नागरिकों को प्रदर्शन करने की आजादी थी, फिर भी नई प्रणाली न तो राजनीतिक स्थिरता ला सकी और न यह आर्थिक क्षेत्र में संतोषजनक प्रगति में सहायक हो सकी। स्थिरता के बजाय देश भर में अशांति ही बनी रही और अक्सर आजादी का दुरूपयोग होता रहा।

सैनिक क्रांति

इस अशांत स्थिति का अंत १६ मई १९६१ को हुआ, जब मेजर जनरल पक चुंग ही के नेतृत्व में स्थल एवं नौ सेना के कुछ अधिकारियों ने कोरिया के एकीकरण एवं आधुनिकीकरण के संकल्प के साथ क्रांति की।

१८ मई को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिये सर्वोच्च परिषद का गठन किया गया। इस परिषद को नयी सरकार की सर्वोच्च कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका का उत्तरदायित्व सौंपा गया।

सैनिक शासन की अवधि दो वर्ष सात माह रही। इसके दौरान शासन ने राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार के अनेक कदम दृढ़ता पूर्वक उठाये। इनकी महत्वपूर्ण उपलब्धियां रहीं। शासन ने अपने सामने

सामाजिक बुराइयों को दूर करने, राजनीतिक गुंडागर्दी समाप्त करने, राष्ट्रीय भावना का पुनर्जागरण तथा स्वावलम्बन के लक्ष्य रखे।

१६ दिसंबर, १९६२ को राष्ट्रीय स्तर पर जनमत संग्रह का आयोजन किया गया और एक नये संविधान पर जनता की स्वीकृति प्राप्त की गई। इसके द्वारा एक सदन वाली विधान सभा तथा राष्ट्रपति प्रणाली की पुनरावृत्ति की गई। १५ अक्टूबर, १९६३ को राष्ट्रपति का चुनाव हुआ, जिसमें सैनिक सेवा से अवकाश प्राप्त जनरल पक निर्वाचित हुये। २६ नवम्बर को हुये आम चुनाव में उनकी डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी को भारी विजय प्राप्त हुई। राष्ट्रीय असेम्बली में यह पार्टी प्रबल बहुमत में आयी।

कोरिया के आधुनिक इतिहास में पहली बार राष्ट्रपति पक के नेतृत्व में राजनीतिक स्थिरता लाने तथा आर्थिक विकास एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये ईमानदारी से प्रयास किये गये। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि आर्थिक विकास की दो पंचवर्षीय योजनाओं का सफल कार्यान्वयन है। इस अवधि में आर्थिक विकास की दर प्रति वर्ष ८.३ प्रतिशत रही। निर्यात भी, जो १९६२ में ५० लाख डालर के करीब था, बढ़ कर १९७१ में १.३ अरब डालर हो गया।

आर्थिक प्रगति के साथ-साथ, कूटनीतिक क्षेत्र की उपलब्धियां भी कम महत्वपूर्ण नहीं रही। सर्वप्रथम १९६५ में जापान के साथ संधि सम्पन्न हुई, जिसका उद्देश्य दोनों देशों के संबंधों को सामान्य बनाना था, जो एक लम्बे अर्से से आवश्यक माने जाने के बावजूद, असम्भाव्य प्रतीत होता था। स्वतंत्र और बहुमुखी कूटनीति को आधार बना कर, कोरिया के कूटनीतिक क्षेत्र का तेजी से विस्तार किया गया।

आज कोरिया के न केवल परम्परागत दृष्टि से अपने मित्र देशों के साथ बल्कि तथाकथित तटस्थ राष्ट्रों एवं उन कम्युनिस्ट देशों के साथ भी अच्छे संबंध हैं, जिनका आम तौर पर शत्रुवत् व्यवहार नहीं रहा है।

आधुनिक प्रवृत्तियां

विभाजित कोरिया के पुनःएकीकरण के लिए एक विवेकपूर्ण किन्तु व्यावहारिक नीति अपनायी गई है। कोरिया गणतन्त्र के उपक्रम से सितम्बर १९७१ से उत्तर और दक्षिण के रेडक्रास प्रतिनिधियों के सम्मेलन होते रहे हैं। फिर भी, कोरिया गणतन्त्र की सरकार की ओर से यह स्पष्ट

कर दिया गया है कि मानवीय स्तर पर आयोजित, रेडक्रास प्रतिनिधियों का सम्मेलन उत्तर के बंधुओं के साथ सम्पर्क बढ़ाने के दुष्कर प्रयासों की "मात्र शुरूआत" है।

इन प्रयत्नों के फलस्वरूप ४ जुलाई, १९७२ को सउल और प्योंग्यांग से एक साथ एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी की गई, जिसमें दोनों पक्षों ने शक्ति प्रयोग न करने और बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के एकीकरण की दिशा में एक-एक कदम बढ़ते जाने का निश्चय किया। इसका तत्काल परिणाम हुआ उत्तर-दक्षिण समन्वय समिति का गठन, जिसकी सउल और प्योंग्यांग में अब तक कई बैठकें हो चुकी हैं।

इस बीच कोरिया गणतन्त्र ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एकता और शक्ति बढ़ाने की आवश्यकता महसूस की है, ताकि आगे होनेवाली वार्ताओं में वह अपनी प्रभावशाली भूमिका अदा कर सके।

२१ नवम्बर, १९७२ को संशोधित संविधान को स्वीकृति प्रदान करने के लिए राष्ट्रव्यापी जनमत संग्रह का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य विदेशी मॉडलों की नकल करने के बजाय अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप कोरियायी जनतन्त्र को स्वदेशी स्वरूप प्रदान करना था।

बिछुड़े हुये परिवारों को फिर से मिलाने के उद्देश्य से आयोजित उत्तर-दक्षिण रेड क्रॉस की बैठक

संविधान में संशोधन का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय एकीकरण के चिर वांछित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राष्ट्र को सबल बनाना है। यद्यपि वैधानिक और प्रक्रिया सम्बन्धी अनेक परिवर्तन किये गये हैं, फिर भी, कोरिया गणतन्त्र अपने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए जनतान्त्रिक और शान्तिपूर्ण मार्ग अपनाने तथा पूर्व की भांति आक्रामक युद्धों का परित्याग करने और सभी अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों और वचनों का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध है। कोरिया गणतन्त्र, राजनीतिक आदर्शों तथा सामाजिक ढांचा के आधार पर कोई भेदभाव न रखते हुए, विश्व परिवार के उन सभी सदस्यों के लिए अपना दरवाजा खुला रखना चाहता है, जिनका रुख आक्रामक नहीं है।

२३ जून, १९७३ को कोरिया गणतन्त्र ने अपनी विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन की घोषणा की। इसके अनुसार दक्षिण कोरिया न केवल कम्युनिस्ट देशों के साथ, जिनका रुख आक्रामक नहीं है, व्यापार एवं अन्य प्रकार का सम्बन्ध बढ़ायेगा, बल्कि, अन्य राष्ट्रों के चाहने पर उत्तर कोरिया का संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में प्रवेश पर भी कोई आपत्ति नहीं करेगा, यदि उसकी सदस्यता से कोरिया की एकता और शान्ति को कोई क्षति पहुंचने की सम्भावना न हो।

भविष्य का लक्ष्य

राजनीतिक और सामाजिक स्थायित्व के साथ साथ आर्थिक क्षत्र में हुए प्रयोगों की सफलता से शासन के नेतृत्व एवं सामान्य जनता में भविष्य के सम्बन्ध में आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ है और नई आशा का संचार हुआ है। राष्ट्रीय प्रगति के मार्ग में सभी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए सरकार और जनता में विश्वास उत्पन्न हुआ है।

इसी आशा और आत्मविश्वास के साथ किसानों का जीवन स्तर उन्नत करने और उनकी आय बढ़ाने के उद्देश्य से एक नया राष्ट्र व्यापी सामुदायिक आन्दोलन प्रारम्भ किया गया है। इस कार्यक्रम के पूरा होने पर आशा की जाती है कि उद्योग और कृषि के बीच तथा शहरों की आबादी और गांवों में रहनेवाले किसानों और मछुओं की आय की असमानता दूर होगी जो राष्ट्र के आधुनिकीकरण के अन्तिम चरणों में से एक है।

कोरिया गणतंत्र के संविधान की घोषणा सर्वप्रथम १७ जुलाई, १९४८ को संविधान सभा द्वारा की गई, जिसका निर्वाचन १० मई को हुआ था और बैठक उसी वर्ष ३१ मई को बुलायी गई थी।

बाद में राष्ट्रीय पुनरुद्धार के ऐतिहासिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये ठोस आधार प्रदान करने के निमित्त राष्ट्रीय पैमाने पर २१ नवम्बर, १९७२ को जनमत संग्रह का आयोजन कर संविधान में संशोधन किये गये। शांतिपूर्ण तरीके से एकीकरण के ऐतिहासिक मिशन को पूरा करना, लोकतांत्रिक प्रणाली को राष्ट्र के आदर्शों एवं वास्तविकताओं के अनुरूप बनाना और प्रशासनिक ढांचे एवं अन्य संबंधित प्रणालियों में इस प्रकार सुधार करना कि राष्ट्र शक्ति सम्पन्न हो और अधिक से अधिक दक्षता बढ़े, संविधान के उद्देश्य घोषित किये गये।

इस संविधान के जरिये कोरिया राष्ट्रीय एव अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक नीतियां अपनाने के लिये प्रतिबद्ध है। साथ ही सभी अंतर्राष्ट्रीय विधियों को अपने देश के कानूनों के ही अभिन्न अंग के समान मानते हुये सभी प्रकार के आक्रामक युद्धों को भर्त्सना करना भी इस संविधान में निहित हैं।

यह संविधान गणतंत्र के सभी नागरिकों को, स्त्री-पुरुष का भेद भाव न रखते हुये, कानून के समक्ष समान मानता है और उन्हें व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा मौलिक मानवीय अधिकारों की गारंटी देता है। मौलिक अधिकारों में धर्म और विश्वास की स्वतंत्रता, निजी सम्पत्ति पर अधिकार, शिक्षा के लिये समान अवसर ोजगार का अधिकार, जन प्रतिनिधियों के निर्वाचन का अधिकार, कानून के प्रावधानों के अनुसार सार्वजनिक पद प्राप्त करने का अधिकार तथा स्थायी वासी संबंधी प्रतिबंधों से मुक्ति, आदि शामिल हैं।

नवंबर, १९७२ में संविधान में हुये एक संशोधन के अनुसार राष्ट्रपति का चुनाव, २००० से ५००० तक के निर्वाचित प्रतिनिधियों के संसद द्वारा होता है। इस संशोधन के पूर्व सीधे जनता के वोट से राष्ट्रपति के चुनाव की व्यवस्था थी। राष्ट्रपति को चुनने वाले मतदाताओं का यह वर्ग, "राष्ट्रीय एकीकरण परिषद" कहलाता है तथा इसके सदस्य गुप्त मतदान प्रणाली से जनता द्वारा निर्वाचित होते हैं। यह सम्मेलन "राष्ट्रीय प्रभुसत्ता

◀ नये संयुक्त सरकारी कार्यालय का भवन, जिसमें अनेक मंत्रालय और सरकारी कार्यालय हैं

का समुच्चय" माना जाता है तथा संविधान के शब्दों में इसे "पितृभूमि की अखंडता" का पवित्र मिशन पूरा करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।

जनता के सच्चे प्रतिनिधियों के इस सम्मेलन पर न केवल मुख्य कार्यपालिका के चयन का, बल्कि, राष्ट्रीय एकीकरण का लक्ष्य प्राप्त करने से संबंधित सभी प्रकार की कार्यवाही करने का उत्तरदायित्व है। इस प्रकार इसके ऊपर राष्ट्र के भविष्य की एक अभूतपूर्व जिम्मेवारी है।

राष्ट्रपति ऐसे प्रश्नों को इस सम्मेलन के पास विचार के लिये भेजते हैं अथवा सम्मेलन अपनी कार्यवाही के दौरान स्वत: उन पर विचार करता है। राष्ट्रपति अथवा सम्मेलन किसी भी महत्वपूर्ण प्रश्न पर जनता की राय जानने के लिये जनमत संग्रह की आवश्यकता महसूस कर सकते हैं।

एक सदन वाली राष्ट्रीय असेम्बली, जिसे विधायिका के अधिकार प्राप्त हैं, के एक तिहाई सदस्य राष्ट्रपति की सिफारिश पर "राष्ट्रीय एकीकरण सम्मेलन" द्वारा मनोनीत किये जाते हैं। शेष दो तिहाई सदस्य दलीय प्रणाली के अंतर्गत जनता के वोट से निर्वाचित होते हैं।

न्यायपालिका को अपने कार्य संपादन की पूरी स्वतंत्रता दी गई है। न्यायाधीश संविधान के प्रावधानों एवं अन्य कानूनों के आधार पर बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के अपना कार्य सम्पादन कर सकते हैं। न्याय प्रदान करने का अधिकार विभिन्न स्तरों पर स्थापित न्यायालयों को है, जैसे सर्वोच्च न्यायालय, अपील न्यायालय, जिला न्यायालय एवं परिवार न्यायालय। यहां जूरी प्रथा नहीं है।

प्रधान न्यायाधीश की नियुक्ति राष्ट्रपति करते हैं। इस नियुक्ति का राष्ट्रीय असेम्बली द्वारा अनुमोदन आवश्यक है।

प्रशासन

(१) राष्ट्रपति

राष्ट्रपति न केवल घरेलू मामलों में कार्यकालिका के प्रधान होते हैं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में भी राष्ट्र के प्रमुख के रूप में अपना उत्तरदायित्व निभाते हैं। उनके ऊपर शांतिपूर्ण तरीके से पितृभूमि के एकीकरण के उद्देश्य को आगे बढ़ाने की जिम्मेवारी है। वे राज्य परिषद के अध्यक्ष तथा सशस्त्र सेना के सेनाध्यक्ष होते हैं। उन्हें प्रधानमंत्री अथवा अन्य

मंत्रियों को नियुक्त करने अथवा कार्यमुक्त करने के अधिकार प्राप्त हैं. इसके अलावा उन्हें सरकारी एजेंसियों एवं कार्यालयों के प्रधानों, राज-दूतों, प्रांतों के गवर्नरों एवं वरिष्ठ अधिकारियों की नियुक्ति करने के भी अधिकार प्राप्त हैं।

राष्ट्रपति अपने अधिकार का प्रयोग संविधान के प्रावधानों के अनुसार ही करते हैं। उन्हें संधियां सम्पन्न करने, राजदूत भेजने अथवा अन्य देशों से आये राजदूतों को प्रमाण-पत्र देने, युद्ध की घोषणा करने अथवा शांति संधि करने के भी अधिकार प्राप्त हैं। गृह युद्ध, प्राकृतिक विपदाओं, गंभीर आर्थिक एवं वित्तीय संकट और विदेशी आक्रमण के गंभीर खतरे, जैसी आपातकालीन स्थिति में वे अध्यादेश जारी कर सकते है, जिसे कानून की ही मान्यता है। किसी दूसरे देश से आये व्यक्ति को शरण देने, अथवा उसके पुनर्वास की अनुमति भी वे दे सकते हैं। बहुत से लोगों को एक साथ शरण देने की उनकी अनुमति का राष्ट्रीय असेम्बली द्वारा अनुमोदन आवश्यक है।

राष्ट्रपति का कार्यकाल छह वर्षों का होता है। उन्हें राष्ट्रीय असेम्बली को भंग करने का अधिकार है। ऐसी स्थिति में नई असेम्बली के लिये ३० से ६० दिनों के भीतर चुनाव कराना आवश्यक होता है।

राज्य परिषद के अलावा राष्ट्रपति के सीधे नियंत्रण में कई अन्य परिषदें एवं एजेंसियां भी हैं, जो राष्ट्रीय नीतियां बनाती हैं और उन्हें अमल में लाती हैं। ये हैं--राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद, आर्थिक एवं वैज्ञानिक परिषद, अंकेक्षण एवं निरीक्षण मंडल, केन्द्रीय गुप्तचर विभाग और केन्द्रीय निर्वाचन व्यवस्था समिति। अंकेक्षण एवं निरीक्षण मंडल को छोड़ कर, जिसके प्रधान की नियुक्ति चार वर्षों के लिये होती है तथा जिसका राष्ट्रीय असे-म्बली द्वारा अनुमोदन आवश्यक होता है, सभी संगठनों के प्रधानों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।

राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के, जिसकी स्थापना फरवरी, १९६४ में हुई थी, अध्यक्ष स्वयं राष्ट्रपति हैं। इसके अन्य नियमित सदस्य प्रधान-मंत्री, उप प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री, गृह मंत्री, वित्त मंत्री और सुरक्षा मंत्री तथा केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के निदेशक हैं। वे राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित कूटनीतिक, सैनिक और घरेलू नीतियों पर विचार-विमर्श करते हैं, जिन पर मंत्रिमंडल द्वारा बाद में अंतिम निर्णय किया जाता है।
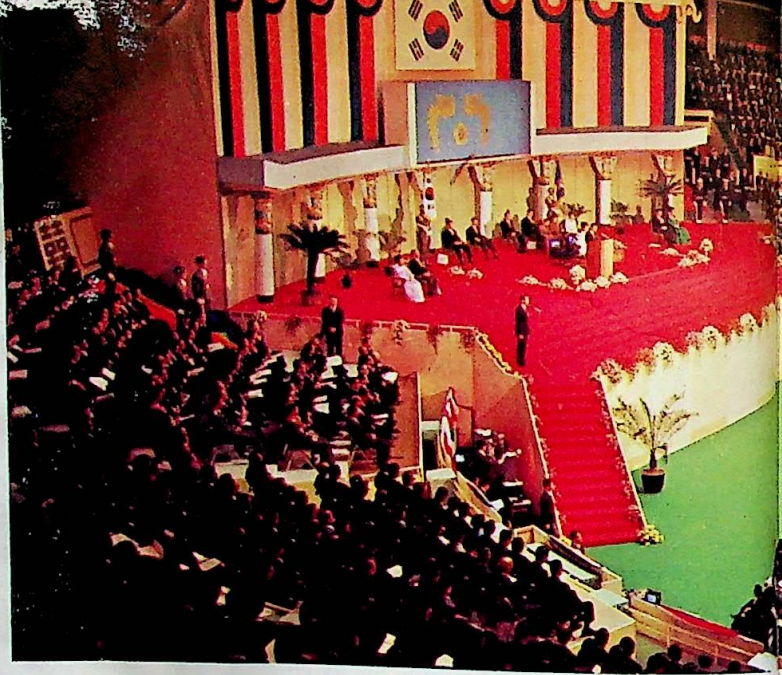
२७ दिसंबर १९७२ को राष्ट्रपतित्व के

आर्थिक एवं वैज्ञानिक परिषद, जिसकी स्थापना १९६४ में हुई थी, आर्थिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्र की परियोजनाओं एवं महत्वपूर्ण नीतियों के संबंध में, अपनी सिफारिशें राष्ट्रपति को भेजती हैं। राष्ट्रपति इस परिषद के अध्यक्ष तथा प्रधानमंत्री उपाध्यक्ष हैं। राष्ट्रपति देश के चोटी के विद्वानों एवं विशेषज्ञों को परिषद के नियमित सदस्य के रूप में नियुक्त करते हैं।

अंकेक्षण और निरीक्षण मंडल को, जिसका उद्घाटन १९६३ में हुआ था, केन्द्रीय एवं स्थानीय सरकारी एजेंसियों, निगमों एवं अन्य संबंधित संगठनों के हिसाब किताब का अंकेक्षण करने का अधिकार प्राप्त है। मंडल को सरकारी अधिकारियों के भ्रष्टाचार तथा अधिकार के दुरुपयोग के मामलों की भी जांच करने का अधिकार है। यद्यपि मंडल मुख्य कार्यपालिका के अधीन है, इसकी जांच की रिपोर्ट राष्ट्रपति एवं राष्ट्रीय असेम्बली को प्रेषित की जाती है।

प्रशासन सुधार अनुसंधान समिति, जिसकी स्थापना १९६४ में हुई

अष्टम सत्र का उद्‌घाटन समारोह

थी, सरकारी संगठनों में आवश्यक सुधार के संबंध में अनुसंधान करता है और अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करता है।

(२) राज्य परिषद

राज्य परिषद अथवा मंत्रिमंडल सरकार की कार्यपालिका का केन्द्र बिंदु है। उपर्युक्त संगठन एवं परिषदें केवल राष्ट्रपति को अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करती हैं अथवा परामर्श देती हैं, जबकि राज्य परिषद को निर्णय करने और सरकारी नीतियों का कार्यान्वयन करने का अधिकार है। इसकी बैठकें नियमित रूप से सप्ताह में दो बार होती हैं तथा आवश्यक होने पर विशेष बैठकें भी बुलाई जाती हैं। कोई भी निर्णय साधारण बहुमत से होता है। यद्यपि राष्ट्रपति इस परिषद के औपचारिक अध्यक्ष हैं, फिर भी इसकी बैठकों की अध्यक्षता प्रधान मंत्री भी कर सकते हैं, जो इसके उपाध्यक्ष हैं।

संविधान के प्रावधानों के अनुसार राज्य परिषद के कम से कम १५ और अधिक से अधिक २५ सदस्य हो सकते हैं। इनमें विभागीय एवं निर्विभागीय मंत्री भी शामिल हैं।

विभिन्न मंत्रालय इस प्रकार हैं:—आर्थिक नियोजन मंडल, विदेश, गृह, परिवहन, संचार, संस्कृति और सूचना, विज्ञान और टेकनोलॉजी, सरकारी प्रशासन एवं राष्ट्रीय एकीकरण मंडल। परिषद में राजनीतिक एवं आर्थिक मामलों के दो निर्विभागीय मंत्री भी होते हैं।

इन मंत्रालयों के अतिरिक्त, कई अधीनस्थ सरकारी संगठन हैं, जिनका कार्य सरकारी नीतियों को तेजी से एवं दक्षतापूर्वक लागू करना है। ये संगठन हैं विधि विभाग, मनोपली विभाग, चुंगी प्रशासन विभाग, वन विभाग, आणविक शक्ति विभाग, श्रम प्रशासन विभाग और विशेषज्ञ प्रशासन विभाग।

(3) स्थानीय प्रशासन विभाग

कोरिया गणतंत्र प्रशासनिक दृष्टि से नौ प्रान्तों एवं दो विशेष नगरों में विभाजित है। इन नगरों में एक सउल है, जो राजधानी है, और दूसरा बुसन है, [illegible] का दूसरा सबसे बड़ा नगर है। प्रांतों के नाम हैं—ग्योंग गी डो, कांग वन डो, चुंगच्योंग बुगडो, चुंगच्योंग नामडो, चोल्ला बुगडो, चोल्ला नामडो, ग्योंग सांग बुगडो, ग्योंग सांग नामडो, एवं जेजू डो।

प्रान्तों को आकार और जन संख्या के आधार पर गण (काउन्टी), सी (नगर) यूप (उपनगर) तथा म्योन और री अथवा डोंग (गांव) में विभाजित किया गया है।

देश विभाजित होने के कारण कोरिया की सरकार ने उत्तर के प्रान्तों के प्रतिनिधित्व के लिये कुछ कार्यालय खोल रखे हैं। ये कार्यालय ह्वांगहे डो, प्योंगन बुगडो, प्योंगन नामडो, हम ग्योंग बुगडो और हम ग्योंग नामडो का प्रतिनिधित्व करते हैं। यद्यपि इनके अधीन तत्काल कोई प्रशासनिक कार्य नहीं है, उत्तर से आनेवाले शरणार्थियों को प्रोत्साहन और प्रेरणा देने के लिये उन्हें बनाए रखना आवश्यक समझा जाता है।

राष्ट्रीय असेम्बली

राष्ट्रीय असेम्बली के मुख्य कार्य हैं प्रस्ताव प्रस्तुत करना और उन पर

बहस करना, विधेयकों को स्वीकार अथवा अस्वीकार करना, राष्ट्रीय बजट के संवरण शेष की जांच करना अथवा उसे अंतिम रूप देना, विदेशों के साथ हुई संधियों की पुष्टि करना अथवा उन्हें रद्द करना और युद्ध की घोषणा एवं शांति संधि को स्वीकृति प्रदान करना।

राष्ट्रीय असेम्बली को प्रधानमंत्री की नियुक्ति को स्वीकृति प्रदान करने अथवा उसे रद्द कर देने का भी अधिकार है। अविश्वास का प्रस्ताव पारित कर असेम्बली किसी मंत्री अथवा प्रधानमंत्री को भी कार्यमुक्त करने की मांग कर सकती है। लेकिन, प्रधान मंत्री के कार्यमुक्त किये जाने की स्थिति में मंत्रिमंडल के सभी सदस्यों को प्रधान मंत्री के साथ ही इस्तीफा देना पड़ेगा।

जनता द्वारा निर्वाचित प्रनिनिधियों का कार्यकाल छह वर्षों का होता है। लेकिन राष्ट्रीय एकीकरण परिषद की स्वीकृति से राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत असेम्बली के एक तिहाई सदस्यों का कार्यकाल केवल तीन वर्ष होता है।

न्यायपालिका

(१) सर्वोच्च न्यायालय

सर्वोच्च न्यायालय, दीवानी एवं फौजदारी मामलों पर अपील न्यायालयों के फैसलों तथा कोर्ट मार्शल द्वारा दिये गये दण्ड के विरुद्ध की गई अपीलों पर विचार करता है और अंतिम निर्णय देता है। इसके निर्णयों को चुनौती नहीं दी जा सकती। इसके निर्णय न्यायपालिका के लिये दृष्टांत भी बन जाते हैं।

प्रधान न्यायाधीश की नियुक्ति, राष्ट्रीय असेम्बली की स्वीकृति से, राष्ट्रपति करते हैं। अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति, राष्ट्रपति, प्रधान न्यायाधीश की सिफारिश पर करते हैं।

(२) अपील न्यायालय

कोरिया में तीन अपील न्यायालय हैं, जो क्रमशः सउल, देगू और ग्वांगजू में स्थित हैं। वे दीवानी और फौजदारी मामलों पर जिला न्याया-

लयों के फैसलों के विरुद्ध की गई अपीलों की सुनवाई करते हैं। वे नीचे के न्यायालयों के फैसलों पर फिर से विचार करने के लिये मुकदमें की खुद सुनवाई भी करते हैं और या तो पूर्व के फैसलों को बरकरार रखते हैं अथवा उन्हें रद्द कर अपना निर्णय देते हैं। अपील न्यायालय सरकार के निर्णय, आदेश अथवा किसी कार्रवाई के विरुद्ध किसी व्यक्ति अथवा संगठन द्वारा की गई अपील की भी सुनवाई करता है और अपना फैसला देता है।

(३) जिला न्यायालय

प्राथमिक न्यायालय होने के कारण, जिला न्याय कोरिया के प्रायः सभी बड़े नगरों में है। ये न्यायालय सभी प्रकार के दीवानी और फौजदारी मामलों के सिलसिले में दायर मुकदमों की पहली सुनवाई करते हैं। जिला न्यायालय के फैसले के विरुद्ध वादी या प्रतिवादी, कोई भी पक्ष, सात दिनों के भीतर उपयुक्त अपीली न्यायालय में अपील कर सकता है। इस निश्चित अवधि के भीतर अपील दायर नहीं की जाने पर, जिला न्यायालय के फैसले की स्वतः पुष्टि हो जाती है।

(४) परिवार न्यायालय

परिवार न्यायालय, जिसकी स्थापना अक्तूबर १९६३ में हुई थी, कोरिया की न्यायपालिका के इतिहास में अपेक्षाकृत एक नया प्रयोग है। यह वैवाहिक समस्यायों से संबंधित मामलों की सुनवाई करता है तथा नाबालिगों से संबंधित मुकदमों पर भी विचार करता है। संबंधित पक्षों की गोपनीयता की रक्षा के लिये इसकी कार्यवाही बंद कमरे में होती है।

(५) कोर्ट मार्शल

सैनिक अदालत को सशस्त्र सैनिकों तथा सेना के अन्तर्गत काम करने वाले अन्य कर्मचारियों द्वारा किये गये सभी प्रकार के अपराधों से संबंधित मामलों पर विचार करने का अधिकार है। इसके फैसले के विरुद्ध अपील केवल सर्वोच्च न्यायालय में की जा सकती है।

सोयांग नदी पर विशाल बांध, जिससे बिजली का उत्पादन बढ़ रहा है ▶ और जो बाढ़ तथा सूखा पर नियंत्रण पाने में सहायक है

अर्थव्यवस्था
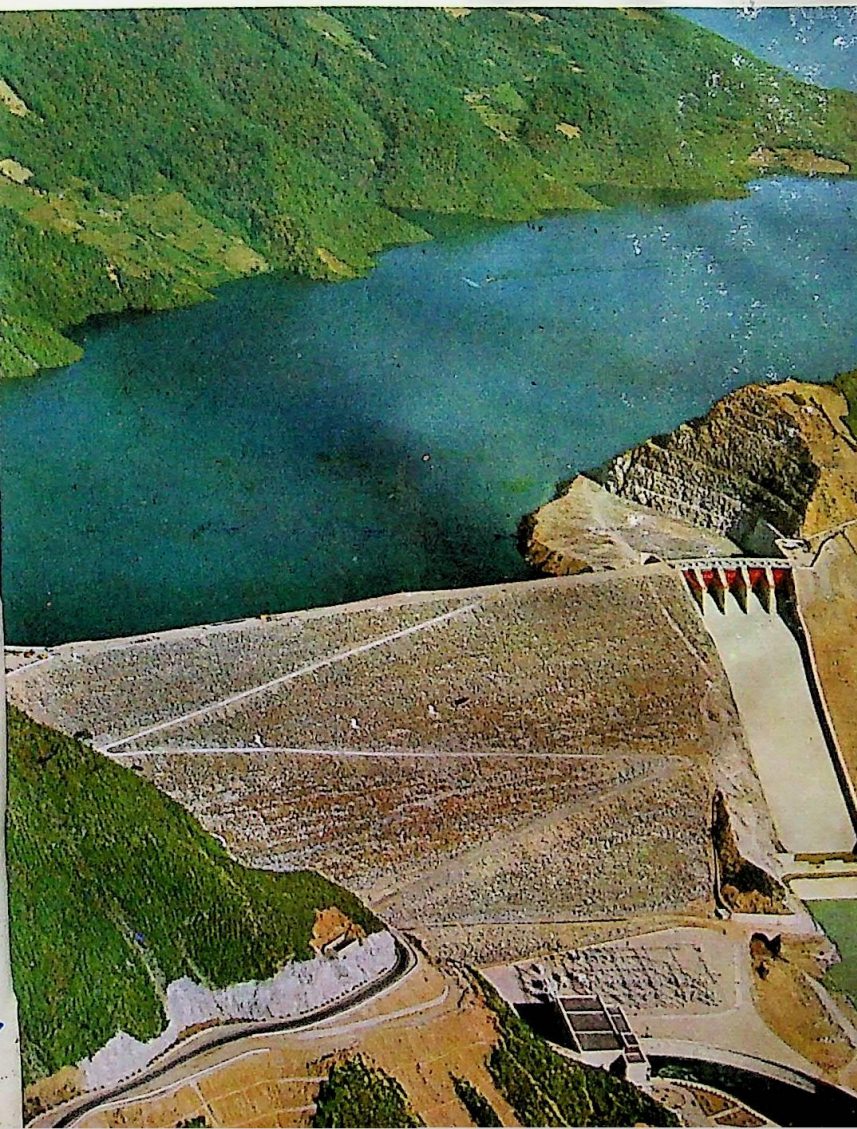
आर्थिक विकास की दो पंचवर्षीय योजनाओं (१९६२–७१) ने कोरिया की आर्थिक प्रगति को तीव्र गति प्रदान की। उद्योगीकरण, निर्यात, राष्ट्रीय बचत, कृषि, आदि सभी क्षेत्रों में तीव्र विकास हुआ। इससे आर्थिक [illegible] की अच्छी नीव पड़ गई।

[illegible]स प्रकार पिछले एक दशक में कोरिया के विकास को उच्च स्तर [illegible]रने के लिये एक आधार निर्माण हुआ। आर्थिक नियोजन का योग्य [illegible], जनता के हृदय में देश के विकास की तीव्र उत्कंठा तथा उच्च [illegible] शिक्षा आदि को ही इन उपलब्धियों का श्रेय दिया जा सकता है।

[illegible]लब्ध मानवीय और भौतिक साधनों एवं शक्ति का आर्थिक [illegible]लिये समुचित उपयोग किया गया। आर्थिक विकास की [illegible]ओं में आत्म निर्भरता, तीव्र उद्योगीकरण तथा विकास के लाभ [illegible]न में न्याय संगत वितरण पर विशेष बल दिया गया है।

[illegible]पंचवर्षीय योजना (१९६२–६६) में प्रति वर्ष ७.१ प्रतिशत की [illegible] लक्ष्य निर्धारित किया गया था। पूंजी निर्माण के लिये राष्ट्रीय बचत को बढ़ावा देने की दृष्टि से मितव्ययिता पर अधिक बल दिया गया।

पहली योजना की सबसे बड़ी उपलब्धि, निर्यात व्यापार का विस्तार कही जा सकती है। योजना के अंतिम वर्ष, अर्थात् १९६६ में २५ करोड़ डालर का निर्यात हुआ, जबकि प्रथम वर्ष, अर्थात् १९६२ में ५ करोड़ ४८ लाख डालर का ही निर्यात हो सका था। निर्यात में वृद्धि जारी है।

प्रथम योजना के अंतिम वर्षों की दो अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का भी कोरिया के आर्थिक विकास को गति प्रदान करने में महत्व पूर्ण योगदान रहा। १९६५ के अंत में जापान के साथ कूटनीतिक संबंध सामान्य हो जाने के कारण विकास के लिये अतिरिक्त पूंजी प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इससे देश के बाहर वाणिज्य और व्यापार के विस्तार को भी काफी बढ़ावा मिला।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में प्रतिवर्ष ८.१ प्रतिशत विकास की दर

निश्चित की गयी थी, किन्तु, संभवत: विपरीत परिस्थितियों की परवाह न करते हुये कठोर परिश्रम करते जाने के जनता के संकल्प के कारण ही, वास्तविक उपलब्धि औसतन ८.३ प्रतिशत रही।

योजना बनाने वालों एवं नीति निर्धारित करने वाले सरकारी अधिकारियों की कल्पना के विपरीत घरेलू खपत में तेजी से वृद्धि होने के कारण औद्योगिक विकास को काफी गति मिली। तैयार माल के निर्या[illegible] अभूतपूर्व वृद्धि भी औद्योगिक प्रगति में काफी सहायक हुई। यह नि[illegible] १९६६ में देश के कुल निर्यात, अर्थात् २५ करोड़ डालर, का ६७ प्र[illegible] रहा।

अनेक त्रुटियों और अवरोधों के बावजूद, प्रथम योजना काल में [illegible] की अर्थव्यवस्था की आशातीत उपलब्धियां रहीं। योजना के [illegible] में उत्पादन की दर १३.४ प्रतिशत थी।

इस प्रकार १९६१ से कुल राष्ट्रीय उत्पादन में ४४ प्रतिश[illegible] की हुई।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना (१९६७–७१) में औसत वार्[illegible] की दर ७ प्रतिशत निर्धारित की गई थी। किन्तु वास्त[illegible] उपल[illegible] लक्ष्य से काफी आगे, अर्थात् लगभग १२ प्रतिशत रही।

राष्ट्रीय आय में पर्याप्त वृद्धि करना, कृषि एवं उद्योग का संतुलित विकास करना, भारी उद्योग पर विशेष बल देते हुये उद्योगीकरण का विस्तार करना तथा योजना के अंतिम वर्ष, अर्थात् १९७१ में १० अरब डालर के निर्यात का लक्ष्य प्राप्त करना, द्वितीय योजना के मुख्य उद्देश्य घोषित किये गये।

द्वितीय योजना काल में घरेलू बचत बढ़ाने के लिये भी काफी प्रयास किये गये, जिसके परिणाम स्वरूप, बचत निर्धारित लक्ष्य से कुछ अधिक ही रही। इस प्रकार बाहरी सहायता पर निर्भर रहने के बजाय विकास के लिये देश की अपनी पूंजी भी एकत्र हो सकी।

विकास की विभिन्न परियोजनाओं में अधिक पूंजी लगाये जाने के उद्देश्य से सरकार ने विदेशी पूंजी आकृष्ट करने का भी भरपूर प्रयास किया। इस प्रकार १९६७ से १९६९ तक की अवधि में ११५.४ करोड़ डालर,

ऋण के रूप में, विदेशी सहायता प्राप्त हुई। विदेशी ऋण प्राप्त करने के ५०.५ करोड़ डालर के लक्ष्य की तुलना में यह राशि दुगुनी से भी अधिक थी।

इस प्रकार द्वितीय योजना में घरेलू एवं विदेशी दोनों ही प्रकार के पूंजी विनियोग में वृद्धि जारी रही। कुल राष्ट्रीय उत्पादन और विनियोग का वास्तविक अनुपात २२ प्रतिशत रहा, जबकि योजना के प्रथम वर्ष में १७.९ प्रतिशत के अनुपात की कल्पना की गई थी। १९६९ में यह अनुपात १९.१ प्रतिशत के निर्धारित लक्ष्य की तुलना में उछाल के साथ ३१.२ प्रतिशत तक पहुंच गया।

१९६९ में कोरिया की विकास दर १९.९ प्रतिशत रही, जो इस दशक

कोरिया के जहाज निर्माण उद्योग का तेजी से विकास हो रहा है। २०००० टन वाले अनेक जहाज प्रतिवर्ष बनाये जाते हैं

की दुनिया की सबसे ऊंची विकास दर सिद्ध हुई। इसी वर्ष द्वितीय योजना का कुल राष्ट्रीय उत्पादन भी निर्धारित लक्ष्य से कुछ अधिक रहा। पहली योजना की अपेक्षा द्वितीय योजना में शहरी उद्योग पर अधिक बल दिये जाने के कारण, कृषि उत्पादन की तुलना में, जिसकी दर २.३ प्रतिशत रही, औद्योगिक उत्पादन में बहुत अधिक वृद्धि हुई।

कोरिया के उद्योगीकरण मे १९६०–६९ के दशक के मध्य में एक उभार आया और १९६५–७० की अवधि में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में लगभग तिगुनी वृद्धि हुई।

उत्पादन में वृद्धि के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—परिष्कृत खाद्य पदार्थ ३०० प्रतिशत, रसायन एवं रसायन उत्पाद—४५० प्रतिशत, कागज एवं कागज उत्पाद—२२० प्रतिशत, कपड़ा ४०० प्रतिशत, धातु एवं धातु की वस्तुयें—क्रमशः ३१० और २५० प्रतिशत, मशीनरी—१७० प्रतिशत, विद्युत उपकरण—३४० प्रतिशत एवं परिवहन के साज-सामान—२७० प्रतिशत।

कुछ क्षेत्रों को छोड़ कर द्वितीय योजना में आमतौर पर उद्योगों के विस्तार का कार्यक्रम निर्धारित अवधि से काफी पहले पूरा होता गया। आधुनिक सड़कों के निर्माण से देश के विभिन्न औद्योगिक केन्द्रों को आबादी वाले इलाकों से सम्बद्ध किया जा सका और एक दिन के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचना संभव हो गया। यह आधुनिकीकरण एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में राष्ट्र के प्रयास की एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जायेगी।

भविष्य

आर्थिक विकास की प्रथम एवं द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं में, सदियों पुरानी गरीबी और शिथिलता को मिटाने और देश वासियों का जीवन स्तर ऊंचा उठाने का, सरकार और जनता का दृढ़ संकल्प व्यक्त हुआ।

योजनाओं के सफल कार्यान्वयन के फलस्वरूप उद्योगीकरण को गति मिली, विद्युतीकरण और सड़कों का विस्तार हुआ, कृषि विकास की नींव पड़ी तथा निर्यात में भी तीव्र वृद्धि हुई। इन उपलब्धियों के कारण राष्ट्र के आर्थिक स्वावलंबन का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसमें सबसे महत्वपूर्ण

तेलशोध राष्ट्र का एक महत्वपूर्ण उद्योग है

उपलब्धि जनता में राष्ट्र की क्षमता के संबंध में आत्म विश्वास एवं गौरव की भावना उत्पन्न होना, कही जायेगी। आज जनता कोरिया को एक सम्पन्न और समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिये कृत संकल्प है। एक लम्बे अर्से से शिथिल और निराश लोगों में आत्म विश्वास निर्माण हुआ है और आज वे साहस पूर्वक कह सकते हैं--"हम भी सम्पन्न और सबल बन सकते हैं।"

आर्थिक विकास की तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत वर्तमान दशक में, स्वावलंबी अर्थ व्यवस्था का निर्माण एवं उपलब्ध राष्ट्रीय साधनों का उपयोग कर संतुलित क्षेत्रीय विकास को सुनिश्चित करने का उद्देश्य सामने रख कर, नये लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं। तृतीय योजना (१९७२-७६) के सफल कार्यान्वयन से कोरिया, दुनिया के विकासशील राष्ट्रों की श्रेणी में ऊंचे स्थान पर आ जायेगा। इस प्रकार कोरिया एक लम्बे अरसे से संजोते राष्ट्रीय एकीकरण के लक्ष्य के और निकट आ सकेगा।

८.६ प्रतिशत की विकास दर का लक्ष्य लेकर चलने वाली इस तृतीय योजना के अन्तर्गत ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के तीव्र विकास, निर्यात में लगातार उल्लेखनीय वृद्धि तथा भारी एवं रसायन उद्योगों की स्थापना के लिये विशेष प्रयास किये जायेंगे।

तृतीय योजना की प्राथमिकतायें इस प्रकार हैं--खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि तथा किसानों और मछुओं की आय बढ़ाना, किसानों और मछुओं के गांवों में स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की सुविधायें बढ़ाना, ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण और सड़कों का विस्तार। १९७६ तक ३.५ अरब डालर के निर्यात का लक्ष्य प्राप्त कर अंतर्राष्ट्रीय भुगतान शेष की स्थिति में सुधार करना, भारी एवं रसायन उद्योगों की स्थापना, विज्ञान और टेकनोलॉजी का विकास तथा शिक्षा का विस्तार कर मानव शक्ति का विकास करना एवं अधिक से अधिक लोगों को रोजगार दिलाना, विद्युत, परिवहन, भंडार, संचार आदि की बुनियादी सुविधाओं का संतुलित विकास, क्षेत्रीय वर्गोन्नयन के लिये चार बड़ी नदियों की घाटियों के विकास कार्यक्रम का कारगर ढंग से कार्यान्वियन एवं आवास परियोजनाओं तथा सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों को बढ़ावा देना।

तृतीय योजना काल में कुल राष्ट्रीय उत्पादन १९७१ के ३११२ अरब वोन (७.८ अरब डालर) से १९७६ में ४२५७० अरब वोन (१०.६

अरब डालर) तक पहुंचने की आशा है। यदि तृतीय योजना के बुनियादी लक्ष्य पूरे कर लिये जाते हैं तो कोरिया की एक स्वावलंबी अर्थ व्यवस्था बन सकेगी।

मूल उद्योग

(१) कृषि, वन, एवं मत्स्य पालन

१९६१–७० वाले दशक में कृषि, वन, एवं मत्स्य पालन जैसे प्राथमिक उद्योगों का विकास प्रतिवर्ष औसतन ४.५ प्रतिशत की दर से हुआ। फिर भी इस अवधि में औद्योगिक क्षेत्र में आधुनिकीकरण के कारण, इन उद्योगों का, कुल राष्ट्रीय उत्पादन में योगदान १९६० के ३६.९ प्रतिशत से गिर कर १९७० में २८.४ प्रतिशत रह गया।

खाद्यान्नों का उत्पादन धीरे धीरे बढ़ा—१९६० के ३० लाख टन से बढ़ कर १९७० में ४० लाख टन, जबकि पशुधन और रेशम के उत्पादन

कोरिया के आधुनिकतम मोटर कारखानों में विभिन्न प्रकार की गाड़ियां बनती हैं
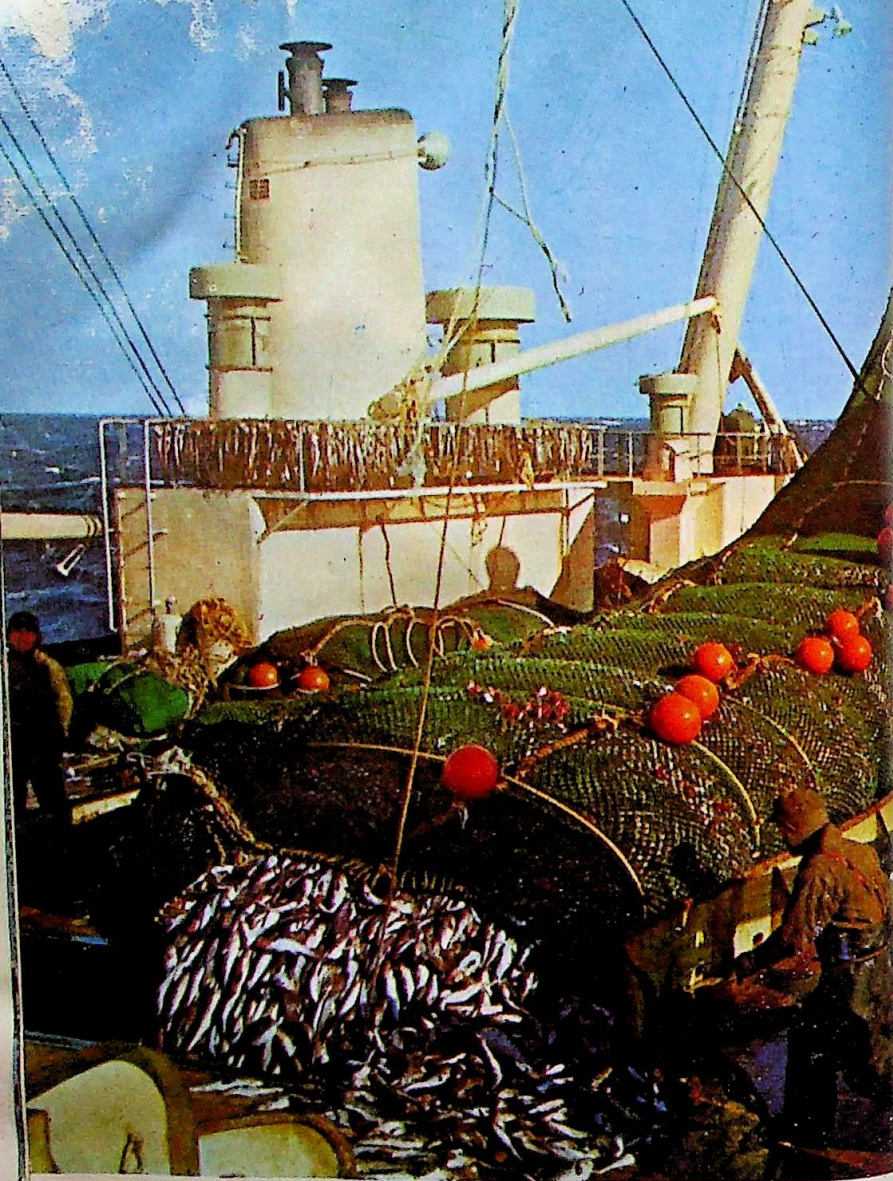
अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रतियोगिता के लिए गहरे समुद्र में मछली मारने के उद्योग का तेजी से विकास किया जा है

में तेजी से वृद्धि हुई। खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि के बावजूद देश की बढ़ती हुई आवश्यकता पूरी न की जा सकी। खाद्यान्न की कमी के कारण, कृषि के ढांचे में परिवर्तन करने, उत्पादन को ठोस आधार प्रदान करने, वितरण एवं क्रय-विक्रय प्रणाली में सुधार करने तथा ग्रामीण परिसर का आधुनिकीकरण करने और इस प्रकार ग्रामीणों की आय बढ़ाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। हाल में खेतिहर मजदूरों की संख्या में जो कमी हुई है, उससे कृषि के यंत्रीकरण की आवश्यकता और बढ़ गयी है।

चावल का उत्पादन १९७० के ३९,३९,००० टन की तुलना में १९७६ में ४८,६०,००० टन तक पहुंच जाने की संभावना है। इस प्रकार २३.४ प्रतिशत की वृद्धि अपेक्षित है। इसी प्रकार जौ (बार्ली) का उत्पादन १९,७४,००० टन से बढ़ कर २४,६०,००० टन और गेहूं का उत्पादन ३,५७,००० टन से बढ़ कर ४,८८,००० टन तक पहुंचने की संभावना है। खाद्यान्न का उत्पादन बढ़ाने के लिये सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया जायेगा तथा इसमें आवश्यक सुधार किये जायेंगे और कृषि के यंत्रीकरण के लिये कृषि योग्य भूमि की चकबंदी की जायेगी। गेयम योंगसम, नाकडोंग तथा हान जैसी बड़ी नदियों की घाटियों के विकास की एक दीर्घसूत्री (१९७१–८१) योजना कार्यान्वित की जा रही है। यह योजना भविष्य में कृषि के विकास के लिये ही बनाई गई है। नदी घाटी क्षेत्र ६२,८०० वर्ग किलोमीटर, अथवा सम्पूर्ण भूमि का ६४ प्रतिशत और १२,४३,००० हेक्टर अथवा देश की सम्पूर्ण कृषि भूमि का ५४ प्रतिशत है।

सम्पूर्ण कोरिया के ६७ प्रतिशत भाग में, अर्थात् ६६,८३,००० हेक्टर में जंगल हैं। पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजना में वन विकास का जो प्रयास हुआ उसके परिणाम स्वरूप विकास योग्य कुल ५६,१३,००० हेक्टर क्षेत्रका ९३ प्रतिशत अर्थात् ५४,४३,००० हेक्टर वन विकास क्षेत्र के अंतर्गत आ गया। फिर भी, इसमें से ८५ प्रतिशत प्राकृतिक वन क्षेत्र है, जिसका आर्थिक लाभ की दृष्टि से बहुत कम महत्व है। इसलिय वन विकास परियोजनाओं एवं आर्थिक लाभ की दृष्टि से जंगलों का दोहन आवश्यक है।

१९६०–६९ की अवधि में, तटवर्ती क्षेत्रों तक सीमित मछली मारने के उद्योग का विस्तार गहरे समुद्र से मछली पकड़ने तक हुआ। मछली पकड़ने के काम आने वाली नौकाओं की संख्या में भी काफी वृद्धि हुई।

१९६४ में इन नौकाओं की संख्या ४९,००० (कुल क्षमता १,६७,००० टन) थी, जो १९७० में बढ़कर ६७,००० (कुल क्षमता ३,७६,००० टन) हो गई। इस प्रकार इन नौकाओं की भार क्षमता में दूने से भी अधिक की वृद्धि हुई। इस अवधि में समुद्र से प्राप्त कुल मछली में ६० प्रतिशत की वृद्धि हुई अर्थात् मछली उत्पादन ६,००,००० मीट्रिक टन से बढ़ कर ९,३५,००० मीट्रिक टन हो गया। सामुद्रिक उत्पादों का निर्यात १९६४ के २.४ करोड़ डालर की तुलना में १९७० में ७.२ करोड़ डालर हो

धान की फसल काटने की मशीन जो कोरिया के तीव्र आधुनिकीकरण का द्योतक है

गया। १९७६ तक सामुद्रिक उत्पादों की मांग में ५५.८ प्रतिशत की वृद्धि, अर्थात् ९,३५,००० मीट्रिक टन से बढ़कर १४,५७,००० मीट्रिक टन हो जाने की संभावना है। निर्यात की मांग १,०८,००० मीट्रिक टन से बढ़ कर ३,१६,००० मीट्रिक टन तक पहुंच जाने की संभावना है। इसी प्रकार समुद्री उत्पादों का निर्यात मूल्य १८ करोड़ डालर तक पहुंच जायगा।

इस मांग को पूरा करने की दृष्टि से सरकार मत्स्य उद्योग के विकास के लिये कई कदम उठा रही है, जैसे गहरे समुद्र में मछली मारने के क्षेत्र, बन्दरगाहों तथा बाजार एवं परिष्करण सुविधाओं का विस्तार, आदि। मत्स्य उद्योग के विकास के लिये वित्तीय सहायता का भी प्रबंध किया जा रहा है।

(२) खनन और निर्माण

खनन उद्योग की औसत उत्पादन दर १९६४–७० में प्रतिवर्ष ७.३ प्रतिशत रही, जबकि कुल राष्ट्रीय उत्पादन में खनन का अनुपात १.८ प्रतिशत (१९६४) से घटकर १.२ प्रतिशत (१९७०) हो गया। कोयले का उत्पादन जो इस दशक के पूर्वार्ध में बढ़ता रहा, और १९६७ में १२४ लाख टन तक पहुंच गया, १९६८ में, और, पुनः १९६९ में घट गया। उत्पादन में यह कमी गहराई में खनन एवं परिवहन की कठिनाईयों के कारण हुई। फिर भी सरकार की सहायता के फलस्वरूप १९७० में उत्पादन पुनः बढ़ कर १२४ लाख टन हो गया। इसी अवधि में कच्चा ताम्बा, लीड, जिंक और कच्चा लोहा का उत्पादन भी बढ़ा।

वर्तमान योजना काल में स्थानीय साधनों का उपयोग कर कोयले के खनन का तेजी से विकास किया जायेगा, ताकि कच्चे तेल के आयात के भुगतान का भार कम किया जा सके। इंधन की कमी पेट्रोल एवं अन्य उत्पादों से पूरी की जायेगी। इंधन की पूरी सप्लाई और कोयले का अनुपात, जो १९७० में ३०.६ प्रतिशत था १९७६ तक घट कर २६.३ प्रतिशत रह जाने का अनुमान है। लेकिन, इस अवधि में पेट्रोलियमजन्य इंधन का अनुपात ४४.० प्रतिशत से बढ़ कर ५९.१ प्रतिशत हो जाने की संभावना है।

लोहा, ताम्बा, सीसा, जस्ता, टंगसटन, तेल और कयोलीन आदि

के खंजन के विकास के लिये सघन प्रयास किया जायेगा। इन सभी खनिज पदार्थों का देश में पर्याप्त भंडार है तथा कच्चे माल के रूप में उद्योगों की भारी मांग भी है। उनके निर्यात की संभावनायें भी काफी हैं। चूंकि प्रमुख खनिज पदार्थों की मांग तेजी से बढ़ने की आशा है, अतः नयी नयी खानों और समुद्र में स्थित तेल के स्रोतों की खोज के कार्य को और व्यापक बनाया जायगा।

मैन्युफैक्चरिंग उद्योग का सम्पूर्ण उद्योग के साथ अनुपात, १९६४ के १५.६ प्रतिशत से बढ़ कर १९७० में २०.५ प्रतिशत हो गया। इसके साथ ही मैन्युफैक्चरिंग उद्योग के ढांचे में भी परिवर्तन हुआ और उपभोक्ता सामानों के अलावा पूंजीगत वस्तुओं का निर्माण भी होने लगा। १९७० में लघु उद्योग और भारी एवं रसायन उद्योग का अनुपात ६४.१ और ३५.९ प्रतिशत का था। प्रथम दो योजनाओं के दौरान कपड़ा, कागज खाद, सीमेंट, एवं तेलशोधक कारखानों की स्थापना के फलस्वरूप देश में उत्पादित सामानों ने अधिकांश आयातित सामानों का स्थान ले लिया। कपड़ा और प्लाईवुड के निर्यात में भी काफी वृद्धि हुई।

मशीन उद्योग विकास अधिनियम, मशीन उद्योग के विकास में एक मोड़ सिद्ध हुआ। उत्तम कोटि के मशीनी औजारों की मांग १९७० की ६००० की तुलना में १९७६ तक १५००० तक पहुंच जाने की संभावना है। नई नई निर्माण योजनाओं के कारण भारी मशीनों की मांग में योजना काल में प्रतिवर्ष ६.३ प्रतिशत की वृद्धि होने की संभावना है। इस प्रकार १९७६ तक यह मांग दो हजार तक पहुंच जाने की आशा है। इस मांग की पूर्ति के लिये भारी मशीनों का कारखाना स्थापित करने का प्रस्ताव है।

मानवीय श्रम के स्थान पर मशीनों का उपयोग कर कृषि की उत्पादकता बढ़ाने के लिये ३८,७०० पावर-टिलर का उत्पादन करना होगा। इसके साथ ही सिंचाई पम्पों, प्रेसर एवं टेस्ट कन्ट्रोल उपकरणों का उत्पादन भी बढ़ाना होगा। इस दृष्टि से वर्तमान मशीन उद्योगों के लिये विशिष्ट उत्पादन निर्धारित करने होंगे तथा उनके बीच समन्वय स्थापित करना होगा, ताकि पावर-टिलर का उत्पादन १९७० के ३,७०० की तुलना में १९७६ में १००.०० तक पहुंच सके।

बिजली उत्पादन, ट्रांसमिशन एवं वितरण उपकरणों, विद्युत चालित मशीनी औजारों आदि के उद्योगों का तेजी से विकास हुआ है और मोटर

आर्थिक प्रगति की दर
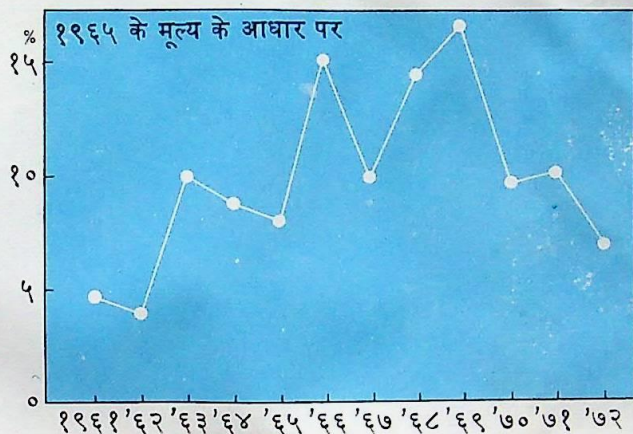
निर्यात की प्रगति
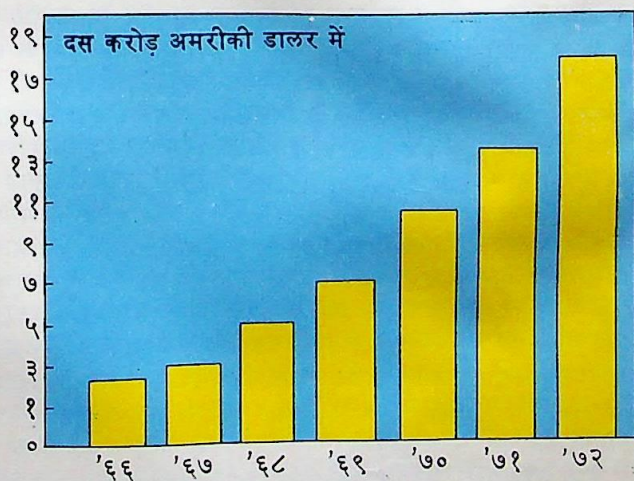
उद्योग, जहाज रानी उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक उद्योग की भांति ही आने वाले वर्षों में भी जारी रहेगा।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के उत्तरार्ध में पेट्रोलियम एवं रसायन उद्योगों की तीव्र प्रगति हुई। उर्वरक में स्वावलंबन के लिये सरकार की सहायता से आठ उर्वरक कारखानों का निर्माण कार्य पूरा किया गया। १९७० में उर्वरक कारखानों की उत्पादन क्षमता ५,८५,००० टन तक पहुंच गई, जो १९६४ की अपेक्षा सात गुनी है। १९७६ में उर्वरक की मांग ९,१६,००० टन तक पहुंच जाने की सम्भावना है। इस मांग को पूरा करने के लिये एक अमोनिया का कारखाना स्थापित किया जायेगा। योजनाकाल में सुपर फास्फेट का भी एक कारखाना स्थापित करने का प्रस्ताव है।

रबर उद्योग, जो हाल तक जूते बनाने तक सीमित था, अब टायर आदि अन्य औद्योगिक सामानों का भी उत्पादन करने लगा है। मोटर गाड़ियों के उत्पादन में वृद्धि होने के फलस्वरूप टायरों की मांग १९७६ तक २८,७८,००० तक पहुंच जाने की संभावना है। यह १९७० की तुलना में तिगुनी होगी। इस मांग को पूरी करने के लिये वर्तमान टायर कारखानों की क्षमता का विस्तार किया जायेगा।

औद्योगिक उत्पादन, रोजगार एवं निर्यात की दृष्टि से, राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था में कपड़ा उद्योग महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जनसंख्या में वृद्धि एवं लोगों के जीवन स्तर में सुधार के साथ साथ कपड़ा उद्योग का भी तेजी से विकास हुआ है। विकसित देशों से टेक्नोलॉजी एवं केमिकल टेक्सटाइल के लिये सुविधायें प्राप्त होने से कपड़ा उद्योग का निर्यात की दृष्टि से देश में प्रथम स्थान हो गया। १९७० में ३४ करोड़ डालर मूल्य के कपड़े का निर्यात हुआ, जो कुल निर्यात का ३८.५ प्रतिशत था। लोगों की आय में वृद्धि होने के कारण प्रति व्यक्ति धागे की खपत में भी वृद्धि होने की संभावना है। अनुमान है, प्रति व्यक्ति धागे की खपत १९७० के ५.१ किलोग्राम की तुलना में १९७६ तक बढ़ कर ७.६ किलोग्राम तक पहुंच जायेगी। निर्यात सहित कुल वार्षिक मांग ४,८२,००० टन तक हो जाने की आशा है।

योजनाकाल में सीमेंट, फलैट ग्लास, सिरैमिक्स, लुगदी और कागज, प्लाई वुड और खाद्य परिष्करण उद्योग में भी तीव्र प्रगति होने की संभावना है।

मध्य और छोटी श्रेणी के उद्योगों का देश के वार्षिक निर्यात में काफी

कोरिया के ऊनी और मिश्रित धागे वाले कपड़े दुनिया के बाजारों में काफी लोकप्रिय हो रहे हैं

बड़ा हिस्सा है। १९६९ में यह ३६.३ प्रतिशत था। इसमें आगे और वृद्धि होने की संभावना है। मध्यम उद्योगों की निर्यात क्षमता, १९७६ तक १४० करोड़ डालर, अर्थात् कुल निर्यात के ४० प्रतिशत तक पहुंचाने की दृष्टि से, कपड़ा, मिश्रित धागे और इलेक्ट्रॉनिक जैसे श्रम अभिमुख उद्योगों के विकास पर बल दिया जायेगा।

(३) सामाजिक सुविधाओं की लागत पूंजी

विद्युत उत्पादन में भारी मात्रा में पूंजी लगाये जाने के फलस्वरूप विद्युत केन्द्रों का उत्पादन १९६४ के ५,९७,००० किलोवाट से बढ़ कर १९७० में २२,८८,००० किलोवाट हो गया। ट्रांसमिशन लाइनों की लंबाई इसी अवधि में ७,०२९ सर्किट/किलोमीटर से बढ़ कर ९,४५४ सर्किट/किलोमीटर हो गयी। १९६४ और १९७० के बीच बिजली की मांग में प्रति वर्ष औसतन ३४.४ प्रतिशत की वृद्धि हुई। बिजली की इस बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिये १९७६ तक उत्पादन क्षमता में तीन गुनी वृद्धि की जायेगी। १९७० में बिजली उत्पादन की कुल क्षमता

२२,८८,००० किलोवाट थी, जो १९७६ में ६०,७५,००० तक पहुंच जायेगी।

परिवहन की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिये रेलवे इंजिनों एवं मालवाहक गाड़ियों का उत्पादन बढ़ाया गया तथा बड़े-बड़े नगरों में माल लादने व उतारने के केन्द्र स्थापित किये गये और कोयले के स्टोर-यार्डों का निर्माण किया गया। फिर भी रेल मार्गों की क्षमता बढ़ती हुई मांग की तुलना में अभी भी कम है। ४२५ किलोमीटर लम्बे सउल-बूसन सुपर हाइवे तथा तीव्रगामी गाड़ियों के लिये बनाई गई अन्य सड़कों के कारण सड़क परिवहन की क्षमता में काफी वृद्धि हुई, लेकिन, वर्तमान सड़कों में सुधार करने तथा ट्रंक मार्गों के शीघ्र निर्माण की आवश्यकता महसूस की जा रही है। एक्सप्रेस परिवहन मार्गों का विस्तार १९७० के ५५१ किलोमीटर की तुलना में १९७६ तक १,६५६ किलोमीटर तक हो जाने की संभावना है।

आर्थिक गतिविधियों के विस्तार को ध्यान में रखते हुये, विमान तथा जलयान जैसे परिवहन के अन्य साधनों तथा भंडार एवं नौभरक सुविधाओं में भी वृद्धि अवश्यमभावी है।

डाक, तार, टेलीफोन, जैसी संचार सुविधाओं के विस्तार के साथ-साथ विश्वव्यापी त्वरित संचार के लिये भू-उपग्रह केन्द्र का निर्माण कार्य चल रहा है, अथवा पूरा हो गया है।

विदेशी पूंजी विनियोग

कोरिया की अंतर्राष्ट्रीय भुगतान-शेष की स्थिति सुधारने एवं राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से विदेशी पूंजी आकृष्ट करने का निश्चय किया गया और इसके लिये एक कानून भी बनाया गया। विदेशी पूंजी को प्रोत्साहन देने का उद्देश्य औद्योगिक विकास को गति प्रदान करना है, ताकि अधिक से अधिक उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त करने के लिये श्रम, पूंजी, एवं भौतिक साधनों का अच्छा से अच्छा उपयोग हो सके।

सरकार की विदेशी पूंजी आकृष्ट करने की नीति के अंतर्गत ऐसे उद्योगों को प्राथमिकता दी जाती है, जो कोरिया के प्राकृतिक साधनों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करते हैं, निर्यात बढ़ाते हैं, कोरिया वासियों के लिये रोजगार के अवसर निर्माण करते हैं तथा जो देश के लाभ के लिये आधुनिक टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करते हैं।

१९७० में कुल ५५,९६,५३,००० डालर विदेशी पूंजी प्राप्त की गई। इसमें से ११,५३,००,००० डालर सार्वजनिक ऋणों के रूप में और ३७,८५,९०,००० डालर वाणिज्य ऋणों के रूप में प्राप्त हुई तथा ६,५७,३८,००० डालर का सीधा विनियोग हुआ। जून १९७१ के अंत तक १२,७०,२४,००० डालर विदेशी पूंजी सार्वजनिक ऋणों के रूप में तथा १४,८३,३५,००० डालर वाणिज्य ऋणों के रूप में और २,२१,३५,००० डालर सीधे विनियोग के रूप में आयी। कोरिया की आर्थिक समृद्धि एवं विकास से उद्योग और व्यवसाय में पूंजी विनियोग के लिये उपयुक्त वातावरण निर्माण हुआ है। लोगों की तेजी से बढ़ती आय तथा जीवनस्तर में सुधार के कारण अनेक प्रकार की उपभोक्ता वस्तुओं के लिये आकर्षक बाजार तैयार हो रहा है। सरकार कोरिया में.विदेशी फर्मों और पूंजी लगाने वालों का स्वागत करती है तथा उन्हें प्रोत्साहन देती है।

पूंजी विनियोग के संबंध में सभी विषयों पर स्थानीय एवं विदेशी फर्मों को सलाह देने एवं सहायता करने की दृष्टि से सरकार ने आर्थिक नियोजन बोर्ड के अन्तर्गत एक विनियोग प्रोत्साहन कार्यालय की स्थापना की है। पूंजी लगाने वाली विदेशी फर्मों को कोरिया की सरकार, एशिया में संभवत: सबसे अधिक आकर्षक सुविधायें और संरक्षण प्रदान करती है। विदेशी पूंजी विनियोग कानून एवं अन्य संबंधित निर्णयों के द्वारा, विदेशी पूंजी लगाने वालों को कर से मुक्ति अथवा उसमें छूट, लाभांश अपने देश में भेजने की छूट, मुनाफे को फिर से पूंजी के रूप में लगाने की सुविधा एवं सरकार की ओर से उनकी सम्पत्ति के संरक्षण की गारंटी, आदि अनेक प्रकार की सुविधायें प्रदान की जाती हैं।

इसके अलावा कोरिया में विदेशी पूंजी लगाने वालों के लिये अन्य कई प्रकार के आकर्षण भी हैं। उनके लिये अत्यन्त परिश्रमी और कम मजदूरी पर काम करने वाले श्रमिक भारी संख्या में उपलब्ध हैं। बिजली भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। परिवहन और संचार की भी अच्छी व्यवस्था है। निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिये कर से मुक्ति अथवा उसमें छूट दी जाती है।

और भी अधिक मात्रा में विदेशी पूंजी आकृष्ट करने एवं निर्यात की सुविधा प्रदान करने की दृष्टि से सउल और इन्छन में तीन निर्यात उद्योग बस्तियां कायम की गई हैं। मसन बन्दरगाह के पास खास तौर से विदेशी फर्मों के लिये अथवा स्थानीय लोगों की साझेदारी में स्थापित उद्योगों के

लिये एक विशाल और मुक्त औद्योगिक व्यापार क्षेत्र स्थापित किया गया है।

१९६२ में प्रथम यंचवर्षीय योजना शुरू होने के बाद पिछले दशक में कोरिया की अभूतपूर्व आर्थिक प्रगति हुई है।

कोरिया की अर्थ व्यवस्था के सभी पहलुओं का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तुओं के निर्यात का भी तेजी से विस्तार हुआ है। दस वर्ष पूर्व कोरिया का निर्यात केवल ५.४८ करोड़ डालर था। इसमें प्रतिवर्ष औसतन ४१ प्रतिशत की वृद्धि होती रही है। १९६४ में कुल निर्यात ११ करोड़ डालर से भी अधिक हुआ। १९७१ में यह १३५ करोड़ डालर से भी आगे बढ़ गया। अनुमान है, १९७६ तक कोरिया का निर्यात ३५१ करोड़डालर तक पहुंच जायेगा।

कोरिया की जनता एक सबल और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ती रहेगी, क्योंकि वह जानती है, और कहावत भीहै, कि किठनाइयां और विपरीत परिस्थितियां, साहसी राष्ट्रों के सामने न केवल घुटने टेक देती हैं, बल्कि उन्हें वैभव की चोटी पर ले जाती हैं।

"सेमोल" (नया सामुदायिक) गांव का एक हवाई दृश्य

नया सामुदायिक आन्दोलन (सेमौल)

सामुदायिक आन्दोलन की कल्पना वैसी ही पुरानी है, जैसे दो व्यक्ति परस्पर हित के आधार पर एक दूसरे की सहायता करते हैं। लेकिन कोरिया में १९७० में यह राष्ट्रव्यापी आन्दोलन के रूप में शुरू हुआ, जब राष्ट्रपति पक ने, कोरिया वासियों, मुख्यतः ग्रामीण जनता के लिये स्वच्छ, सुखी और समृद्धशाली जीवन का उपयुक्त वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से एक दूसरे की सहायता करने की एक योजना प्रस्तुत की।

राष्ट्रपति, ग्रामीण जनता का जीवन स्तर ऊंचा उठाने और उनका नैतिक बल बढ़ाने के लिए नया दृष्टिकोण अपनाने और संकल्प की आवश्यकता पर जोर देते रहे हैं। ऐसी परियोजनाओं में सरकार की सहायता तो पृष्ठभूमि में रहती ही है। सरकार आवश्यक तकनीकी सूचनाएं उपलब्ध कराने, मार्गदर्शन, परामर्श, आदि के रूप में सहायता करती है। एक हद तक न्यूनतम आर्थिक सहायता भी सरकार उपलब्ध कराती है।

यह परियोजना दो वर्गों में विभाजित है, पहला वातावरण का सुधार और दूसरा आर्थिक प्रगति।

पहले कार्यक्रम के अन्तर्गत गांवों में स्नान घर और धुलाई घर बनाना, छप्पर के स्थान पर टाइल और स्लेट की छतें बनाना, फल-पौधे और पेड़ लगाना आदि आते हैं।

दूसरे कार्यक्रम के अन्तर्गत सड़कों और गलियों का सुधार, पुलों की मरम्मत, नए-नए गृह उद्योगों की, स्थापना और नई-नई नगदी फसलों का उत्पादन आदि शामिल है।

अप्रैल, १९७२ तक कोरिया के १६००० से भी अधिक गांव--सम्पूर्ण देश के लगभग आधे गांव--इस परियोजना के अन्तर्गत आ गए थे। इन गांवों में इस आन्दोलन के विविध, पर, आमतौर पर अच्छे नतीजे देखने को मिले।

इस परियोजना के दूसरे चरण में, जो शुरू हो गया है, कृषि प्रधान जिलों में विभिन्न प्रकार के, खासतौर से, निर्यात उद्योग से सम्बन्धित वस्तुओं के कारखाने स्थापित करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जायेगा।

मध्य कोरिया का गुमसन भू-उपग्रह अभिग्राही केन्द्र ▶

परिवहन और संचार

हाल के वर्षों में कोरिया के आर्थिक विकास की सबसे प्रमुख उपलब्धि ४८८ किलोमीटर लम्बे सउल-बूसन राजमार्ग का निर्माण है। यह राजमार्ग, जो एक उच्चकोटि की सड़क है, राजधानी को सुदूर दक्षिण के बन्दरगाह वाले नगर से मिलाती है। इस राजमार्ग के निर्माण पर १३,४२,००,००० डालर खर्च हुआ है तथा इसमें पूर्णरूप से देशी पूंजी और देश के ही इंजीनियरों की सेवा लगी है। राजधानी और दक्षिण के बंदरगाह को जोड़ने वाली यह सड़क उद्योग और निर्यात के बीच एक कड़ी का काम करती है। यह उन सभी शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास का मार्ग प्रशस्त करेगी, जिनसे होकर यह गुजरती है, तथा जहां देश की ६३ प्रतिशत जनता बसती है और ८६ प्रतिशत औद्योगिक उत्पादन होता है।

आशा है, १९८१ तक देश की सड़कों की कुल लंबाई २३०० किलोमीटर तक पहुंच जायेगी तथा प्रत्येक जिला एक दूसरे से इस प्रकार सम्बद्ध हो जायेगा कि एक दिन में एक जिले से दूसरे जिले तक यात्रा पूरी करना संभव हो जायेगा।

आर्थिक विकास के हर क्षेत्र में हुई उल्लेखनीय प्रगति को ध्यान में रखते हुये परिवहन और संचार जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों की उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। आर्थिक प्रगति के साथ साथ स्वाभाविक रूप से परिवहन सम्बंधी गतिविधियों का भी विस्तार होता है। दूसरी ओर सड़कों का जाल आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

आर्थिक विकास की प्रथम पंचवर्षीय योजना की १९६२ में शुरुआत होने के पश्चात् पिछले दशक में विमान, परिवहन और जहाजरानी उद्योग में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

१९७० में गुमसन में भू-उपग्रह केन्द्र की स्थापना, कोरिया के आधुनिकीकरण की दिशा में एक एतिहासिक कदम था। इसके परिणाम स्वरूप कोरिया एक विश्व व्यापी उपग्रह संचार प्रणाली के अंतर्गत आ गया है।

परिवहन

उच्च कोटि के राजमार्गों का निर्माण कोरिया की अर्थव्यवस्था के तीव्र विकास के मुख्य संकेत हैं। ये मार्ग ग्रामीण और शहरी क्षत्रों की आर्थिक असमानता को कम करने में तथा सम्पूर्ण देश में उद्योगीकरण के विस्तार में सहायक होते हैं।

आर्थिक विकास की गतिविधियां बढ़ने के फलस्वरूप जब परिवहन की समस्यायें भी बढ़ने लगी तो सरकार ने राजमार्गों का निर्माण करने का निर्णय लिया, क्योंकि रेलवे की माल परिवहन क्षमता सीमित थी। १९७६ तक १,६५६ किलोमीटर और १९८१ तक २,३०० किलोमीटर राजमार्गों के निर्माण का लक्ष्य रखते हुये एक दीर्घ सूत्री योजना बनाई गई है।

१९६९ के जुलाई में सउल को पश्चिमी तट के इन्छन बन्दरगाह से जोड़ने के लिये चार मार्गों वाली एक सड़क का निर्माण कार्य पूरा किया गया। २०.५ किलोमीटर लम्बे इस राजमार्ग के निर्माण पर ३४९ करोड़ वन (९० लाख डालर) खर्च हुआ। इससे इन्छन बन्दरगाह वाले नगर से राजधानी तक १८ मिनट में यात्रा की जा सकती है, जबकि इसके पूर्व पूरा एक घंटा लगता था।

इसके पश्चात् जून, १९७० में ४२८ किलोमीटर लम्बे विस्तृत सउल-बूसन मार्ग का उद्घाटन हुआ, जो यातायात सुविधाओं के आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। ५००० करोड़ वन (१३.४ करोड़ डालर) की लागत से बनी यह सड़क किसी आपात्कालीन स्थिति में विमान के लिये रनवे के काम भी आ सकती है। १९७१ के लगभग अंत में पूर्वी तट पर २४३ किलोमीटर लम्बे (सुवन के निकट) गंगरूंग मार्ग का भी उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

अन्य प्रमुख सड़कें जिनका निर्माण कार्य जारी है, ये हैं—२८९ किलोमीटर डंजोन-संचन मार्ग; १०७ किलोमीटर समच्योग-सोगचों मार्ग, तथा बूसन और संचन को मिलाने वाली २१० किलोमीटर लम्बी सड़क। इन सभी सड़कों की चौड़ाई २३.४ मीटर होगी तथा ये चार मार्गों वाली होगी।

१९७३ में, इन चारों सड़कों का, जिनकी कुल लम्बाई ८४० किलोमीटर होगी, निर्मार्ण कार्य पूरा हो जाने पर, आधुनिकीकरण के कार्यक्रम को काफी गति मिलेगी तथा परिवहन की अच्छी व्यवस्था सुनिश्चित हो जाने के कारण, उत्पादन व्यय में भी कमी आ सकेगी। बड़े बड़े नगरों से दूर ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिक एवं प्रशासनिक सुविधाओं के विस्तार से सउल तथा अन्य नगरों को बढ़ती हुई आबादी के दबाव से काफी राहत मिलेगी और साथ ही शहरों में काम करने वाले श्रमिकों एवं गांवों के किसानों और मछुओं की आय में बढ़ती हुई असमानता को कम करने में भी सहायता मिलेगी। ये

कोरियन एयर लाइन्स का फ्लैग कैरियर विमान जिसकी घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय उड़ानें किम्पो के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से संचालित होती हैं

सड़कें दृश्यावलोकन को भी सुलभ बनायेंगी, जिससे कोरिया में, जिसे "प्रातःकालीन शान्ति का देश" (लैंड आफ दी मॉर्निंग काम) कहते हैं, और भी अधिक विदेशी पर्यटक आकृष्ट होंगें।

१९४५ से १९६० तक १६ वर्ष की अवधि में कुल २७० किलोमीटर रेलवे लाइन का निर्माण किया गया। अगले दशक (१९६१–७०) में ३६२.४ किलोमीटर रेलवे लाइन का निर्माण हुआ। इस प्रकार कोरिया में रेल मार्गों की कुल लंबाई ५६०० किलोमीटर हो गई। रेलवे के आधुनिकीकरण कार्यक्रम के अंतर्गत परम्परागत स्टीम इंजिनों का स्थान डीजल इंजन ले रहे हैं तथा पुरानी किस्म के रेल डिब्बों के स्थान पर नये डिब्बे लगाये जा रहे हैं। १९७० के अंत तक कुल २७७ डी. ऍ. इंजनें कार्यरत थीं। अभी कुछ थोड़ी सी संख्या में स्टीम इंजन इस्तेमाल में हैं।

पुराने ढंग की सुरक्षा व्यवस्था में भी परिवर्तन किया जा रहा है और नये नये किस्म के उपकरणों की सहायता से सुरक्षा और संचार सुविधाओं का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। बूसन और डेजोन में एक एक डीजल इंजन का कारखाना भी स्थापित किया गया है। रेल प्रणाली को आधुनिक दूर मुद्रकों की भी सुविधा उपलब्ध करायी गयी है।

ग्वांगबंग-हो डीलक्स ट्रेन अपनी अच्छी सेवा, गति, यात्रियों के लिये आराम की सुविधायें, आदि के कारण काफी लोकप्रिय है। मार्ग में प्राकृतिक दृश्य भी देखने को मिलते हैं। इन सब से विदेशी पर्यटक इस ट्रेन को बहुत पसंद करते हैं। सउल और बूसन के बीच यह ट्रेन दिन भर में कई बार आती जाती है।

परिवहन की निरंतर बढ़ती मांग की पूर्ति के लिये आई०बी०आर०डी० और ए०आई०डी० से प्राप्त ऋण की सहायता से २३०० नई परिवहन गाड़ियों का निर्माण कार्य चल रहा है, जो पुरानी गाड़ियों का स्थान लेगीं। इनसे बॉक्स-कारों की कमी भी दूर की जा सकेगी। विद्युत शक्ति की कमी के कारण बड़े बड़े डीजल इंजनों का आयात करने का प्रयास किया जा रहा है। सउल से ग्योंगिन, घ्योंगबू और ग्योंगवन जानेवाली रेल लाइनों के विद्युतीकरण की भी योजना है। यह राजधानी क्षेत्र में यातायात पर दबाव कम करने के उद्देश्य से उपमार्गों के निर्माण की योजना से भी सम्बद्ध है। सउल को च्योंग यांगरी स्टेशन से मिलाने वाली लाइन (उपमार्ग नं० १) का निर्माण कार्य, जो १९७१ के अप्रैल में शुरू हुआ था, १९७२ में पूरी रफ्तार से चल रहा था। इस परियोजना पर २६०० करोड़ वन,

जिसमें २ करोड़ डालर की विदेशी पूंजी भी शामिल है, व्यय होने का अनुमान है। यदि मान लिया जाये कि १९८५ तक सउल की आबादी ७,५०,००० तक पहुंच जायेगी, तो उपरेलमार्गों से आबादी के विस्तार में फैलने की सुविधा हो जायगी और राजधानी पर दबाव कम हो जायेगा। साथ ही यातायात की भी सुविधायें बढ़ जायेंगी। ९.५४ किलोमीटर लम्बी इस लाइन का निर्माण कार्य १९७३ के अंत तक पूरा हो जायगा और १९७४ के शुरू में यह चालू हो जायेगी। उपमार्गीय रेल गाड़ियों के संचालन की जो योजना है, उसके अंतर्गत हर पांच मिनट पर लोगों को गाड़ी मिलेगी और अनुमान है, प्रति दिन ६,००,००० व्यक्ति यात्रा करेंगे।

उपमार्ग (न० १) पर अभी ७० प्रतिशत लोग बसों और टैक्सियों में यात्रा करते हैं। रेलमार्ग का निर्माण पूरा हो जाने पर, अनुमान है, ५० प्रतिशत यात्री रेल गाड़ियों से सफर करना शुरू कर देंगे। उपमार्गों की योजना अब तक देश में कार्यान्वित की जाने वाली परियोजनाओं में, अकेली सबसे बड़ी योजना है। इसके निर्माण में ४९१ विभिन्न प्रकार के उपकरणों की सहायता ली जायेगी तथा १८,६०,००० श्रम-दिवस लगेंगे। राजधानी में चार अन्य उपमार्गीय लाइनों के निर्माण के लिये १९७१ के अंत में सर्वेक्षण किया गया था। योजना के अनुसार इनका निर्माण कार्य १९८१ तक पूरा हो सकेगा। सउल दुनिया में उपमार्गीय रेल प्रणाली वाला ३८ वां तथा टोकियो के बाद एशिया में दूसरा नगर होगा।

कोरिया में नागरिक उड्यन का भी विकास हो रहा है। १९७१ में देश के भीतर चलने वाली विमान सेवाओं से ११,८२,५०० लोगों ने यात्रा की। पूर्व के वर्ष की तुलना में यह संख्या २३.३ प्रतिशत अधिक रही। १९७२ में इसके १५,१४,००० तक पहुंच जाने की अपेक्षा है, जो १९७१ की तुलना में ३५.१ प्रतिशत अधिक होगी।

गिम्पो के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर अन्तर्राष्ट्रीय उड़ानों में आने जाने वाले यात्रियों की संख्या १९७१ में ३,०७,३०७ से भी ऊपर चली गई थी और पूर्व के वर्ष की तुलना में २९.९ प्रतिशत अधिक थी। १९७२ में यह संख्या ६,१५,००० तक पहुंच जाने का अनुमान है। आज से कुछ वर्ष पूर्व जब कोरिया एयर लाइन्स का प्रबंध सरकार के हाथ से प्राइवेट कम्पनी के हाथ में गया, तो एयर लाइन्स के बेड़े में एक जेट, तीन डी० सी०-३ और चार टर्बोचालित विमान थे। आज एयर लाइन्स के बेड़े में यात्री एवं माल परिवहन के लिये २ बोइंग ७०७-३०२ सी, दो बोइंग-७२०,

दो डी० सी०-९, ९ वाई० एस-११ और ५ एफ०-७ विमान और जुड़ गये हैं। १९७३ में दो बोइंग-७४७ की सेवायें शुरू हो जाने पर जेट यात्री विमान सेवा चलाने वाले देशों में कोरिया का दुनिया में १७ वां और एशिया में तीसरा स्थान हो जायगा।

अप्रैल १९७१ में कोरिया एयर लाइन्स की सप्ताह में तीन दिन चलने वाली सउल-टोकियो-लॉस एंजिल्स माल वाहक विमान सेवा शुरू हुई तथा वर्ष के अन्त तक इसने ८६,०६,८७४ किलोग्राम माल ढोया। इसी वर्ष देश के भीतर चलने वाली माल-वाहक विमान सेवाओं द्वारा २०,६९,८७३ किलोग्राम माल ढोया गया। कोरिया की नागरिक उड्डयन सेवा के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण घटना, टोकियो और होनोलुलू होकर सउल और लॉस एंजिल्स के बीच १९ अप्रैल, १९७२ को यात्री विमान सेवा की शुरूआत थी। आज कोरिया एयर लाइन्स की प्रति सप्ताह कोरिया और जापान के बीच ४२, हांगकांग तक ९, सउल-ओसाका-तायपेई के बीच ५, और सउल-तायपेई-हांगकांग-बैंकाक के बीच ६ उड़ानें हैं।

१९७१ में देश के भीतर जल मार्गों से कुल १,१३,९६,००० टन माल या गया। यह इस बात का संकेत है कि रेल परिवहन पर निर्भरता धीरे धीरे कम हो रही है और माल परिवहन के लिये लोग जल मार्गों की ओर आकृष्ट हो रहे हैं।

उपमार्गों के निर्माण कार्य का दृश्य, जो १९७४ में पूरा होने वाला है.
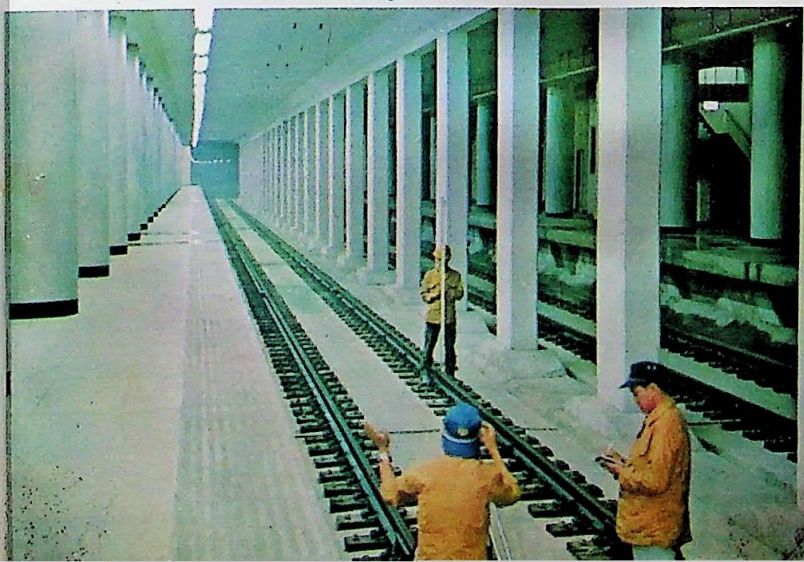
१९७१ के अंत में कोरिया के माल वाहक जल यानों की क्षमता १०,४७,५०० टन थी। इसमें मछली मारने वाले तथा अन्य प्रकार के जहाज शामिल नहीं हैं। समुद्र में चलने वाले १९ जहाजों की परिवहन क्षमता १,३४,४०० टन है। तटवर्ती क्षेत्रों में चलने वाले ५ अन्य जहाजों की परिवहन क्षमता ३१,००० टन है। कोरिया के व्यापारिक बेड़े में १९७२ में समुद्र में चलने वाले १९ और जहाज शामिल होने वाले हैं।

संचार

पिछले कुछ वर्षों में कोरिया में दूर संचार सुविधायें तथा डाक सेवा का काफी विस्तार हुआ है।

जून, १९७० में भू-उपग्रह केन्द्र की स्थापना के साथ ही कोरिया का उपग्रह संचार प्रणाली से संबद्ध देशों में ५० वां स्थान हो गया। इससे देश में आधुनिकतम संचार प्रणाली की सुविधायें संभव हो गई हैं। १९७१ में कोरिया और जापान के बीच स्वचालित टेलेक्स सेवा का प्रारंभ दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। इसके अलावा टेलीफोन और डाक की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई। देश में मई १९७३ में टेलीफोन सेटों की ७,५५,०४६ थी। १९६२ में यह संख्या केवल १,६७,५७० थी।

१९७२ में सरकार सउल और बूसन के बीच सीधी डायलिंग की व्यवस्था करने जा रही है। सउल और बूसन के साथ अन्य बड़े नगरों के बीच टेलीफोन सेवा की दक्षता बढ़ाने तथा दूर दूर स्थानों के कॉल भी जल्दी मिल सकें, इसके लिये सरकार ने सूक्ष्म तरंग संचार प्रणाली का विस्तार किया है।

जुलाई, १९७० में पोस्टल कोड प्रणाली लागू की गई और इसके साथ ही सउल के केन्द्रीय डाकघर में कन्वेयर सुविधा उपलब्ध करायी गयी। १९७२ में देश में १९१२ डाकघर थे, जबकि १९६२ में डाकघरों की संख्या केवल ८०४ थी। इसी प्रकार डाक की संख्या ५० करोड़ पहुंच गयी है, जबकि दस वर्ष पूर्व यह संख्या १८.५ करोड़ थी। डाक बचत एवं बीमा सेवा के कार्यों को सरल एवं त्वरित बनाने के लिये शीघ्र ही इलेक्ट्रॉनिक डेटा प्रॉसेसिंग प्रणाली चालू करने की योजना है।

सउल के एक आधुनिक विश्वविद्यालय का कैम्पस का दृश्य, जो कोरिया वासियों की उच्च शिक्षा की अभिलाषा का द्योतक है

शिक्षा

कोरिया के इतिहास से पता चलता है कि लोग शिक्षा के लिये हमेशा लालायित रहते थे। इसकी प्रेरणा संभवतः कन्फ्यूशी शासन प्रणाली से मिली, जबकि प्रतियोगिता परीक्षाओं की उपलब्धियों के आधार पर सरकारी सेवाओं में लोगों को स्थान प्राप्त होता था अथवा प्रोन्नति मिलती थी। नागरिक प्रशासन सेवा के पदों को सबसे अधिक महत्व दिया जाता था।

आज आधुनिक लोकतांत्रिक सरकार के अधीन, जबकि लोगों को समान अवसर प्राप्त हैं, कोरिया की शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों में भी परिवर्तन हुआ है। आज शिक्षा में मात्र शैक्षणिक उपलब्धियों पर बल नहीं दिया जाता। आज राष्ट्र निर्माण की आवश्यकताओं के अनुरूप टेक्नोलॉजी तथा उत्पादक निपुणता प्राप्त कराने वाली व्यावहारिक शिक्षा को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

कोरिया की शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत छह वर्ष की प्राथमिक शिक्षा, तीन वर्ष की मिडॅल स्कूल, तीन वर्ष की हाई स्कूल तथा चार वर्ष की कालेज अथवा विश्वविद्यालय शिक्षा की व्यवस्था है।

कोरिया के विभिन्न विश्वविद्यालयों, कालेजों एवं स्कूलों में ८०,००,००० से ऊपर छात्र-छात्रायें शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इन स्कूलों और कालेजों में १९७१ के अंत में अध्यापकों की संख्या १,७९,९२२ थी।

निम्न चार्ट में छात्र, शिक्षक, स्कूल तथा कक्षाओं की संख्या दी गई है।

सरकार की नीति

कोरिया में आधुनिक शिक्षा की शुरूआत १९ वीं सदी के अंत में पश्चिम के मिशनरियों द्वारा की गई। यह पश्चिम की शिक्षा प्रणाली से अधिक प्रभावित थी। आज सबों को समान अवसर के सिद्धान्त के अनुसार शिक्षा को लोकतांत्रिक आधार प्रदान किये जाने पर बल दिया जा रहा है। सरकार की नीति कुछ निदेशक सिद्धान्तों पर आधारित है, जिनमें शिक्षा के स्तर में सुधार और ५ दिसंबर, १९६८ के राष्ट्रीय शिक्षा घोषणा-पत्र में निहित आदर्शों को प्राप्त करना प्रमुख हैं।

शिक्षा के राष्ट्रीय घोषणा-पत्र का एक उद्देश्य लोगों में उच्च नैतिकता का विकास करना और राष्ट्रीय पुनर्जागरण के ऐतिहासिक मिशन के लिये प्रेरित करना है। इसके कुछ अंश इस प्रकार हैं—"कला और ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ते हुये, अपनी अपनी प्रतिभा का विकास करते हुये तथा

देश की प्रगति के लिये सभी प्रकार की कठिनाइया का सामना करते हुए हम पूरी शक्ति एवं प्रामाणिकता के साथ अपनी सृजन शक्ति और आगे बढ़ने की भावना का विकास करेंगे। . . . . हम राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान करेंगे तथा पूरी शक्ति और क्षमता के साथ राष्ट्र की सेवा करेंगे।

शिक्षा मंत्रालय ने शिक्षा के कुछ विशिष्ट उद्देश्य और लक्ष्य निर्धारित किये हैं--(१) शिक्षा के माध्यम से लोगों में मानवीय संबंधों के बारे में नई सूझ-बूझ का विकास करना, (२) वैज्ञानिक और तककीनी शिक्षा को प्रोत्साहन देना, (३) शिक्षा के संतुलित विकास की व्यवस्था करना तथा (४) शैक्षणिक वातावरण में सुधार लाना और युवकों को शारीरिक दृष्टि से भी योग्य बनाना।

हाल के वर्षों में, शिक्षा में उत्पादकता पर भी विशेष जोर दिया जाने लगा है। सरकार शैक्षणिक उपलब्धियों को औद्योगिक विकास से सम्बद्ध करने को उच्च प्राथमिकता दे रही है। इसका संकेत २२ मार्च, १९७२ को अध्यापकों के राष्ट्रीय सम्मेलन में हुये राष्ट्रपति पक चुंग ही के अभिभाषण में मिला था।

राष्ट्रपति पक ने कहा था "आज समाज में एक नई हवा बह रही है। सारे देश में एक नये समाज का आंदोलन चल पड़ा है। इस उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिये सभी स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था और सुदृढ़ की जानी चाहिये तथा उद्योग अभिमुख शिक्षा प्रणाली का और विस्तार किया जाना चाहिये। प्रत्येक कालेज में किसी एक क्षत्र में विशिष्ट शिक्षा का प्रबंध होना चाहिये, जिससे समाज का अधिक से अधिक हित हो सके।"

राष्ट्रपति पक ने आगे कहा "बन्दरगाह वाले नगरों में स्थित कालेजों में मत्स्य उद्योग एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित कालेजों में खेती के कार्यक्रमों पर विशेष बल दिया जाना चाहिये।

कहने का तात्पर्य यह है, कि कोरिया के आर्थिक विकास के लिये मानवीय साधन उपलब्ध कराने के निमित्त "व्यावहारिक शिक्षा और कठिन परिश्रम" पर सब तरह से जोर दिया जा रहा है।

मिडॅल स्कूलों में प्रवेश के लिये प्रवेशिका परीक्षा के स्थान पर एक नई प्रणाली शुरू की गई है, जिसके अनुसार प्राथमिक स्कूलों से उत्तीर्ण छात्रों को अपने अपने जिले के मिडॅल स्कूलों में परीक्षा के आधार पर नहीं, बल्कि लॉटरी प्रणाली से प्रवेश दिया जाता है।

कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के परिसर में ही सैनिक शिक्षा की

व्यवस्था भी की गई है। इसके अन्तर्गत लड़कों को सप्ताह में तीन घंटे बुनियादी सैनिक शिक्षा दी जाती है।

छात्रों की संख्या

पिछले दो दशक में स्कूलों में छात्रों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। १९४५ की तुलना में जब कोरिया जापानियों के औपनिवेशिक शासन से मुक्त हुआ था, १९७० में प्राथमिक स्कूलों में छात्रों की संख्या ३२० प्रतिशत, मिडल स्कूलों में १४६० प्रतिशत तथा उच्चतर विद्यालयों में २,१०० प्रतिशत अधिक थी। छात्रों की संख्या में यह वृद्धि, लोकतंत्र में "सबों के लिये शिक्षा का समान अवसर" का आदर्श प्रतिष्ठित करने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर हुये प्रयासों का ही परिणाम है।

पर, छात्रों की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ शिक्षा का गुणात्मक स्तर बनाये रखना संभव न होने के कारण कई समस्यायें उठ खड़ी हुई।

छात्रों की संख्या बढ़ने के साथ साथ शिक्षकों की मांग भी बढ़ी। प्रति शिक्षक छात्रों का अनुपात अत्यधिक होने की समस्या अभी तक हल नहीं की जा सकी है। प्राथमिक स्कूलों में मोटा मोटी शिक्षक-छात्र अनुपात १ और ६० का है। इस अनुपात में सुधार लाने के लिये सरकार शिक्षकों को अच्छा वेतन एवं अन्य प्रोत्साहन देने का प्रयास कर रही है।

शिक्षकों का हौसला बढ़ाने के लिये सरकार ने कुछ कदम उठाये हैं। आर्थिक जीवन में स्थिरता लाने के लिये एक कानून बना कर "शिक्षक पारस्परिक सहायता संघ" की स्थापना की गई है। शिक्षकों को प्रोन्नति का अधिक अवसर प्रदान करने एवं उनके अन्दर प्रतिस्पर्धा की भावना को प्रोत्साहन देने के लिये एक "मास्टर टीचर" प्रणाली शुरू की गई है।

प्राथमिक स्कूल

कोरिया में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य है। हाल के कुछ वर्षों तक प्राथमिक स्कूलों में छात्रों की संख्या में तीव्र वृद्धि होती रही। लेकिन, इधर जनसंख्या वृद्धि की दर में कमी आने के कारण प्राथमिक स्कूलों में छात्रों की संख्या में वृद्धि भी सामान्य होती प्रतीत होती है।

प्राथमिक शिक्षा में सुधार की एक पंचवर्षीय योजना १९७१ में पूरी हुई। इस योजना के मुख्य उद्देश्य थे कम से कम ९५ प्रतिशत स्कूल

जाने योग्य बच्चों का प्राथमिक स्कूलों में प्रवेश सुनिश्चित करना, प्रति कक्षा छात्रों की संख्या घटाकर शहरों में ६० और गांवों में ६५ तक लाना (इसके पूर्व यह संख्या ७५ से भी अधिक थी) एवं कक्षाओं और शिक्षकों का अभाव कम करना।

१९७१ के बजट में प्राथमिक स्कूलों में कक्षाओं की संख्या एवं अन्य सुविधायें बढ़ाने के लिये ५.४ करोड़ डालर का प्रावधान किया गया। इसमें से ५० प्रतिशत नई कक्षाओं के निर्माण पर खर्च किया गया।

प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को वयस्क जीवन के लिये आवश्यक बुनियादी शिक्षा प्रदान करना है।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत सरकार के दो मुख्य कार्यक्रम हैं— छात्रों के बीच पाठ्य पुस्तकों का मुफ्त वितरण तथा स्कूलों में उनके लिये भोजन की व्यवस्था। प्राथमिक स्कूलों के छात्रों के बीच पाठ्य पुस्तकों का वितरण १९६०–६१ के दशक के प्रारंभ में शुरू किया गया। १९७१ में कुल १५,१०,००० छात्रों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिये बजट में २० लाख डालर का प्रावधान किया गया। चालू योजना के अनुसार १९७६ तक प्राथमिक स्कूलों में प्रत्येक छात्र को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध करायी जा सकेंगी।

स्कूलों में भोजन उपलब्ध कराने के कार्यक्रम से १६,५०,५०० छात्र लाभान्वित हुये। सरकार इस कार्यक्रम का और विस्तार करने का विचार कर रही है ताकि प्राथमिक स्कूलों में सभी छात्र लाभान्वित हो सकें।

मिडॅल स्कूल

अनिवार्य शिक्षा की अवधि बढ़ाने के उद्देश्य से सरकार ने १९६९ में मिडॅल स्कूलों के लिये प्रवेशिका परीक्षा की प्रणाली को समाप्त कर दिया ताकि प्राथमिक स्कूलों से निकलने वाले छात्र मिडॅल स्कूलों में परीक्षा परिणाम की अनिवार्यता के बिना प्रवेश पा सकें।

प्रवेशिका परीक्षा की पुरानी प्रणाली, जिसमें कड़ी प्रतियोगिता होती थी, के कई घातक परिणाम सामने आये। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये जो कठिन परिश्रम करना पड़ता था, उसका छात्रों के स्वास्थ्य पर बुरा असर तो पड़ता ही था, अभिभावकों पर आर्थिक बोझ भी बढ़ जाता था।

अब मिडल स्कूलों में, प्राथमिक स्कूलों से निकलने वाले छात्र बड़ी

संख्या में प्रवेश पा रहे हैं तथा इससे शिक्षा के क्षेत्र में काफी परिवर्तन हो रहा है।

१९६९ से १९७१ तक की अवधि में मिडल स्कूलों में प्रवेश पाने वाले छात्रों की संख्या में २७.३ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

इस वृद्धि के परिणाम स्वरूप शिक्षकों के प्रशिक्षण तथा अन्य सुविधाओं के विस्तार की गंभीर समस्यायें भी उत्पन्न हुई।

पिछले दो वर्षों में, ३७७ नये स्कूलों और ४८,५७९ नयी कक्षाओं का निर्माण हुआ तथा ११,५१७ नये शिक्षकों की नियुक्ति के साथ साथ पाठ्य क्रम में कई नये विषय प्रविष्ट किये गये।

हाई स्कूल

हाई स्कूलों में मिडल स्कूलों की उपलब्धियों के आधार पर छात्रों को उदार उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा देने का लक्ष्य रखा गया है।

१९७१ में हाई स्कूलों की संख्या ८७२ तथा शिक्षकों की संख्या ६,४७,१७० थी। १९७२ में छात्रों की ७,२९,८०० पहुंच गई थी। ३९८ विद्यालयों में सामान्य शिक्षा तथा ५०० में व्यवसायिक शिक्षा की व्यवस्था है। व्यवसायिक हाई स्कूलों में छात्रों की संख्या ३,१०,०५५ है, जो हाई स्कूलों में छात्रों की कुल संख्या का ४७ प्रतिशत है।

शैक्षिक हाई स्कूलों में सामान्य पाठ्य क्रम के अलावा अन्य गतिविधियां भी चलती हैं। कोरियाई भाषा, समाज अध्ययन, नीति और नैतिकता, कोरिया का इतिहास, विश्व का इतिहास, भूगोल, सामान्य गणित, जीव विज्ञान, शारीरिक शिक्षा, संगीत और कला, अंग्रेजी और सामान्य प्रबंध इन विद्यालयों में पाठ्यक्रम के विषय हैं। फिर भी कला और प्रकृति विज्ञान में भविष्य में विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिये छात्रों को पाठ्यक्रमों के चयन के भी अवसर प्रदान किये जाते हैं।

व्यवसायिक हाई स्कूलों में पाठ्यक्रम को सामान्य और व्यवसायिक, दो भागों में विभाजित किया गया है, जिनमें कुछ अनिवार्य विषय होते हैं और कुछ में छात्रों को चयन की सुविधा दी जाती है।

मिडॅल स्कूलों की प्रवेश प्रणाली के विपरीत हाई स्कूलों के लिये प्रवेशिका परीक्षा अनिवार्य है।

उच्चतर शिक्षा

प्रत्येक कालेज और विश्वविद्यालय में छात्रों की संख्या सरकार द्वारा नियंत्रित की जाती है।

छात्रों की संख्या से पता चलता है कि प्रति एक लाख की आबादी में ५०० उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र हैं।

कालेजों और विश्वविद्यालयों में छात्रों के प्रवेश की सीमा निर्धारित करते समय सरकार उन विभागों को महत्व देती है, जिनकी देश को अधिक आवश्यकता है, जैसे कानून, इंजीनियरिंग, औषधि विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स और वैमानिकी।

कालेजों में हाई स्कूलों से निकलने वाले अयोग्य छात्रों के प्रवेश और उच्चतर शिक्षा वाले विद्यालयों के अन्धाधुन्ध विस्तार को रोकने के उद्देश्य से सरकार ने १९६९ में कॉलेज प्रवेशिका परीक्षा प्रणाली शुरू की। फिर भी, यह परीक्षा प्रणाली छात्रों को केवल कॉलिजों में प्रवेश पाने के लिये अपने को समर्थ सिद्ध करने के लिये है। यह परीक्षा पास करने के बाद छात्रों को विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के लिये पुनः टेस्ट परीक्षा पास करनी पड़ती है।

वयस्क शिक्षा

स्कूल जाने योग्य ९८ प्रतिशत बच्चे प्राथमिक स्कूलों में पढ़ते हैं। इस प्रकार निरक्षरता की दर घटा कर ८ प्रतिशत की जा सकी है। यह प्रतिशत सम्पूर्ण एशिया में सबसे कम है।

इसके अलावा सरकार ने बड़े पैमाने पर वयस्क शिक्षा कार्यक्रम चलाने की भी व्यवस्था की है, जिसके पीछे धारणा यह है कि "ज्ञान की प्राप्ति स्कूल तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिये।"

वयस्क शिक्षा का एक रूप सामुदायिक शिक्षा आन्दोलन है, जिसमें ग्रामीणों के लिये वर्गों का आयोजन किया गया है, जैसे युवकों का वर्ग महिलाओं का वर्ग, आदि। ये वर्ग संध्या समय चलते हैं। उनके लिये स्थानीय स्कूलों के भवन उपलब्ध कराये जाते हैं, जो संध्या समय खाली रहते हैं। वहां प्राप्त सुविधायें भी उन्हें उपलब्ध होती हैं।

छात्रवृत्तियां और अनुदान

सरकार योग्य छात्रों को छात्र वृत्तियां उपलब्ध कराती है ताकि उन्हें अपनी पढ़ाई जारी रखने में कोई कठिनाई न हो। अब तक छात्रों को दी जाने वाली वित्तीय सहायता या तो सरकारी ऋण होता था, या किसी व्यक्ति द्वारा उपलब्ध करायी गई छात्रवृत्ति, अथवा शुल्क से मुक्ति या उसमे छूट। विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियों को योग्य ढंग से चलाने के उद्देश्य से उनके केन्द्रीयकरण के लिये सरकार ने एक स्कॉलरशिप फाउन्डेशन की स्थापना की। इससे छात्रवृत्ति के लिये उपलब्ध निधि में भी वृद्धि हुई तथा छात्रवृत्ति पाने वाले छात्रों की संख्या भी बढ़ी। अगले पांच वर्षों तक इस फाउन्डेशन को लगभग २५ लाख डालर की राशि उपलब्ध करायी जायेगी।

सरकार प्राध्यापकों को शोध कार्य में सहायता करने की दृष्टि से भी अनुदान दे रही है। १९७१ के बजट में शोध अनुदान के लिये १० लाख डालर का प्रावधान किया गया था, जबकि शोध परियोजनाओं की कुल संख्या ५७५ थी तथा अनुदान प्राप्त करने वालों की १०००।

१९५२ से, जब प्रान्तीय और नागरीय शिक्षा आयोगों का गठन हुआ, कॉलेज से नीचे के स्तर की शिक्षण संस्थाओं का संचालन इन्हीं स्वायत्त-शासी शिक्षा आयोगों द्वारा किया जाता रहा है। सरकार इन आयोगों को शिक्षा के संबंध में बुनियादी दायित्वों एवं अन्य विषयों पर परामर्श देती है तथा उन्हें वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती है। इस प्रकार इन प्रान्तीय, नागरीय एवं ग्रामीण शिक्षा आयोगों पर प्राथमिक, मिडल और हाई स्कूलों में छात्रों के प्रवेश, पाठ्यक्रम नियोजन अन्य शैक्षणिक सुविधाओं आदि के प्रबंध का पूर्ण दायित्व है।

विदेशी छात्रों को, जिन्हें कोरिया के बारे में अध्ययन करने की विशेष अभिरूचि है, सरकार की ओर से छात्र वृत्तियां प्रदान कर प्रोत्साहित किया जाता है।

१९७३ के मई में कोरिया के विभिन्न कालेजों में ३५९ विदेशी छात्र थे। इनमें २३१ कोरिया में बसे चीनी छात्र थे। अन्य विदेशी छात्र अमेरिका, जापान, दक्षिण वियतनाम, भारत, फ्रांस, स्वीडन और बंगला देश के थे।

सरकारी छात्रवृत्ति के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त करने के लिये यहां आने वाले छात्रों को शिक्षण संस्थाओं का चयन करने की छूट दी गई है। आवास

एवं अन्य मामलों में भी सरकारी तौर पर उनकी सहायता की जाती है। किसी विषय का विशेष अध्ययन प्रारंभ करने के पूर्व इन छात्रों को भाषा की जानकारी प्राप्त कराने के लिये आम तौर पर एक साल के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से कोरिया का आर्थिक एवं राजनीतिक विकास, कला, भाषा, एवं कोरिया का इतिहास, उनके अध्ययन के विषय होते हैं।

शिक्षा प्रणाली
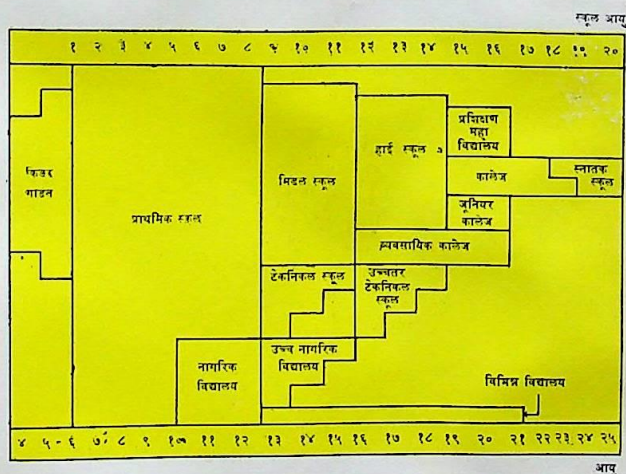
जनसचार

कोरिया गणतंत्र के संविधान में सभी प्रकार के प्रकाशनों को अभि-व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता की गारंटी दी गई है। प्रेस और प्रकाशन के विभिन्न माध्यमों को पंजीकृत कराना एवं उनके लिये लाइसेंस प्राप्त करने आवश्यक होते हैं। अन्य लोकतांत्रिक देशों की भांति कोरिया के नागरिक भी विचार स्वातंत्र्य के अपने इस बुनियादी अधिकार को सबसे अधिक महत्व देते हैं। कोरिया की लडाई के समय प्रायद्वीप के अधिकांश भाग पर कुछ समय के लिये कम्युनिस्टों का अधिकार था और उस समय लोगों ने उनके अत्याचारों का जो कटु अनुभव किया था, उसके कारण उन्हें इस स्वतंत्रता की विशेष महत्ता समझ में आती है।

प्रेस के लिये एक ऐच्छिक आचार संहिता बनायी गई, जिसके अन्तर्गत समाचार-पत्र नीति आयोग की स्थापना की गई। यह आयोग समाचार पत्रों तथा साप्ताहिक, मासिक आदि अन्य पत्र-पत्रिकाओं के विरुद्ध शिकायतों की सुनवाई करता है और गलत समाचार छापने के आरोप में संबंधित पत्र-पत्रिका के दोषी पाये जाने अथवा निर्दोष सिद्ध होने के संबंध में अपना निर्णय देता है और शिकायतें दूर करने के लिये क्या कार्रवाई की जाय, इसकी सिफारिश करता है।

कोरिया में सर्व प्रथम १८९६ में एक पत्रिका का, जिसे हम आधुनिक अर्थ में समाचार पत्र कह सकते हैं, प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका का प्रकाशन ८ अप्रैल को प्रारंभ हुआ। सउजे-पिल द्वारा "दी इन्डिपेन्डेन्ट' अथवा "तोंगनिप शिनमून" नाम से यह पत्रिका क्रमशः अंग्रेजी और कोरि-यायी भाषाओं में प्रकाशित की गई।

"दी इन्डिपेन्डेन्ट" का प्रकाशन दो साल के बाद ही बन्द हो गया, लेकिन, शताब्दी समाप्त होते होते अनेक पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित हुई और थोड़े थोड़े दिनों में बन्द भी होती चली गई। १९२० के बाद की अवधि में, जब कोरिया पर जापानियों का आधिपत्य था, "दोंग-ए-इल्वो" और "चो सुन इल्वो" नामक दो कोरियाई समाचार पत्रों को अनेक प्रतिबन्धों के साथ प्रकाशन की अनुमति दी गई। ये पत्र १९४१ तक चलते रहे। बाद में सभी कोरियाई पत्रों के प्रकाशन स्थगित कर दिये गये।

जापानियों के शासन काल में कोरिया के समाचार पत्र राष्ट्रीयता की भावना को जीवित रखने और परोक्ष रूप से जापानियों के विरुद्ध आजादी

◀ सउल की नामसन पहाड़ी पर स्थित टेलीविजन ट्रान्समिटिंग टावर

की लड़ाई में जनता को प्रोत्साहन देते रहने के लिये संघर्ष करते रहे। इस अवधि में तथा बाद में सिंगमन री के तानाशाही शासन में, कोरिया के समाचार पत्रों को जो अनुभव हुये, उनके परिणाम स्वरूप सतत संघर्ष करने वाले सुधारक और सत्ता के निर्भीक आलोचक के रूप में समाचार पत्रों का विकास हुआ।

कोरिया में इन दिनों कोरियाई भाषा में २९ दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। इनमें ८ सउल से प्रकाशित होते हैं, जिनका सारे देश में प्रसार और प्रभाव है। इनके अलावा सउल में ही दो अंग्रेजी दैनिक, एक चीनी दैनिक, एक खेलकूद पत्रिका तथा आर्थिक एवं वित्तीय मामलों से संबंधित चार अन्य पत्र प्रकाशित होते हैं।

सउल से प्रकाशित सभी पत्रों के सप्ताह में ४८ पृष्ठ होते हैं। प्रान्तीय समाचार पत्र सप्ताह में २४ से ३६ पृष्ठ छापते हैं।

सउल से प्रकाशित ८ प्रमुख दैनिक पत्र हैं—डोंग-ए इल्बो, शिन-ए इल्बो, देहन इल्बो, हंकूक इल्बो, चोसुन इल्बो, जूंगंग इल्बो, सउल शिनमून और क्योंगह्यांग। इनमें दो हंकूक और चोसुन के प्रभात संस्करण निकलते हैं और शेष छह सांध्य दैनिक हैं। दो अंग्रेजी पत्र "कोरिया हेराल्ड" और "कोरिया टाइम्स" हैं। सभी भाषायी और अंग्रेजी दैनिकों की प्रसार संख्या लगभग १४ लाख है। इन दैनिकों के अलावा, जिनके प्रकाशन का लम्बा इतिहास है, छह भाषायी साप्ताहिक पत्रों का भी हाल में प्रकाशन शुरू हुआ है। ये साप्ताहिक, मुख्यतः सामयिक और सार्वजनिक रूचि के विषयों पर पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करते हैं और सामान्य पाठकों में लोकप्रिय हैं।

इन साप्ताहिकों के प्रकाशन सउल के प्रमुख दैनिक पत्रों के अधीन ही होते हैं।

समाचार समितियां

कोरिया में दो प्रमुख समाचार समितियां हैं। इनके मुख्यालय सउल में हैं तथा ए० पी०, यू० पी० आई०, ए० एफ० पी०, एवं रायटर जैसी प्रमुख विदेशी समाचार समितियों से इनका संबंध है। इन समाचार समितियों की राष्ट्रव्यापी वितरण प्रणाली है। इनमें हपडोंग, जिसका सम्बंध ए० पी०, रायटर, ए० एफ० पी० और जापान की क्योडो समाचार समिति है, सबसे पुरानी समाचार समिति है और पिछले २५ वर्षों से कर रही है।

दूसरी समाचार समिति तोंगयांग, समाचार सेवा के क्षेत्र में अपेक्षाकृत

तयी है। इसका सम्बंध य० पी० आई० से हैं।

ये तीनों समाचार समितियां अन्य देशों को भी अपनी समाचार सेवा देती है, किन्तु समाचार देने का समय और समाचार लेने वाले देशों की संख्या सीमित है। उदाहरण के लिये हमडोंग, जापान और चीन स्थित अपने ग्राहक पत्रों को कुल ढाई घंटे की समाचार सेवा देती है। हमडोंग ने १९६५ में समुद्र पार देशों को अपनी समाचार सेवा देना प्रारंभ किया था। बाद में १९७१ में तोंगयांग ने भी अपनी विदेशी समाचार सेवा शुरू की।

रेडियो और टेलीविजन

कोरिया में रेडियो प्रसारण १९२७ में शुरू हुआ, जब देश पर जापानियों का शासन था। १९५५ तक सरकार द्वारा संचालित कोरियन ब्राडकास्टिंग सिस्टम एक मात्र रेडियो प्रसारण सेवा थी। १९५५ में क्रिश्चियन फंड से उपलब्ध वित्तीय सहायता से एक प्राइवेट रेडियो प्रसारण सेवा भी शुरू हुई, जो पहली बार सरकार द्वारा संचालित रेडियो स्टेशनों के प्रतियोगी के रूप में आई। १९५७ में कोरियन ब्राडकास्टिंग सिस्टम ने अपने केन्द्रों और प्रसारण कार्यक्रमों का विस्तार किया। एच० एल० सी० ए० नाम से एक अतिरिक्त केन्द्र की स्थापना की गई, जिसके द्वारा स्कूल विद्यार्थियों, सैनिकों और किसानों के लिये विशिष्ट कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाने लगा।

परम्परागत पोशाक में टेलीविजन का एक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए कोरिया के बच्चे
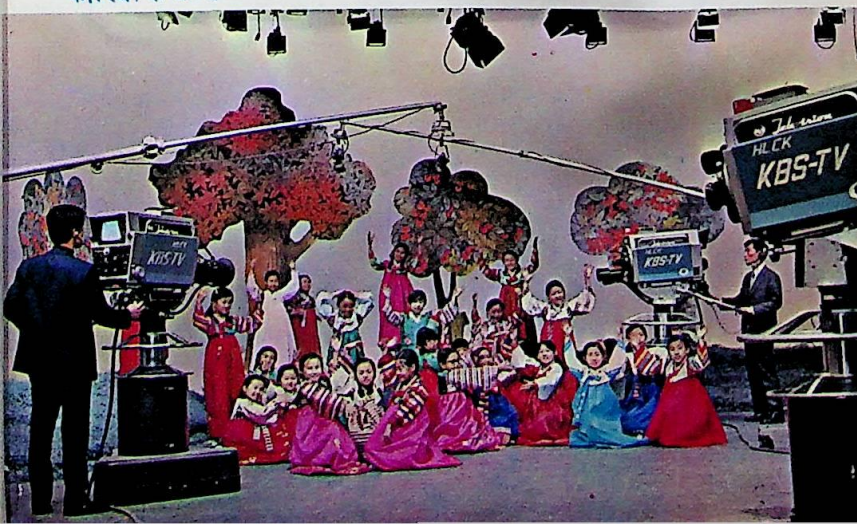
क्रिश्चियन ब्राडकास्टिंग सिस्टम का संचालन प्रमुख क्रिश्चियन सम्प्रदाओं के प्रतिनिधियों की एक प्रबंध समिति द्वारा होता है। प्रांतों के चार प्रमुख नगरों में इसके प्रसारण केन्द्र हैं।

१९५९–७१ की अवधि में तीन प्राइवेट व्यवसायिक प्रसारण कंपनियां भी प्रारंभ हुई। इनमें मुनव्हा ब्राडकास्टिंग कंपनी (एम० बी० सी०) की स्थापना १९६३ में और तोंगयांग ब्राडकास्टिंग कंपनी (टी० बी० सी०) की स्थापना १९६४ में हुई। इन सबों के मुख्य केन्द्र सउल में हैं। एम० बी० सी० की शाखायें और सम्बद्ध केन्द्र १४ प्रान्तीय क्षेत्रों में हैं। इन रेडियो स्टेशनों से व्यवसायिक फर्मों की ओर से प्रस्तुत मनोरंजन कार्यक्रम काफी लोकप्रिय हैं।

इनके अलावा प्राइवेट रेडियो कंपनियों द्वारा एफ० एम० रेडियो स्टेशनों का भी संचालन होता है, जिनके प्रसारणों में संगीत कार्यक्रमों की प्रमुखता रहती है।

कोरिया में "वॉयस ऑफ फ्री कोरिया" और 'आर० ओ० के० आर्मी रेडियो" जैसे कुछ विशिष्ट प्रसारण प्रणालियां भी हैं। वॉयस ऑफ फ्री कोरिया द्वारा विभिन्न विदेशी भाषाओं में प्रतिदिन साढ़े उन्नीस घंटे के विदेशों के लिये कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। ये प्रसारण अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, चीनी, जापानी और रूसी भाषाओं में होते हैं।

हाल में आंकड़ों के अनुसार अनुमान है कोरिया में ३३,८५,००० रेडियो सेट हैं। इनमें ७,७३,९७६ रेडियो सेट सउल में ही होने का अनुमान है। कोरिया की जन संख्या के अनुसार प्रति ९.५ व्यक्ति पर एक रेडियो सेट है। १९६८ से रेडियो रखने वाले लोगों की संख्या में १० लाख की वृद्धि हुई है।

गांवों में जहां बहुत कम लोगों के पास रेडियो होते हैं, एक शक्तिशाली केन्द्रीय रिसीवर एम्पलीफायर के द्वारा रिले की व्यवस्था की गई है, जिससे हर घर में स्पीकर लगाकर रेडियो प्रोग्राम सुने जा सकते हैं।

कोरिया में टेलीविजन की शुरूआत १९५६ से हुई, जब सउल में टेलीविजन का एक व्यवसायिक केन्द्र स्थापित किया गया, जो बाद में आग लगने से जल गया।

१९६१ में सरकार द्वारा संचालित कोरियन ब्रॉडकास्टिंग सिस्टम की टेलीविजन सेवा प्रारंभ हुई, जिससे सभी प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित किये जाने लगे।

बाद में दो व्यवसायिक टेलीविजन केन्द्र भी स्थापित किये गये। प्रान्तों के प्रमुख नगरों में स्थापित रिले स्टेशनों के द्वारा उनका राष्ट्रव्यापी विस्तार हुआ। ये दो प्राइवेट टेलीविजन स्टेशन टी० बी० सी० और एम० बी० सी० द्वारा संचालित हैं।

देश में १९७२ में कुल ९,०५,३८३ टेलीविजन सेट थे। इसके पूर्व के आंकड़ों को देखने से पता चलता है १९७१ की तुलना में टेलीविजन सेटों की संख्या में ६८ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। देश में असेम्बुल किये गये सेट सस्ते दामों पर उपलब्ध होने से बड़ी संख्या में लोग टेलीविजन खरीद सकेंगे।

१९७१ में रेडियो और टेलीविजन सेवा का उल्लेखनीय विस्तार हुआ, जब देश में कुल रेडियो स्टेशनों की संख्या ४८ और टेलीविजन स्टेशनों की संख्या ११ तक पहुंच गई।

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन

कोरिया में लगभग ६८० पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं। इनमें करीब ४५० मासिक पत्रिकायें हैं तथा शेष साप्ताहिक अथवा त्रैमासिक हैं।

इन सभी पत्र-पत्रिकाओं की प्रसार संख्या, कोरिया मैगेजिन एसोसियेशन के एक सर्वेक्षण के अनुसार, लगभग २० लाख होने का अनुमान है।

विषयानुसार इन पत्र-पत्रिकाओं की संख्या इस प्रकार है——२४ सामान्य पत्रिकायें, १४ साहित्यिक पत्रिकायें, १२ बाल-प्रकाशन, ४९ धार्मिक पत्र-पत्रिकायें। शेष विभिन्न स्कूलों की पत्रिकायें और शैक्षणिक समीक्षायें, आदि हैं।

कोरिया की सबसे पहली पत्रिका, जिसका नाम "मासिक बुलेटिन" था, का प्रकाशन युवा बुद्धिजीवियों की संस्था "इन्डिपेन्डेंस सोसायटी" द्वारा १८९९ के दिसंबर में शुरू किया गया था। इस पत्रिका का उद्देश्य सरकार और जनता के बीच निकट का सम्पर्क बनाये रखना था।

कोरिया लायब्रेरी एसोसियेशन द्वारा प्रतिवर्ष कोरिया से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की एक प्रदर्शनी आयोजित की जाती है। हाल की एक ऐसी ही प्रदर्शनी में पिछले दस वर्षों में प्रकाशित ३१२ पत्र-पत्रिकाओं के शुरू के संस्करण दर्शकों के लिये प्रस्तुत किये गये थे।

संस्कृति और कला

कोरिया वासियों ने एक अपनी संस्कृति का विकास किया, लेकिन कोरिया की कला और साहित्य तथा लोगों की प्रकृतिगत विशेषताओं के संबंध में कुछ निष्कर्ष निकालना आसान नहीं है।

एक ओर तो ऐसा लगता है कि कोरिया के लोगों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण रचनात्मक और आशावादी है तथा कठिनाइयों को हंसते-हंसते झेलने की उनमें शक्ति और क्षमता है तथा जीवन में आने वाली दुःख की घड़ियों को भी वे इस प्रकार देखते हैं, मानो, इस संसार में जन्म लेने वाले सभी व्यक्तियों के लिये यह स्वाभाविक है।

पर, दूसरी ओर, कुछ इस प्रकार के भी साहित्य हैं, जिनके अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि कोरिया वासी घोर निराशावादी हैं और उनका जीवन दुःख और विषाद से अंधकारमय बना हुआ है।

निसंदेह कोरिया की भौगोलिक-राजनीतिक स्थिति और समय-समय पर होने वाले छोटे बड़े संघर्षों का लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा है और यही कारण है कि उनमें जीवन के प्रति विपरीत दृष्टिकोणों का निर्माण हुआ।

फिर भी, हम देखते हैं कि हर परिस्थिति में, कोरिया के लोगों ने प्रकृति से प्रेम किया और जीवन के उत्कृष्ट पक्ष को ही स्वीकार किया। उनमें विविधताओं के लिये दृष्टि है, संगीत माधुर्य का रसपान करने की शक्ति है तथा अनुभूतियों के लिये विशाल हृदय है। इसके साथ ही अपनी ग्राह्य शक्ति के बल पर उन्होंने कला के सभी क्षेत्रों में अपना कमाल दिखाया है और देश की अनेक अमर कलाकृतियों का उन्हें श्रेय प्राप्त है।

पद्य

प्राग्-ऐतिहासिक एवं प्रारंभिक ऐतिहासिक काल की केवल तीन काव्य रचनाओं का पता चला है, जिनमें निजी अथवा जाति की क्षति के लिये आंसू बहाये गये हैं।

पांचवीं शताब्दी के आस पास सिल्ला वंश के शासन काल में ह्यांगा की रचना प्रारंभ हुई। यह कोरियाई साहित्य की शुरूआत मानी जा सकती है। ह्यांगा एक लघु गीत को कहते हैं, जो चार, आठ, या दस अक्षरों के छंदों में लिखे जाते हैं। इसमें कवि की तीव्र भावनाओं की तथा जीवन दर्शन

◄ सउल के राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में कलाकृतियों की वार्षिक प्रदर्शनी को देखते हुए कलाप्रेमी

की अभिव्यक्ति होती है। इन गीतों की रचना किन परिस्थितियों में हुई, उनका भी वर्णन आमतौर पर संक्षेप में गीतों में ही कर दिया जाता था, अथवा, बाद के संग्रहकर्त्ताओं ने उन्हें मौखिक अथवा लिखित रूप में प्रस्तुत किया। ह्यांग गीतों के रचनाकार प्राय: मठवासी, सैनिक शिक्षा के लिये जाने वाले होनहार युवक और उच्चाधिकारी जैसे समाज के बुद्धिजीवी अथवा अन्य भद्र पुरुष हुआ करते थे। प्रारंभिक गीत, विषय एवं अभिव्यक्ति की दृष्टि से छिछले प्रतीत होते हैं, लेकिन, बाद की रचनाओं में हमें चिन्तन की गहराई, और सौंदर्य भी मिलता है। ह्यांगा का अध्ययन आज न केवल इसके ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से, बल्कि, विशुद्ध साहित्यिक दृष्टि से भी किया जाता है। दुर्भाग्य से इसकी केवल २५ रचनायें ही आज तक उपलब्ध हो सकी हैं।

कोरियो वंश (९१८–१३९२) के शासन काल में ह्यांगा का स्थान सोक्यो ने ले लिया, जिसका अर्थ लोकगीत होता है। सोक्यो के छन्द अधिक मुक्त होते थे और इनमें भावनाओं की अभिव्यक्ति भी अधिक स्पष्ट होती थी। ज्योंग-अप सा, जिसमें एक पत्नी चन्द्रमा से अपने पति के वापस लौटने के दुर्गम मार्ग को प्रकाशित करने की विनती करती है, उत्कट एवं निर्दोष प्रेम का अमर गीत माना जाता है।

कोरियो वंश के शासन काल में साहित्य के क्षेत्र में सबसे उल्लेखनीय प्रगति इस वंश के अंतिम दिनों में हुई, जब "सिजो" नामक पद्य रचना का प्रादुर्भाव हुआ। पद्य की कुछ औपचारिकताओं एवं आकार की मर्यादा के कारण इसे कोरिया का "सोनेट" भी कहा जाता है। सिजो तीन तीन पंक्तियों का होता है और हर पंक्ति में १५ अक्षर होते हैं। यह विचारों, भावनाओं, और हास्य-व्यंग्य की अभिव्यक्ति के लिये एक सशक्त माध्यम के रूप में पढ़े लिखे स्त्री-पुरुषों में काफी प्रचलित हुआ।

सिजो, यी वंश के शासन काल (१३९२–१९१०) में साहित्य का सबसे लोकप्रिय स्वरूप बना रहा। इस बीच दो बड़े राजनीतिक उथल पुथल हुये, जिनसे कवियों को बड़ी प्रेरणा मिली और निष्ठा, विश्वास एवं चरित्र आदि विषयों पर सिजो की अनेक उत्कृष्ट रचनायें हुई। बाद की रचनाओं में सरल, शांति पूर्ण और सुखमय ग्राम्य जीवन का चित्र मिलता है।

कन्फ्यूशी धर्मावलम्बी कवियों ने सिजो के छन्दों में अपने जीवन दर्शन और भावनाओं को व्यक्त किया।

यी वंश के शासन काल में वर्णनात्मक पद्य रचना की भी प्रथा चल पड़ी। इस पद्य रचना को कासा कहते हैं तथा इसका छन्द विन्यास अपेक्षा-

कृत अधिक मुक्त होने के कारण इसमें हर प्रकार की रचनायें संभव थी। राजनीतिक जीवन के माया जाल से मुक्ति, दरवार की गतिविधियों पर चिन्ता तथा षडयंत्रों से घिरे दरवार के जीवन के विपरीत सरल ग्राम्य जीवन का आनन्द, आदि विषयों पर पद्य लिखे गये। कुछ कासा रचनायें वास्तव में पद्य में लिखी लघु कथायें अथवा यात्रा विवरण हैं। कासा पद्यों के आकार की मानो कोई सीमा नहीं थी। ये सौ, दो सौ से लेकर हजार-हजार पंक्तियों के हो सकते थे। जुंग चुल की सा मी-इन गोक और सोक सा मी-इन गोक कासा साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचनायें मानी जाती हैं।

यी वंश के शासन काल में पद्यों की रचना करने वाले अधिकांश कवि समाज के उच्च वर्ग के हुआ करते थे। न्याय और नीति, इनके प्रिय विषय होते थे। कविताओं में राजा के प्रति वफादारी, माता पिता के प्रति दया, मित्रों में परस्पर विश्वास तथा अपने सभी बन्धुओं के कल्याण की कामना आदि कन्फ्युशी धर्म के आदर्शों की महत्ता निरूपित की जाती थी। इसके विपरीत कवियत्रियों ने अपनी रचनाओं में नारी समाज के दुःख दर्द और उसकी अभिलाषाओं को चित्रित किया।

गद्य

कोरिया की सबसे प्राचीन पौराणिक कथा तंगुन की है जिसने ईसा के २३३३ वर्ष पूर्व कोरिया में आदिम जातियों के प्रथम देश की रचना की। कोरियो के इल्यन नामक १३ वीं सदी के इतिहासकार ने अपनी पुस्तक संकुक-यूसा में इस पौराणिक कथा की तथा आदिमजाति राष्ट्रों और तीन राजाओं के शासन काल के संबंध में अन्य पौराणिक कथाओं का उल्लेख किया है। विभिन्न आदिम जातियों की कथाओं की भांति ही कोरिया की पौराणिक कथाओं में भी आदिम जातियों के जन्मदाताओं और राष्ट्रीय नेताओं के वीरतापूर्ण कार्यों, ज्ञान और उदारता तथा राष्ट्रीय महत्व की चमत्कारपूर्ण घटनाओं का वर्णन मिलता है। इन कथाओं में आदिम जातियों के पूर्वजों एवं नेताओं को देवताओं के रूप में भी चित्रित किया गया है।

कोरियो वंश के शासन काल में साहित्यकार अपने पीछे जो गद्य संग्रह छोड़ गये, उनमें दार्शनिक निबंध, पौराणिक कथायें एवं उपाख्यायें, विश्व की घटनाओं का चित्रण, तत्कालीन जीवन का चित्रण तथा अलंकारिक अर्थों वाली लघु कथायें शामिल हैं। बो-हन जिप और पा-हन जिप में हमें

तत्कालीन जीवन का स्पष्ट चित्र मिलता है।

यी वंश के चौथे राजा से जोंग ने १४४६ में ध्वनि पर आधारित वर्णमाला हंगुल को प्रतिष्ठित किया। पहली बार लोगों को ध्वनि के अनुरूप लिखी जाने वाली वर्णमाला में अपनी भाषा मिली। लेकिन, लिखावट की चीनी प्रणाली पिछले १५०० वर्षों से भी अधिक समय से प्रचलित थी और यी वंश के शासन काल की शुरूआत तक साहित्यकारों ने चीनी को ही अपनाये रखा। किम सी-सुप के लघु उपन्यासों का एक संग्रह कुम-ओ शिव्हा, चीनी उपन्यासों की परम्परा पर आधारित और चीनी चित्रलिपि में है।

हांग किल डोंग जन, हंगुल भाषा में, हो क्यून (१५६९–१६१८) का अपने ढंग का प्रथम उपन्यास है। इसमें एक सामंत के पुत्र का समाज में व्याप्त पाखंड, अन्याय और भ्रष्टाचार के विरुद्ध विद्रोह की कहानी है। कथानक में नायक हंग किल डंग की तुलना रोबिन हुड से की जा सकती है, जो अमीरों को लूटने और गरीबों की सहायता करने में विश्वास करता था।

चुंग ह्यांग जन (१८वीं शताब्दी) अपने ढंग का एक अद्वितीय उपन्यास है। इसमें समाज की एक निम्न श्रेणी की युवती की कहानी है, जिसे तरह तरह से परेशान किया जाता है, पर वह हिम्मत के साथ अपने सम्मान की रक्षा करती है तथा अन्ततोगत्वा समाज में ऊंचा स्थान प्राप्त करती है, उसे धन दौलत मिलता है और उसका प्रेमी भी मिल जाता है, जो समाज का एक सम्पन्न व्यक्ति है। यद्यपि कथानक का विषय सिर्फ सत्य की विजय है तथा इसकी रचना में कई खामियां भी हैं, फिर भी कहानी हास्य, व्यंग, श्रृंगार और करुणा से भरपूर है, जो इस उपन्यास को अमरता प्रदान करते हैं।

इस प्रकार की और भी अनेक कहानियां लिखी गई, जैसे सिम-चोंग जन, जिसमें एक धर्मपरायण पुत्री की कहानी है, हंगबू नलबू जन, जो दो भले बुरे भाइयों की कहानी है, जंकी जन, जिसमें सुन्दर पंखों वाले एक पक्षी की कहानी है, जो अपनी संगिनी की नेक सलाह नहीं मानता। इन सभी कथाओं में कोरिया के लोगों की उदारता, कल्पना शक्ति, हास्य व्यंग आदि चरित्रगत विशेषतायें परिलक्षित होती हैं।

इससे बिल्कुल भिन्न प्रकार के उपन्यास वे हैं, जो चीनी संकेत लिपी में लिखे गये हैं। ये रचनायें मुख्यतः समाज के उच्च वर्ग के लोगों की हैं। इस श्रेणी की एक प्रतिनिधि रचना किम मन-जंग (१६३७–१६९२)

की कु अन मंग हैं। इस उपन्यास में भौतिक सम्पन्नता के विलुप्त होने की कहानी है। यह पुस्तक आनन्द, विलास और प्रेमालाप के दृश्यों के अलंकारिक वर्णनों से बोझिल है। किम मन जंग का एक दूसरा उपन्यास ससी नम जंग-गी है, जिसमें बहुविवाह के दुष्परिणामों का चित्रण किया गया है। इसका उद्देश्य राजा को धिक्कारना था, जिसने एक दुष्ट-प्रकृति वाली रखेल के साथ अपने प्रेम सम्बंध के कारण, अपनी गुणवती रानी का परित्याग किया था।

पक-जी-वन की लघु कथाओं का उद्देश्य समाज के पाखडियों और दुष्टों की भर्त्सना करना था। हो सेंग जन, अथवा हो नामक एक विद्वान की कहानी में यह दिखाया गया है कि एक गरीब विद्वान किस प्रकार अपनी बुद्धि से अतुल सम्पत्ति अर्जित करता है और डाकुओं की सहायता से मरुभूमि में एक सपनों की दुनिया की सृष्टि करता है। पक जी-वन की दूसरी रचना यंग वन जन है, जिसमें सामंतों के भ्रष्ट आचरणों तथा लचर पर तीखे व्यंग किये गये हैं। इसमें यंग वन अथवा शासक वर्ग द्वारा सम्पत्ति का अधिकार बेच डालने की कहानी है। हो जिल नामक एक दूसरी पुस्तक में समाज के दुष्ट आचरण वाले और पाखंडी व्यक्तियों का पर्दाफाश करते समय, उनकी तुलना उस बाघ से की गई है, जो यह बताता है कि मनुष्य का मांस खा कर, क्यों वह अपना मुंह गन्दा नही करना चाहता। पक जी-वन की कहानियों में एक पतनोन्मुख वंश की तीखी सामाजिक आलोचनायें हैं।

उच्च वर्ग की महिलाओं का गद्य साहित्य इनसे भिन्न है। इसमें गल्प कथायें नहीं हैं। इसमें एक २२ वें राजा जुग-जो की मां हंग की पुस्तक हन जुंग रक है, जिसने दरवार में अपने जीवन का चित्रण किया है। लेखिका ने अपने पति युवराज की अपमान जनक परिस्थितियों में हुई मृत्यु का भी चित्रण किया है।

इन्ह्यू न बांगह्यू जन, एक गुणवती, किन्तु अभागी रानी का जीवन चरित्र है, जो उसकी दासी द्वारा लिखा गया है। लेडी किम की डायरी एक प्रान्तीय नगर के जीवन और यात्रा सम्बंधी एक पत्रिका है।

महिलाओं की पत्रिकाओं में शैली और भावना की जो सूक्ष्मता मिलती है वह पुरुषों की साहित्य रचनाओं में नहीं मिलती। इस दृष्टि से इन पत्रिकाओं का ऐतिहासिक महत्व है और वे साहित्य की सम्पत्ति हैं।

दार्शनिक सिद्धान्तों की व्याख्या करने वाले पुस्तकों की भी कमी नहीं है। उस समय यी यी और यी व्हांग नामक दो प्रसिद्ध कनफ्यूशी विद्वान

हुये। चुंग याक्योंग और यी सु-क्वांग, सिल्हक मत के नेता थे, जिसमें व्यवहारिक ज्ञान को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। उन्होंने अपने सिद्धान्तों पर कई पुस्तकें और निबंधों की रचना की है।

आधुनिक साहित्य

वर्तमान शताब्दी के आरंभ होने के पहले से ही, जब कोरिया ने बाहर वालों के लिये अपना द्वार खोल दिया अथवा खोलने को मजबूर हो गया, देश में पश्चिम का प्रभाव बढ़ने लगा। नई पीढ़ी पाश्चात्य साहित्य की ओर आकृष्ट होने लगी। देश के प्रमुख बुद्धिजीवियों की साहित्यिक मंडलियां बन गई और प्रत्येक ने अपनी अपनी पत्रिका निकालनी शुरू कर दी। साहित्य में देश भक्ति के साथ साथ वर्तमान परिस्थिति पर गंभीर चिन्ता और प्रचलित धार्मिक एवं नैतिक सिद्धान्तों के प्रति विद्रोह की भावना परिलक्षित होने लगी। २०वी शताब्दी के शुरू के प्रमुख उपन्यासकारों में प्रकृतिवादी किम डोंग-इन का नाम उल्लेखनीय है। एक अन्य प्रमुख उपन्यासकार पी क्वांग-सू हुये, जिन्होंने विनम्र, किन्तु, सशक्त भाषा में जागरण का आह्वान किया। ली ह्यो-सक की लघु कथायें, जिनमें मुख्य रूप से गृह-विरह का चित्रण है, आज भी पाठकों के लिये पुरानी नहीं प्रतीत होती। "नई कविता" में भी देशभक्ति की भावना और राष्ट्र के भविष्य के प्रति चिन्ता की अभिव्यक्ति हुई। काव्य में जो शिथिलता आई थी वह दूर होने लगी और पश्चिम के मुक्त छन्दों से काव्य को नई प्रेरणा मिली। नई कविता में विचारों की अभिव्यक्ति और परिस्थितियों का चित्रण अधिक निर्भीकता पूर्वक होने लगा। इस काल के प्रमुख कवियों में, जो अपनी विशिष्ट उपलब्धियों के लिये प्रसिद्ध हुये, ली युक-सा, चो नम-सन और किम सो-वुल के नाम उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक कोरियाई साहित्य, विशेषतः गद्य रचना एवं कथानक के विकास में पश्चिम से अधिक प्रभावित हुआ। पुराने ढंग की और हास्य प्रधान कहानियां आज कल शायद ही लिखी जाती हैं। यद्यपि, आधुनिक उपन्यासों की शैली पश्चिम से प्रभावित हुई है तथा यथार्थवाद भी पश्चिम की ही देन हैं, चरित्र और परिस्थितियां हर हालत में स्थानीय होती हैं। पश्चिम के तत्कालीन गद्य, पद्य अथवा नाटक की अनेक प्रमुख पुस्तकों का अनुवाद कोरियाई भाषा में हुआ और उनका काफी स्वागत हुआ। कोरिया की कुछ पुस्तकों का भी विदेशी भाषाओं में, मुख्यतः अंग्रेजी में अनुवाद हुआ है, परन्तु इस दिशा में और अधिक प्रयास की आवश्यकता प्रतीत होती है।

कोरिया के कुछ साहित्यकारों ने भी अंग्रेजी एवं अन्य यूरोपीय भाषाओं में मौलिक रचनायें की हैं।

चित्रकला

प्राचीन कोरिया की बहुत कम ऐसी चित्र कला कृतियां हैं, जिनका अस्तित्व आज भी कायम हो। निसंदेह वह वस्तुओं की नश्वरता के कारण ही विलुप्त हो गई। कोगुर्यो में कब्र की दीवारों पर बने चित्र, सबसे प्राचीन कलाकृतियां मानी जाती है। ये संभवत: चौथी से सातवीं शताब्दी तक की हैं। कोगुर्यो में खुदाई के दौरान तीन पत्थर की कब्रें मिली हैं, जिन पर की गई चित्रकारी, चित्रकला के उत्कृष्ट नमूने हैं। कब्रों पर पशुदेव के चित्र मिलते हैं, जो मृतकों के अभिभावक माने जाते हैं। दीवारों के प्लास्टर पर की गई चित्रकारी के उपलब्ध नमूने नेशनल म्यूजियम ऑफ फाइन आर्ट्स में सुरक्षित हैं। ये चित्र कोगुर्यो के लोगों के अदम्य उत्साह एवं उनकी आकांक्षाओं के साक्षी हैं। चित्रकारी गहरी है और कलाकार की ऊंची कल्पनाशक्ति को व्यक्त करने वाली है। चित्रित पशु जीते-जागते प्रतीत होते हैं।

पैंकचे की चित्रकला कृतियों के बहुत कम अवशेष मिलते हैं। एक कब्र की दीवार पर की गई चित्रकारी में कोगुर्यो काल की शैली का प्रभाव परिलक्षित होता है, किन्तु, यह माना जाता है कि पैकचे में चित्रकला को उच्चतम पूर्णता प्राप्त हुई।

दुर्भाग्यवश सिल्ला की सभी चित्रकला कृतियां नष्ट हो गई हैं, किन्तु कुछ चित्र ऐसे भी थे, जिनके बारे में किवदंतियां हैं, कि सोलगु कैनवास पर चित्रित अन्नानास के वृक्षों पर पक्षी बैठने का प्रयास करते थे।

कोरियो वंशकाल की चित्रकारी की परम्परा भी प्राय: लुप्त हो चुकी है। कोरियो सरकार ने कला के विकास के लिये एक विशेष कार्यालय की स्थापना की थी। कोगुर्यो परम्परा की चित्रकारी के कुछ नमूने गंगमीन राजा की कब्र की दीवारों पर मिलते हैं। इनमें राजा द्वारा किये जाने वाले शिकार के भी कुछ चित्र हैं। नीले कागज पर चांदी और सोने के रंग में धर्म ग्रंथों पर बनाये गये चित्र के दो उत्कृष्ट नमूने भी प्राप्त हुये हैं, जो कोरियो परम्परा के हैं। कोरियो चित्रकारी में शुंग और बौद्ध पृष्ठभूमि के साथ चीन का प्रभाव परिलक्षित होता है।

यी वंशकाल की चित्रकारी के अवशेष बड़ी मात्रा में प्राप्त हैं। ये कई प्रकार के हैं। यी वंशकाल में चित्रकारी के भिन्न भिन्न स्तर थे। समाज के

ऊंचे वर्ग के लोगों में "इन्डियन इंक पेंटिंग" अधिक प्रचलित थी। पेशेवर चित्रकार व्यक्ति के चित्र बनाते थे अथवा सजावट के लिये चित्रकारी करते थे और यह उनकी आय का स्रोत होता था। नवसिखुए कलाकार जन्र शैली की चित्रकारी करते थे और प्राकृतिक दृश्यों के चित्र बनाते थे।

इंडिया इंक पेंटिंग के कलाकारों के प्रिय विषय गुलदावदी और शताबरी फूलों के पौधे तथा बेर और बांस के वृक्ष होते थे। बहुत से प्राकृतिक दृश्यों के चित्रों में कन्फ्यूशी और ताओ के प्रभाव दीखते हैं, खासतौर से जहां काल्पनिक जगत के दृश्य प्रस्तुत किये गये हैं। जीवन्त चित्रों में वातावरण वैचित्र्य मिलता है, लेकिन, उसकी तकनीक सूक्ष्म और अलंकारिक है।

आज कल के सर्वाधिक आकर्षक चित्र जन्र पेंटिंग के ही हैं, जिनमें कोरिया के लोगों की भावनाओं की अभिव्यक्ति मिलती है। ये चित्र सामान्य जनता के दैनिक जीवन के हैं और इनमें प्रचलित परम्पराओं और लोगों के व्यवहार का स्पष्ट चित्रण मिलता है। जन्र पेंटिंग अधिक व्यवहारिक थी और यह मदिरालयों, दंगलों, फसल की कटनी, बारात, झरनों के किनारे कपड़ा धोती हुई सुन्दर महिलायें, आदि दृश्यों की चित्रकारी में नैतिकता संबंधी कनफ्यूशी धर्म के बन्धनों को नहीं मानती थी। शिन यून-बक की जन्र शैली की चित्रकारी के अनेक संग्रह मिलते हैं। किम हूंगडो के चित्रों की मुख्य विशेषता उनकी सूक्ष्मता है।

कोरिया की पुरानी चित्रकारी कागज अथवा रेशम के कपड़े पर मिलती हैं। चित्रकारी के लिये इंडियन इंक और वाटर कलर काम में लाये जाते थे। सूती कपड़े पर बनाये गये तैलचित्र के कुछ नमूने भी मिलते हैं, परन्तु, वे अपेक्षाकृत नये हैं। उल्लेखनीय अपवाद बौद्ध धर्मग्रंथों में प्रस्तुत चित्र हैं, जो चांदी और सोने के रंग में हैं।

चित्रकारी पर पश्चिम का प्रभाव १९ वीं शताब्दी के अंत में आना शुरू हुआ। कोरिया की आधुनिक चित्रकारी में यथार्थवादी और अपनी छाप छोड़ने वाली चित्र शैलियों का प्रभाव अधिक परिलक्षित होता है। लेकिन, न तो पुरानी रिनैसां और बैरक शैली और न समकालीन क्यूबिज्म अथवा फउविज्म प्रणाली प्रचलित हुई। कला के बहुत से छात्रों ने पश्चिमी शैली की चित्रकारी में श्रेष्ठता प्राप्त की है और कुछ को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता भी मिली है।

फिर भी, प्राच्य शैली की चित्रकारी उतना ही लोकप्रिय है, इस शैली के आधुनिक चित्रकार न केवल अपनी सफलता के लिये प्रयास करते हैं,

बल्कि, इस परम्परा को आगे बढ़ाने के लिये भी प्रयत्नशील रहते हैं तथा हर चित्रकार इसमें अपना योगदान करता है। कोरिया के इन चित्रकारों का, प्राच्यशैली के चित्रों की विदेशों में लोकप्रियता बढ़ाने में काफी बड़ा योगदान रहा है।

सुलेख कला

पढ़े लिखे लोगों में सुलेख कला काफी लोकप्रिय थी। ब्रश और इंडियन इंक के माध्यम से सुन्दर से सुन्दर लिखावट प्रस्तुत करने का लोगों को बड़ा शौक था। चीनी सुलेखकला की वांग शी-ची और ऊयांग सन नाम की दो शैलियां मुख्य थी, जिन्हें कोरिया में भी लोगों ने अपनाया। फिर भी कोरिया के कलाकारों ने इन शैलियों में विविधता लायी। हन स्योक-वंग नामक कोरिया के प्रसिद्ध सुलेख कलाकार ने एक स्वतंत्र शैली का विकास किया। यी वंशकाल के अंतिम वर्षों में किम जंग-ही सबसे प्रसिद्ध सुलेख कलाकार हुये, जिनकी कृतियां न केवल रूप सौन्दर्य के लिये, बल्कि, कलाकार की आत्मा को प्रगट करने के लिये प्रतिष्ठित हुईं।

सुलेख कला के लिये पढ़ी-लिखी महिलाओं को भी प्रोत्साहित किया गया। बहुत सी महिलायें चित्रकारी के साथ-साथ सुलेख कला में भी निपुण थीं। इनमें सिन सैमडंग का नाम उल्लेखनीय है। महिलाओं ने कोरिया की अपनी वर्णमाला हंगुल की सुलेख शैलियों के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान किया।

मूर्तिकला

कला के क्षेत्र में कोरिया के लोगों की प्रतिभा बौद्ध धर्म की प्रेरणा प्राप्त कर प्रस्फुटित हुई। उन दिनों पेशेवर कलाकार की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। कला-कृतियों की रचना आवश्यकतानुसार होती थी। बौद्ध धर्म ने कोरिया में कला के विकास का यह अवसर प्रदान किया। तीनों राज्यों में विभिन्न रूपों में चीनी शैली की विशेषताओं को व्यक्त करते हुये बुद्ध के विभिन्न अवतारों की मूर्तियों की रचना हुई।

संयुक्त सिल्ला वंशकाल में मूर्ति कला शिखर पर पहुंची हुई थी। इस काल में, तीनों राज्यों में विकसित कला की अच्छाइयों को अपनाया गया। सिल्ला की मूर्तिकला, चीनी मूर्तिकला से बिल्कुल भिन्न है। क्योंगजू के निकट ७५२ ई० में सोक्कुलम पर्वत शिखर पर बनी ग्रेनाइट की गुफायें सिल्ला की कला के उत्कृष्टतम नमूने हैं। बुद्ध की मूर्तियों में जो लावण्य है

तथा उनमें जो दया और करूणा के भाव प्रकट होते हैं, वे केवल शिल्प की वस्तु नही मानी जा सकतीं। उनमें वस्तुतः कलाकार की निष्ठा और उसके शुद्ध हृदय की झलक मिलती है। सोक्कुलम में बुद्ध की सबसे बड़ी मूर्ति, (बैठे हुये शाक्यमुनि) ३.२६ मीटर अर्थात् लगभग ११ फुट ऊंची है। स्मारक और कब्रों के पास मृतकों की रक्षा करने वाले राशिमंडलीय पशुओं की जो मूर्तियां बनी हैं, वे भी मूर्तिकला की प्रसिद्ध कृतियां हैं। म्यूलो राजा की कब्र एक विशाल कछुए की मूर्ति पर अवस्थित है, जिसे देखने से ऐसा लगता है कि कब्र चल रहा है। कांसे के घंटों पर बने चित्र अपनी सूक्ष्मता और असाधारण भव्यता के लिय प्रसिद्ध हैं। कोरिया में सैकड़ों पत्थर के पैगोडे हैं, जिन पर बड़ी ही सूक्ष्म नक्काशी है।

यी वंशकाल में, बौद्ध धर्म की प्रतिष्ठा समाप्त होने लगी और उसके साथ ही मूर्ति कला की भी अवनति होने लगी। इस काल में बुद्ध की बहुत कम मूर्तियां बनीं। मूर्तिकला कृतियों का अस्तित्व केवल स्तम्भों और मृत व्यक्तियों के स्मारकों एवं अन्य कुछ वस्तुओं तक ही सीमित रह गया।

मूर्तिकला का पुनरुद्धार वर्तमान सदी में पाश्चात्य कला के आगमन से हुआ। कोरिया की मूर्तिकला कृतियों में जीवन और संगीत है, चाहे वे धातु के हों अथवा पत्थर के। इससे यह सिद्ध होता है कि कोरिया की मूर्ति कला मरी नहीं थी, बल्कि, नयी प्रेरणा की प्रतीक्षा कर रही थी। मूर्ति कलाकृतियां मनुष्य और पशुओं की आकृतियों तक ही सीमित नही है, बल्कि, भावों और मनुष्य की मानसिक स्थितियों को भी व्यक्त करने वाली हैं। सार्वजनिक उद्यानों अथवा स्मारक के लिये उपयुक्त अन्य स्थानों पर नेताओं की मूर्तियां खड़ी करने की प्रथा कोरिया में भी है।

वास्तुकला

मंदिरों और सरकारी इमारतों के निर्माण में लिंटेल शैली और मौलिक चीनी डिजाइनों को ही अपनाया गया। इसके अन्तर्गत लकड़ी के खम्भों पर लकड़ी के शहतीर रख कर दरवाजे बनाये जाते थे। दीवार या तो लकड़ी की होती या मिट्टी अथवा चूना गारा के थे। छतें पकाये हुये खपड़ों की बनायी जाती थी। कोरिया में मकानों की छतें दोनों कोणों पर और बड़ेरी के दोनों छोरों पर मुड़ी होती हैं। कुछ गुफायें भी ऐसी है, जो सूक्ष्म चित्रकारी से सजाई गई हैं। यी वंश काल में मकानों में तहखानों और शहतीरों को रंगों से सजाने की एक पद्धति का विकास किया गया था, जिसे डानचुंग कहते हैं। यह कोरिया की अपने ढंग की कला है।

सउल स्थित कोरिया का सबसे ऊंचा ३१ मंजिला समिल भवन

मंदिरों और प्रासादों जैसे प्रमुख भवन काफी विस्तृत क्षेत्र में बनाये जाते थे। बड़े बड़े मकानों में एक ही अहाते के अन्दर कई भवन होते थे। मंदिरों और प्रासादों में एक विशाल कक्ष हुआ करता था। सउल का सीकरेट गार्डन बड़ा ही आकर्षक है। यह दीवारों से कई भागों में विभाजित हैं और मंडपों तथा फूलों से आच्छादित सतहों से सुसज्जित है।

पत्थरों के बने विशाल पैगोडों में उच्चकोटि का रूपांकन और हस्त शिल्प देखने को मिलता है। ये पैगोडे कलाकार की भक्ति भावना भी व्यक्त करते हैं। दाबोतप पैगोडा अनेक कीमती पत्थरों से बना है। शोक्कातप, जिसे शाक्य मुनि का पैगाडा भी कहते हैं, की बनावट सरल, किन्तु, भव्य है। बलकुक स्थित ये दोनों पैगोडे काफी प्रसिद्ध हैं। छोटे-बड़े अन्य सैकड़ों पैगोडे सम्पूर्ण कोरिया में बिखरे मंदिरों का सौंदर्य बढ़ाते हैं।

युद्ध और आकस्मिक अग्निकांडों के कारण लकड़ी की संरचनायें बहुत कम शेष रह गयी हैं। सबसे प्राचीन लकड़ी का भवन मूरयाँग सूजन दक्षिण पूर्व कोरिया स्थित पुसोक्सा मंदिर में है। यह भवन १३ वीं शताब्दी का है। लेकिन, कुछ भवन और भी पुराने हैं। कोरिया में ऐसी प्रथा थी कि जब कोई पुराना भवन नष्ट हो जाता था, पूर्वजों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिये ठीक उसी आकृति का दूसरा भवन वहां पुनः बना दिया जाता था और मूल भवन के निर्माण तथा पुर्ननिर्माण की तिथियां अंकित कर दी जाती थीं।

पत्थर की संरचनायें बहुत कम हैं, फिर भी, वे पूर्ण सुरक्षित हैं। पत्थर की वास्तुकला के उल्लेखनीय नमूने कोगूर्यो की कब्रें हैं, जिनमें पत्थर के बड़े-बड़े कक्ष बने हैं। ऐसी तीन कब्रें खुदाई में मिली हैं। सोक्कुलाम, एक बनावटी गुफा है, जिसकी रचना बहुत ही सुन्दर तथा आकार बड़ा ही भव्य है।

सामान्य लोगों के घरों की बनावट सरल होती है। इन घरों में ग्रीष्म ऋतु के लिये लकड़ी के फर्श वाले बड़े कमरे होते हैं तथा सर्दियों के लिए पत्थर के फर्श वाले कमरे होते हैं।

कोरिया में मकानों के निर्माण पर बहुत खर्च आता है। विस्तृत होने के कारण जगह की भी बचत नहीं हो पाती। इसलिये, सरकारी कार्यालयों के लिये अब पश्चिम की तरह बहुमंजिले भवन बनाये जाते हैं।

हस्तशिल्प

खुदाई में प्राचीन काल के राजाओं की जो कब्रें मिली हैं, उनमें प्राप्त वस्तुओं से पता चलता है कि कोरिया में हस्तशिल्प के विकास का इतिहास काफी पुराना है। स्वर्ण मुकुट, कांसे और कीमती पत्थरों के आभूषण, कौमा के आकार वाले रत्न तथा कांसे और मिट्टी के वर्तन, सिल्ला के शिल्पियों की उत्कृष्ट कला के साक्षी हैं। सिल्ला का स्वर्ण मुकुट रूप सज्जा का एक उत्कृष्ट नमूना है। यह सोने की गोल कड़ियों का बना है और ऊपर की ओर वृक्षाकार है, जिसमें हिरण के सीगों जैसी रत्न जटित शाखायें हैं।

संयुक्त सिल्ला वंश काल में बने सोंगडम रानी का कांसे का विशाल घंटा ११ फुट ऊंचा है तथा इसका व्यास साढ़े सात फुट है। इसका वजन ७५० किलोग्राम है। इस घंटे पर लिखावट और चित्रकारी की हुई है। यह घंटा जब बजता है तो एक अभूतपूर्व हृदय को स्पंदित करने वाली आवाज होती है।

धातु शिल्प के विकास के अलावा सिल्ला में मृतिका-शिल्प का भी अच्छा विकास हुआ। उस काल के मिट्टी के वर्तन तथा खपड़े आज भी मिलते हैं। यद्यपि तीनों राज्यों में पके हुये मिट्टी के वर्तन तथा अन्य वस्तुएं बनाने की कला की प्रगति हुई, संयुक्त सिल्ला काल में ही मृतिका-शिल्प का वास्तविक विकास हुआ। इसी काल में हरे रंग के चमकदार मिट्टी के वर्तन बनने शुरू हुये और काफी प्रचलित हुये।

छतें बनाने के काम आने वाले खपड़ों पर भी हस्तशिल्प के सुन्दर काम के नमूने मिलते हैं। ग्योंगजू में खुदाई में मिले खपड़ों पर राक्षसों, पशुओं और पक्षियों के चित्र बने हैं।

कोरियो वंशकाल की मृतिका-शिल्प की वस्तुयें कलाकारों की उत्कृष्ट कृतियां हैं। अपने रंग, रूप, सुन्दर बनावट और विशिष्ट आकर्षक शैली के कारण कोरिया की प्राचीन कलाकृतियों की विश्व के बाजार में बड़ी कीमत है।

कोरियो की मिट्टी की बनी वस्तुओं को पकाने की कला लुप्त हो गयी। यद्यपि आज कल उसकी अच्छी नकल की गई है, फिर भी रंग रूप की दृष्टि से वे उनके मुकाबले नहीं कर पाते।

कोरियो के कुम्भकारों की मिट्टी के वर्तनों के पकाने की तकनीक और

उन पर चमक डालने की कला यी वंश काल में ही लुप्त हो गई थी, यद्यपि बाद की मृतिका शिल्प की वस्तुओं का स्तर किसी प्रकार कम नहीं था। यी वंशकाल में बने मिट्टी के वर्तन प्राय: सफेद हुआ करते थे और कोरिया के राष्ट्रीय चरित्र के अनुरूप ही उनका सौंदर्य सरल और निश्छल हुआ करता था। वे काफी टिकाऊ भी होते थे।

कोरिया का हस्तशिल्प बांस और लकड़ी के कामों में भी प्रकट हुआ है। बक्से और फर्नीचर के अन्य सामान बड़े ही साफ सुथरे और कोरिया के पुराने घरानों में इस्तेमाल के उपयुक्त होते थे। बांस के टेबुल, टोकरियां तथा फर्नीचर के अन्य सामान बनाये जाते थे। सम्पन्न लोगों के लिये चपड़े की वार्निस से पालिश किये हुये आरामदेह फर्नीचर बनते थे। इनके रूप-रंग और चमक-दमक से कोरिया के लोगों के सौन्दर्य प्रेम का पता चलता है।

कोरिया की हस्त शिल्प की वस्तुयें, जैसे लाह के सामान, लकड़ी और बांस तथा कसीदाकारी के सामान, मुख्य रूप से निर्यात किये जाते हैं। फोल्डिग पर्दे, चित्रकारी और कसीदाकारी के सामान भी फर्नीचर के अन्तर्गत आते हैं।

धातु के टाइप और लकड़ी के ब्लॉक

संसार में सबसे पहले कोरिया में धातु के टाइप का आविष्कार किया गया। हाल में ही धातु के टाइप से मुद्रित कोरिया की एक पुस्तक फ्रांस में मिली है, जिसे विशेषज्ञों ने धातु मुद्रित सबसे पुरानी पुस्तक निरुपित की है। यह पुस्तक कोरियो वंश काल की १३७७ में प्रकाशित जिक सी सिम य्योंग नामक कोरिया के एक बौद्ध ग्रंथ की प्रतिलिपि है। इस बात का भी [illegible] मिलता है कि संगजुंग येमन नाम की नैतिक आचरण की एक निदेश पुस्तिका १२३२ में धातु के टाइप से ही मुद्रित हुई थी, लेकिन, उसका अभी तक पता नहीं चला है।

मुद्रण के लिये लकड़ी के ब्लॉक पर खोद कर बौद्ध ग्रंथों का अंकित किया जाना कोरियो संस्कृति की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह उस समय शुरू हुआ जब मंगोलों ने कोरियों पर हमला किया और इसके पीछे कल्पना थी बुद्ध का संरक्षण प्राप्त करना। सरकार की ओर से ही यह कार्य शुरू कराया गया। आक्रमणकारियों ने बार बार बौद्ध धर्म ग्रंथों को जला दिया अथवा नष्ट कर दिया, किन्तु, ८१,२५८ लकड़ी के ब्लॉकों पर अंकित बुद्ध के उपदेश सुरक्षित रहे। इन्हें कोरिया का त्रिपिटक कहा जाता है।

लकड़ी के इन ब्लॉकों पर दोनों ओर अक्षर खुदे हैं। आजकल ये दक्षिण पूर्वी कोरिया में स्थित हेन मंदिर में सुरक्षित हैं।

संगीत और नृत्य

कोरिया के लोगों की संगीत और नृत्य में हमेशा रूचि रही है। कुछ अत्यन्त उत्कृष्ट वाद्य यंत्रों का आविष्कार भी किया गया तथा मौलिक और सजीव नृत्यों की रचना हुई।

कोरियाई संगीत को अ-अक (धार्मिक अवसरों के लिये), तंग-अक और ह्यांग-अक (क्रमश: चीनी और स्थानीय मूल के दरबार संगीत) तथा विभिन्न प्रकार के मिलीटरी, चैम्बर एवं वाद्य संगीत, बौद्ध मंत्रोच्चार, लोक संगीत तथा कृषकों के सामूहिक संगीत में विभाजित किया गया है।

दरबार संगीत मन्द और गंभीर होता है तथा इसमें बीच-बीच में लम्बी और अलंकृत पंक्तियों के मधुर स्वर होते हैं। दरबार संगीत आरकेस्ट्रा की सहायता से प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें सभी प्रकार के वाद्य यंत्र होते हैं।

कोरिया का एक वाद्य यंत्र काया-गम होता है, जो बारह तारों वाला एक जितार है, जिसके द्वारा सरल, सजीव, गंभीर और मातमी सभी प्रकार के धुन निकाले जा सकते हैं। एक कुशल वादक इस यंत्र के सहारे अपना कमाल दिखा सकता है। कोरिया की अनेक लड़कियों ने उसी प्रकार काया-गम बजाना सीखा जिस प्रकार पश्चिम की लड़कियां पियानो बजाना सीखती हैं। सात तारों वाला क्योमन-गो अधिक प्रचलित नहीं है, किन्तु, इसकी ध्वनि बहुत ही मधुर और रहस्यमय होती है। काया-गम अथवा क्योमन-गो, किसी की भी संगति में गाया जा सकता है, लेकिन, आम तौर पर मनुष्य के उच्चार का मेल ढोल-नगाड़े के साथ ही बैठता है।

दूसरा प्रचलित वाद्य यंत्र चांगो है। यह एक प्रकार का ड्रम है, जिसमें दोनों तरफ से अलग-अलग प्रकार की ध्वनि निकलती हैं। बांस की तीन प्रकार की बांसुरी प्रचलित है—छोटी, बड़ी और मध्यम, जिनका उपयोग हर औपचारिक संगीत में अनिवार्य होता है। चैम्बर और आर्केस्ट्रा संगीत में पीट कर बजाने वाले तरह तरह के वाद्य यंत्रों का इस्तेमाल होता है।

लोक संगीत आम तौर पर सजीव होता है और इसमें पर्याप्त गति होती है। इसमें तीन तीन मिले-जुले अनियंत्रित तालों की भरमार होती है। लोक संगीत में मुख्यत: चांगो, शहनाई, घंटी, और तुरही जैसे वाद्य यंत्रों की सहायता ली जाती है।

लोक संगीत में काम आने वाले यंत्रों का बजाना बहुत आसान है। बहुत से लोगों ने चांगो और बांसुरी आदि बजाना बिना विधिवत प्रशिक्षण के ही सीखा। बड़े घरानों की कुमरियों ने काया-गम बजाना शौक से सीखा। उच्च वर्ग के युवक अपनी रुचि के अनुसार जितार बजाते हैं।

परम्परागत संगीत को कोरिया के गीत रचनाकारों ने एक हद तक पाश्चात्य संगीत के साथ मिला दिया, किन्तु, आजकल क्लासिकल और हल्के, दोनों प्र कार के पाश्चात्य संगीत ही अधिक प्रचलित हैं। कोरिया के बीस या इससे कुछ अधिक ही युवा संगीतज्ञों ने अन्तर्राष्ट्रीय गायकों के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की है।

सउल में आजकल दो बड़े आर्केस्ट्रा हैं, जो सभी तरह से पूर्ण है। कई ऑपेरा कम्पनियां तथा अनेक स्कूल आर्केस्ट्रा एवं संगीत समूह हैं। कोरिया के सोलो वादकों एवं गायकों ने दुनिया के लगभग सभी भागों में अपनी कला का प्रदर्शन किया है। इसी प्रकार दुनिया के सभी हिस्सों के संगीतज्ञ कोरिया में अपनी कला का प्रदर्शन करने आते हैं। इन संगीत गोष्ठियों में भारी भीड़ होती है।

कोरिया में संगीत के साथ साथ नृत्य का भी विकास हुआ। प्राचीन काल के आदिम जाति फसल काटने की खुशी में नाचते थे। हर्ष और आनन्द के अवसरों पर एकल और समूह नृत्यों के अनेक उदाहरण मिलते हैं। ये नृत्य बिना किसी औपचारिक शिक्षण-प्रशिक्षण के होते थे और इनमें अंग-प्रत्यंगों का स्वाभाविक प्रदर्शन होता था। लेकिन, जैसे जैसे सभ्यता का विकास हुआ औपचारिक और नियोजित नृत्यों का भी विकास हुआ।

दरबारी नृत्यों की विशिष्ट शैलियां होती थी और ये औपचारिक होते थे। नर्तक-नर्तकियां आम तौर पर पेशेवर होती थी और उनके विशेष प्रकार के परिधान होते थे। वे राजा द्वारा आयोजित समारोहों में मनोरंजन के लिये अथवा किसी स्मारक के समर्पण समारोह जैसे विशिष्ट अवसरों पर अपने नृत्य का प्रदर्शन करते थे।

ये नृत्य सजीव मनोरंजन अथवा उदात्त भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिये भी होते थे। मनोरंजन के लिये नाचने वाली गीसाएंग लड़कियों के नृत्यों में गति होती थी और उनके कला-कौशल का भी परिचय मिलता था। उनके अंग-प्रत्यंगों का लोच इस प्रकार होता था कि नारी-आकर्षण स्थलों का पूरा-पूरा प्रदर्शन हो सके।

मठवासिनियों (नन) के नृत्य धर्म के प्रति निष्ठा एवं भक्तिभाव के

प्रदर्शन के लिये होते थे। बाद में इसमें पेशेवर नर्तकियां भी शामिल होने लगीं। तलवार-नृत्य युद्ध कौशल और पौरूष प्रदर्शन के लिये युवा सैनिक करते थे।

ड्रम-नृत्य और पंखा-नृत्य व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों होते हैं। इसमें नर्तक ड्रम बजाने, पंखा घुमाने और प्रदर्शन में अपने कौशल का परिचय देते हैं।

ग्रामीण प्राय: फसल निकालने, बड़े पैमाने पर मछली मारे जाने अथवा सूखा या बाढ़ से राहत मिलने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के लिये बड़ा वृत बनाकर नाचते थे। यह कल्पना पश्चिम के लोकनृत्यों से मिलती-जुलती है, किन्तु कोरियाई नृत्यों के स्वरूप बहुत भिन्न हैं।

कोरिया के हर नृत्य का अपना अलग वातावरण और आकर्षण होता है तथा अच्छे प्रदर्शन के लिये पर्याप्त निपुणता की आवश्यकता होती है। कोरिया में अनेक कलाकार हैं, जो आधुनिक अथवा क्लासिक नृत्य-नाट्य का प्रदर्शन करते हैं। लेकिन, परम्परागत नृत्य का प्रदर्शन करने वालों की भी कोरिया में कमी नहीं है। क्लासिक नृत्यों का प्रशिक्षण देने वाली संस्थायें भी हैं। कोरिया के पारम्परिक नृत्य, विदेशों में, पारम्परिक संगीत से अधिक लोकप्रिय हैं। कोरिया के लोकनृत्य का प्रदर्शन करने वाले कलाकारों को विदेशों में अच्छी सफलता मिली है।

नाटक और चल चित्र

कोरिया के लोग, अन्य किसी भी देश की तुलना में कथा और नाटक का अधिक आनन्द लेते हैं। पनसोरी महाकाव्य अथवा वीरकथा पर आधारित संगीत-नाटक है, जो एक गायक, एक ड्रम वादक की संगति में प्रस्तुत करता है। प्राचीन काल में यह बहुत ही लोकप्रिय था।

मुखौटे का प्रदर्शन कोरिया में कई पीढ़ियों तक लोकप्रिय बना रहा। यह नाटकीय तो होता ही था, इसमें नृत्य, स्वांग, हर्ष और विस्मय का प्रदर्शन तथा पात्रों के संवाद अथवा स्वगत भाषण शामिल होते थे। ये नाटक एकांकी होते थे अथवा कई अंकों में विभाजित होते थे। ऐसे नाटकों का मुख्य उद्देश्य सत्तारूढ़ वर्ग के कार्यकलापों पर व्यंग करना, पतनोन्मुख मठ-वासियों को भर्त्सना करना और जनता की अन्य भावनाओं को प्रदर्शित करना होता था। अपने उद्गम स्थलों के अनुसार कोरिया में नाटकों की छह मुख्य परम्परायें हैं।

नामसन पहाड़ी की पूर्वी ढलान पर नवनिर्मित नेशनल थियेटर

कोकडू-गाक्सी, एक कठपुतली नृत्य है, जो मनोरंजन की दृष्टि से बहुत ही लोकप्रिय था।

पाश्चात्य शैली के मंच पर प्रस्तुत किये जाने वाले नाटकों की शुरूआत बीसवीं सदी के प्रारंभ में हुई और उनका काफी स्वागत हुआ। कोरिया के नाटकों में मंच व्यवस्था एवं अंक विभाजन प्रायः पश्चिम की नकल है, लेकिन, विषय-वस्तु पूर्णतः अपनी है।

चल चित्र शुरू से ही लोकप्रिय हुये। सर्वप्रथम इस सदी के प्रारंभ में नाट्यशालाओं में विदेशी फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। कोरिया की अपनी पहली फिलम १९२१ में बनी और तब से बड़ी संख्या में फिल्मों का निर्माण होता रहा है। नाटकों की भांति ही तत्कालीन चलचित्रों के विषय भी मुख्यतः राष्ट्रीय एवं पारिवारिक दुखांत कथायें होती थीं।

चलचित्रों में देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत कथाओं के कारण अभिनेताओं एवं सिनेमा के अन्य कर्मचारियों को जापानी पुलिस द्वारा

दंडित किया जाता था। लघु पूंजी उद्योग होने के साथ साथ, इस प्रकार, चलचित्रों का निर्माण खतरे से खाली नहीं था।

कोरिया की लड़ाई के बाद रंगीन और सिनेमास्कोप फिल्मों का निर्माण भी होने लगा और फिल्मों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लाने का भरपूर प्रयास हुआ। यद्यपि रोमांटिक और देशभक्तिपूर्ण दुखांत कथानकों वाले फिल्म अभी भी काफी लोकप्रिय हैं, फिल्मों में आधुनिक जीवन और इसमें मनुष्य के स्थान का भी अब चित्रण होने लगा है।

कोरिया में प्रतिवर्ष लगभग १५० फिल्में तैयार होती हैं और करीब इसकी एक तिहाई संख्या आयातित फिल्मों की होती है।

कोरिया में आज भी लगभग एक दर्जन नाटक मंडलियां हैं, जिनका संचालन आमतौर पर टेलिविजन अथवा सिनेमा के पेशेवर अभिनेताओं द्वारा होता है। वे कला के प्रति अपनी निष्ठा के कारण नाटक भी प्रस्तुत करते हैं। ये सेक्सपीरियन एवं पश्चिम के अन्य क्लासिकल और समकालीन

नाटक हुआ करते अथवा स्थानीय रचनायें भी होतीं। यद्यपि सिनेमा की तुलना में इन नाटकों के दर्शकों की संख्या बहुत कम होती है, समाज का एक विशिष्ट वर्ग इन गंभीर नाटकों को बड़े शौक से देखता है।

सांस्कृतिक सुविधायें

सांस्कृतिक निधियों की सुरक्षा एवं उनके प्रदर्शन के लिये कोरिया में अनेक संग्रहालय हैं, जो सम्पूर्ण देश में बिखरे हैं। डुकसू पैलेस और क्योंगबक पैलेस स्थित संग्रहालय, राष्ट्रीय संग्रहालय हैं। इसी प्रकार ज्योंगजू, बुइयो और कुछ अन्य प्राचीन नगरों में भी राष्ट्रीय संग्रहालय हैं। देश में १७ विश्वविद्यालय संग्रहालय भी हैं। क्योंगबक पैलेस के संग्रहालय में ७८,००० वस्तुयें प्रदर्शित की गई हैं।

देश में २,५८३ पुस्तकालय हैं। इनमें राष्ट्रीय पुस्तकालय, नगर पुस्तकालय एवं स्कूलों के पुस्तकालय भी शामिल हैं। छोटी-छोटी पहाड़ियों और द्वीपों में बसे गांवों के लिये चलते-फिरते पुस्तकालयों की व्यवस्था की गई है, जो ग्रामीणों को पुस्तकें और नये-नये प्रकाशनों की पूर्ति करते हैं।

क्योंगबक पैलेस में एक विशाल आधुनिक कलादीर्घा (आर्टगैलरी) है, जिसमें प्रतिवर्ष आयोजित राष्ट्रीय ललितकला प्रदर्शनी में प्रविष्टि पाने वाली वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है। यह राष्ट्रीय प्रदर्शनी सरकार द्वारा नई नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से आयोजित की जाती है और इस अवसर पर कलाकारों को भरपूर पुस्कार दिये जाते हैं।

सउल में दो पाश्चात्य ढंग के आरकेस्ट्रा हैं, जिनके नियमित प्रोग्राम होते हैं। इसी प्रकार कई ऑपेरा कम्पनियां भी हैं। अधिकतर विश्वविद्यालयों में भी छात्रों के अपने आरकेस्ट्रा हैं। क्लासिकल संगीत के राष्ट्रीय प्रतिष्ठान में कोरिया का परम्परागत ढंग का आरकेस्ट्रा है। इनके अलावा बैले तथा परम्परागत अथवा आधुनिक नृत्य कम्पनियां हैं।

कोरिया, विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का नियमित सदस्य है। सउल में कलाविषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन होते रहते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय पेन कांग्रेस (साहित्यकारों का सम्मेलन) का आयोजन १९७० में सउल में किया गया था, जिसका विचारणीय विषय "प्राच्य और पाश्चात्य साहित्य में हास्य विनोद" था।

सउल के कैथलिक कैथीड्रल में मिस्सा समारोह

कोरिया गणतंत्र के संविधान में यह स्पष्ट घोषणा की गई है कि प्रत्येक नागरिक को "धर्म की स्वतंत्रता" होगी तथा कोई "राजधर्म" नहीं होगा।

किसी भी पुरानी जाति के प्रारंभिक चिंतन का आधार कोई न कोई धर्म रहा है। कोरिया के लोगों की चरित्रगत विशेषताओं की मूल में शमन धर्म के आदर्श रहे हैं। यह धर्म उत्तर-पूर्व एशिया की प्रायः सभी प्राचीन आदिम जातियों में प्रचलित था। शमन नाम की एक विशेष जाति थी, जिसका भूत प्रेतों में विश्वास होता था और, कहा जाता है, उनसे वे अपना सम्बन्ध भी स्थापित करते थे। कुछ ग्रामीण आज भी शमन परम्परा के अनुसार प्रार्थना करते हैं और वलि चढ़ाते हैं, हालांकि शमनवाद में लोगों का विश्वास जाता रहा है और आज इसे आमतौर पर एक प्रकार का अंधविश्वास माना जाने लगा है।

प्राचीनकाल में स्वर्ग से अवतरित देवताओं के साथ-साथ पूर्वजों की पूजा की परंपरा भी चल पड़ी थी। पौराणिक कथा के अनुसार कोरिया का संस्थापक तंगुन देव-पुत्र था। हर साल फसल निकलने के वाद लोग इस देवता पर वलि चढ़ाते थे। प्राचीनकाल में कोरिया के लोग सूर्य और चन्द्रमा के अलावा भालू, बाघ जैसे पशुओं तथा कुछ पक्षियों की भी पूजा करते थे। यह प्रथा प्राचीन काल के अधिकतर आदिम जातियों में प्रचलित रही है।

आज कोरिया में प्रचलित मुख्य धर्म बौद्ध, कन्फ्यूशी, ईसाई, चोन्डो-ग्यो और तेजोंग-ग्यो हैं।

बौद्ध धर्म

सही अर्थ में बौद्ध धर्म ही सबसे प्राचीन धर्म है, जिसका कोरिया में अव तक अस्तित्व कायम है। विभिन्न धर्मावलंबियों में बौद्ध धर्म के अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक है। मई, १९७१ में विभिन्न जाति के बौद्ध धर्मावलम्बियों की संख्या ७१,०६,०१८ थी।

कोरिया में बौद्ध धर्म सर्वप्रथम कोगूर्यो के राजा सोसुरिम के शासन काल में आया। बौद्ध धर्म का इतिहास तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम चरण, इसके विकास का काल, जो लगभग ५०० वर्षों का है, की शुरूआत तीनों राज्यों के प्रारम्भ से होती है और अन्त सिल्ला वंशकाल (६६८–९३५) में होता है। दूसरा चरण इसके फलने फूलने

का है। यह ५०० वर्ष लम्बे कोरियो वंशकाल (९३५–१३९२) में संभव हुआ। यी वंशकाल (१३९२–१९१०) के ५०० वर्षों का इतिहास बौद्ध धर्म की अवनति का इतिहास है, जिसे अंतिम चरण कहा जा सकता है।

सिल्ला वंशकाल बौद्ध धर्म के लिये स्वर्ण युग था। इसके बाद कोरियो वंशकाल में इसका स्वरूप अधिक औपचारिक और राजनीतिक हो गया।

कोरियो के राजा कोजोंग के शासनकाल में लकड़ी के ८०,००० मुद्रण ब्लॉकों पर बौद्ध धर्मग्रन्थों के ६,५२९ खंड अंकित किये गये। यह कार्य १६ वर्षों में पूरा हुआ और यह त्रिपिटक के संसार में उपलब्ध २० संस्करणों में सर्वोत्तम माना जाता है। ये ब्लाक ग्योंगसंग नामडो प्रान्त के हेन-सा मंदिर में सुरक्षित रखे गये हैं। १९४५ में कोरिया की मुक्ति के कुछ ही समय बाद बौद्धों का एक स्वायत्त संगठन बनाया गया और इसका एक नया घोषणा-पत्र स्वीकार किया गया। कोरिया में इस समय बौद्ध धर्म के १६ सम्प्रदाय हैं। इनमें सबसे बड़ा जोगेजोंग है, जिसके सदस्यों की संख्या ५०,००,००० है। कुल ३,७२१ मठ और मंदिर हैं तथा मठ-वासियों की कुल संख्या १७,२३६ है।

बौद्धों का दूसरा प्रमुख सम्प्रदाय बनवुल-ग्यो है, जिसने बुद्ध के उपदेशों को आधुनिक स्वरूप प्रदान करने और उनके प्रचार के उद्देश्य से एक बौद्ध शोध संस्थान की स्थापना की। बौद्ध धर्म का न केवल कोरिया की जनता के आध्यात्मिक जीवन पर व्यापक प्रभाव था, बल्कि कोरिया की संस्कृति के विकास में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। अनेक प्राचीन बौद्ध मंदिरों को, जिनमें बुद्ध की मूर्तियों के साथ-साथ मूर्तिकला और वास्तु-कला की अनेक उत्कृष्ट कृतियां हैं, राष्ट्रीय निधि का स्थान प्रदान किया गया है। प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर स्थलों पर स्थित बौद्ध मंदिर विदेशी पर्यटकों के मुख्य आकर्षण केन्द्र हैं। जापान में बौद्ध धर्म का प्रवेश कोरिया से ही ५५२ ई० में हुआ।

कन्फ्यूशी धर्म

कन्फ्यूशी धर्म के अनुयायियों के अनुसार उनकी संख्या ४४,२३,००० है और बौद्ध धर्मावलम्बियों के बाद उनका दूसरा स्थान है। इसके सारे

देश में बिखरे २३४ पुण्य स्थान एवं अन्य भवन हैं। कोरिया में कन्फ्यूशी धर्म का प्रवेश चीनी सभ्यता के साथ साथ १०८ ईसापूर्व से प्रारम्भ हुआ। यी वंश काल में जीवन के हर क्षेत्र में, खास तौर से राजनीतिक और पारिवारिक कार्यकलापों में इसका प्रभाव अभिव्यक्त होता था।

यी वंशकाल में कन्फ्यूशी धर्म को राष्ट्रीय शिक्षा का विषय बनाया गया, जिसके परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म की उपेक्षा होने लगी। उच्च पदस्थ अधिकारियों तथा अन्य पढ़े लिखे लोगों के परिवारों में कन्फ्यूशी धर्माचरण अपनाया जाने लगा। वास्तव में लोगों ने कन्फ्यूशी को धर्म की अपेक्षा एक सामाजिक दर्शन और आचरण व्यवहार के आदर्श के रूप में अधिक अपनाया।

ईसाई धर्म

जब यी वंश काल के दौरान १७८३ में चीन भेजे गये राजदूतों के प्राधिकरणों के माध्यम से ईसाई धर्म का कैथलिक मत कोरिया में आया, तो इसे भारी विरोध और विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। फिर भी, पेरिस के फॉरन मिशन सोसायटी और मेरिनॉल सोसायटी ने १८३६ में ईसाई मिशनरियों की टोलियां कोरिया में भेजनी शुरू की। इन मिशनरियों ने यहां चर्च और मठ स्थापित किये तथा स्कूल और अस्पताल खोले। १८८०–८९ की अवधि में पश्चिम के कुछ राष्ट्रों के साथ कोरिया की मैत्री संधियां हुई, जिनके परिणामस्वरूप कोरिया के लोगों को पूजा की स्वतंत्रता मिली। १९३० तक ईसाई मत के मानने वालों की संख्या १,०५,००० तक पहुंच गई थी। १९४७ में वैटिकन ने कोरिया में पोप का मिशन स्थापित किया और मई १९६९ में विशप स्टीफन किम सुह्वान, कोरिया के प्रथम कार्डिनल नियुक्त हुये। अभी कोरिया में रोमन कैथलिक चर्च के ७,९०,३६७ अनुयायी हैं। इसके सारे देश में ३ महाधर्म प्रदेश (आर्क डाइअँसीज) और ११ धर्म प्रदेश (डाइ अँसीज) हैं। पादरियों और विशपों की संख्या ९२७ है। देश भर में कुल ८५१ चर्च और कैथीड्रल हैं। १९ वीं शताब्दी के अन्त में मेथडिस्ट और प्रसबीटेरियन मिशनरियों का भी कोरिया में आगमन प्रारंभ हो गया था।

इसके पश्चात् ईसाई मत का प्रचार केवल धार्मिक कार्यकलापों तक ही सीमित नहीं रह गया। पश्चिम के विचारों, आधुनिक भौतिक और चिकित्सा विज्ञान को भी इन मिशनरियों के माध्यम से कोरिया में प्रवेश मिला।

१९७१ के नवम्बर के अन्त में ईसाई धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों के प्रोटेस्टेन्टों की कुल संख्या ३२,१७,९९६ थी। इनके १३,०३७ चर्च और १५,७८९ पादरी (क्लर्जमिन) थे। इस समय कोरिया में प्रसबीटेरियन, मेथॅडिस्ट, बैपटिस्ट, मॉर्मन, क्वेकर, लूथेरन, कांग्रीगेशनलिस्ट, एंग्लिकान, चर्च ऑफ् होलिनेस और चर्च ऑफ क्राइस्ट, आदि ६० विभिन्न पंथों के चर्च हैं।

यद्यपि १९४५ में कोरिया की मुक्ति के साथ धर्म के नाम पर होने वाले अत्याचारों का भी अंत हुआ, उत्तरी कोरिया में कम्युनिस्टों ने धर्मों के विनाश का कार्य जारी रखा। वहां चर्च नष्ट कर दिये और मिशनरियों को या तो जेलों में बंद कर दिया गया, अथवा, उन्हें श्रमिक शिविरों में भेज दिया गया। परिणामस्वरूप लाखों लोग भाग कर दक्षिण कोरिया में आ गये, जहां अन्य मतों की भांति ही ईसाई मत को भी संविधान के द्वारा पूरी स्वतंत्रता की गारंटी मिली हुई है।

चोंडों-ग्यो

कोरियायी मूल के अपेक्षाकृत नये धर्मों में सबसे अधिक प्रभावशाली चोंडो-ग्यो है। १९वीं शताब्दी के मध्य में चो-ची-यू ने इस मत को चलाया। उनका जन्म १८२४ ई० में हुआ था तथा १९६४ में वे शहीद हो गये। इस मत की मुख्य विशेषता यह थी कि इसमें प्राच्य और पाश्चात्य, दोनों धर्मों की अच्छी बातों को समाविष्ट किया गया। इस मत के अनुसार "हर व्यक्ति भगवान है"।

चो ने पूर्ण निष्ठा के साथ और निःस्वार्थ भाव से ईश्वर एवं मानवता की सेवा करने का लोगों को उपदेश दिया। उन्होंने आत्मसंयम और ईश्वर की इच्छा के समक्ष पूर्ण समर्पण का भी पाठ लोगों को पढ़ाया। चोंडो-ग्यो मत का आन्दोलन, मुख्यतः, इसके प्रवर्तक चो-ची-यू की मृत्यु के बाद, विदेशियों के विरुद्ध लोगों की भावनाओं तथा राष्ट्र की स्वतंत्रता की आकांक्षा से सम्बद्ध हो गया।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में तथा २० वीं शताब्दी के शुरू में डोंगहक आन्दोलन में भाग लेने वाले अधिकांश लोग इसी मत के मानने वाले थे। इस समय इसके ८,३७,००० अनुयायी है तथा ११९ मंदिर हैं।

तेजोंग-ग्यो

तेजोंग-ग्यो धर्म तीन देवों के सिद्धान्त पर आधारित है—हनुनिम-सृष्टि के रचयिता, ह्वान युग-दैवी शासक, और तंगुन-कोरिया के संस्थापक। तेजोंग-ग्यो के अनुयायियों की संख्या लगभग १,१४,००० है तथा सारे देश में इसके २१ मंदिर हैं।

कोरिया में बाहर से आये अन्य नये नये धर्मों में सबसे अधिक सुदृष्ट इस्लाम है। इसके लगभग ३,००० अनुयायी हैं।

इन मुख्य धर्मों के अलावा, अनेक धार्मिक समुदाय हैं। इनमें कुछ कोरियायी मूल के हैं और अन्य बाहर से आकर यहां फलने-फूलने वाले। इन सबों के अनुयायियों की संख्या १,७९,५८,००० हैं। इस आंकड़े से यह प्रकट होता है कि कोरिया के हर दो में से एक व्यक्ति किसी न किसी धर्म में विश्वास करता है। ये आंकड़े फिर भी विभिन्न धार्मिक समुदायों द्वारा स्वतः प्रस्तुत प्रतिवेदनों पर आधारित है। सरकार की ओर से कभी कोई सर्वेक्षण नहीं हुआ।

एक मंडप के समक्ष परम्परागत पोशाक में नृत्य करती हुई महिलायें।

कोरिया में जब चीन से कन्फ्यूशि[illegible]न आया त[illegible] जन-जीवन इसके उपदेशों से प्रभावित हुआ तभी से समाज में परिवार का एक केन्द्र-बिन्दु के रूप में काफी महत्व रहा है।

आज, यद्यपि स्थिति काफी बदल गई है, फिर भी प्रच[illegible]त रीति रिवाजों में कम या अधिक मात्रा में पारिवारिक सम्बन्धों का महत्व देखा जा सकता है।

नाम

कोरिया में आमतौर पर लोगों के नाम चीनी पद्धति के अनुसार होते हैं। कुल नाम अथवा उपनाम में से कोई पहले आता है।

कोरिया के लोग परस्पर सम्बोधन में निकट के मित्रों को छोड़कर नाम का प्रयोग आमतौर पर नहीं करते। उदाहरण के लिये एक दूसरे को अच्छी प्रकार जानते हुये भी "मिस्टर" के कोरियाई पर्यायवाची सम्बोधन का इस्तेमाल करते हैं और पूरा नाम जानते हुये भी औपचारिक रूप से बोलते हैं "आर्किटेक्ट किम" अथवा संक्षेप में "मिस्टर कोह"। महिलायें विवाह के बाद अपना नाम नहीं बदलतीं।

कोरिया का हर नागरिक, समाज में उसका स्थान छोटा हो या बड़ा, अपने पास लकड़ी, हाथी के दांत अथवा प्लास्टिक का, अपने नाम का मुहर रखता है। नाम आमतौर पर चीनी अक्षरों में अंकित होता है। कानूनी और वित्तीय दस्तावेजों के लिये लाल रोशनाई में उसे अपने हस्ताक्षर का मुहर स्थानीय नागरिक प्रशासन कार्यालय में पंजीकृत कराना होता है। जाली मुहर का पकड़ा जाना उतना ही आसान है जितना एक जाली हस्ताक्षर का।

पोशाक

कोरिया के नगरों में सड़कों पर आप लोगों को आमतौर पर पश्चिमी पहनावे में देखेंगे। फिर भी, गांवों में लोग पुराने ढंग की पोशाक पहनते हैं। सम्पन्न परिवारों में महिलायें औपचारिक अवसरों पर परम्परागत डिजाइन वाला गाउन पहनना ही पसन्द करती हैं। पुरानी परम्परा से प्रेम रखने वाले कुछ पढ़े लिखे लोग भी घरों में अथवा छुट्टियों में इस्तेमाल के लिये कम से कम एक सेट पुराने फैशन का वस्त्र अवश्य रखते हैं।

पुरुषों के परम्परागत पोशाक में एक ढीला-ढाला जाकिट और चौड़े जेब वाला पायजामा होता है। बड़े लोग सिर में गैट पहनते हैं, जो

घोड़ के काले मोटे [illegible]लों का ढां[illegible]ाला बुना तथा वार्निश किया होता है।
महिलायें बहुत छोटा ब्लाउज पहनती हैं, जिसे चोगोरी कहते हैं। यह सामने से खुला होता है तथा सफेद पेट्टीकोट पर पहना जाता है। महिलाओं का स्कर्ट लम्बा होता है, जिसे चीमा कहते हैं। यह पोशाक जूट के कपड़े की अथवा काम किये हुये रंगीन सिल्क की बन सकती है। यह कोरिया की विशिष्ट पोशाक है तथा बहुत से लोग महिलाओं का सौंदर्य और लावण्य को प्रकाश में लाने के लिये इसे उपयुक्त समझते हैं।

माता या पिता के मरने पर तीन वर्षों तक एक शोक वस्त्र धारण करने का रिवाज था, जो मोटे पीले रंग के जूट का बना होता था। इसके साथ एक लम्बा हैट भी पहनना पड़ता था। यह भी जूट का ही बना होता था। लेकिन, आज कल लोग शोक प्रदर्शन के लिये जूट का ही बना एक छोटा "वो" कालर या गरेबान की मोड़ी पर कुछ सप्ताह तक लगाये रखते हैं।

आवास

शहरों में बहुत से लोग टाईल अथवा लकड़ी के फर्श वाले पाश्चात्य ढंग के मकानों में रहते हैं। लेकिन, अभी भी शहरों में अधिकांश तथा गांवों में प्राय: सभी मकान परम्परागत ढंग के हैं।

मकान या तो अंग्रेजी के "एल" के आकार के होते हैं या "यू" के। गांवों का मकान एक खुले वर्गाकार कक्ष के अन्तर्गत होता है। परिवार में जैसे जैसे लड़कों के विवाह होते जाते हैं, इस कक्ष में नये नये कमरे जुटते जाते हैं। ये सभी मकान एक मंजिल के ही होते हैं। दीवारें मिट्टी की, ईंट की अथवा मिट्टी लगी ठाठर की होती हैं। कई मकानों में दीवारों की सीमेंट की जुड़ाई भी होती है। छतें परिवार की आय के अनुसार या तो फूस की होती हैं अथवा टाईल की।

पुराने किस्म के मकानों की मुख्य विशेषता ओंडोल, अर्थात् कमरे को गर्म रखने के लिये पत्थर का फर्श बनाने की है। ड्योढ़ी अथवा वर्षाती में जूते खोलने के बाद घर में प्रवेश करने के जो दरवाजे होते हैं, उनमें झंझरीदार किवाड़े लगी होती हैं तथा उन पर पारभासी कागज चिपकाये होते हैं। फर्श के नीचे पत्थर के धुआंकश होते हैं, जिनसे रसोई घर अथवा अलग से बनी झंझरी की आग की गर्मी कमरे तक ले जायी जाती है। फर्श गर्म होने से कमरा भी अच्छी तरह गर्म हो जाता है।

आहार

कोरिया के लोगों का रोज का आहार साधारण होता है--एक कटोरा भात, मांस अथवा मछली का शोरबा और किमची (किमची एक प्रकार का अचार है, जो सर्दी के मौसम में मिट्टी के वर्तन में जमीन के नीचे गाड़ कर खमीर बना कर तैयार किया जाता है तथा इसमें काली मिर्च आदि डाली होती है। गर्मी के मौसम में थोड़ा भिन्न रूप में इसे रोज तैयार किया जा सकता है)। मौसम के अनुसार भोजन में ताजी सब्जियां भी खायी जाती है।

लेकिन, मेहनामों के लिये विशेष प्रकार का भोजन तैयार किया जाता है, जिसमें कई व्यंजन होते हैं। इनमें एक बुलगोगी होता है, जो गाय के मांस को, सोयाबीन का रस, तिल और गर्म मसाला मिलाकर लकड़ी के कोयले की अंगीठी पर भुन कर तैयार किया जाता है। दूसरा सिनसोलो है, जो सब्जी, अंडे, मांस आदि को एक हड़िये में पका कर तैयार किया जाता है। इनके अलावा विशेष अवसरों के लिये मांस, मछली, सब्जी आदि के अन्य कई प्रकार के व्यंजन और चावल के केक और कुक्की तैयार की जाती हैं। इन्हें बनाने में काफी समय और परिश्रम लगता है।

छुट्टियां

अधिकतर परम्परागत छुट्टियां कृषि चक्र के अनुसार होती हैं और उनकी तिथियां चन्द्रमा की गति पर आधारित पंचांग से निर्धारित की जाती हैं। डोंग सिम-जो, प्रथम मास के पन्द्रहवें दिन पड़ता है और शुरू में यह अच्छी फसल के लिये स्थानीय अधिष्ठाता देव की पूजा के लिये एक सामाजिक पर्व के रूप में मनाया जाता था। दलमजी नये वर्ष की प्रथम पूर्णिमा का त्यौहार है। इस दिन रात्रि में लोग मशाल जुलूस निकालते हैं और पहाड़ों की तलहटी में उत्सवाग्नि जलाते हैं। यह भी प्रारम्भ में एक कृषि अनुष्ठान के रूप में ही मनाया जाता था।

मकर संक्रांति के १०५वें दिन हंसिक का त्यौहार आता है, जिस दिन लोग अपने पूर्वजों की कब्रों पर शराब और भोज्य सामग्री अर्पित करते हैं। वर्ष के चौथे मास के आठवें दिन बुद्ध जयन्ती आती है। इस दिन बौद्ध धर्मावलम्बी झंडे-पताके और लालटेन के साथ जुलूस निकालते हैं। मठ-मंदिरों तथा अपने घरों को भी लोग झंडे-पताके से सजाते और रोशनी करते हैं। पांचवें मास के पांचवें दिन दानों का त्यौहार आता है। इस दिन भी लोग पूर्वजों की समाधियों पर भोजन अर्पित करते हैं। इनके अलावा

कोरियावासी आधुनिक कमरों वाले मकान में रहना पसन्द करते हैं, क्योंकि वे बहुत ही व्यवहारिक और सुविधाजनक होते हैं

खेल-कूद, यात्रायें, भोज आदि के भी आयोजन [illegible] हैं। आ[illegible]वें [illegible]
पूर्णिमा के दिन चुसोक का त्यौहार फसल काटने की खुशी में मन[illegible]
यद्यपि इस दिन भी लोग अपने पूर्वजों की कब्रों पर जाते हैं तथ[illegible] [illegible]ना और भोजन अर्पित करते हैं, तथापि यह वर्ष का सर्वाधिक खुशी का दिन [illegible]ता है, क्योंकि किसानों के घर में नई फसलें आ जाती हैं। इस खुशी में लोग कर्कश ग्रामीण वाद्यों के साथ नाचते हैं, खूब खाते हैं और चावल का शराब पीते हैं।

डोंगजी, मकर संक्रांति का पर्व है। इस दिन गृहणियां लाल फली के साथ दलिया और लसदार चावल का केक बनाती हैं। पुराने जमाने में मकर संक्रांति की छुट्टी के दिन नये साल का कैलेन्डर बांटने का भी रिवाज था।

कोरिया में क्रिसमश, अंग्रेजी कैलेन्डर के वर्ष का पहला दिन, और संयुक्त राष्ट्र दिवस, अंतर्राष्ट्रीय छुट्टियों के रूप में मनाये जाते हैं।

गांवों में परम्परागत छुट्टियां आज भी पुराने ढंग से ही मनायी जाती हैं। शहरों में इनके भिन्न रूप हैं। कुछ लोग खाने पीने के मामले में अपने घर परिवार के पुराने रिवाजों को ही मानते हैं। कुछ लोग अपने पूर्वजों को उचित समय पर श्रद्धांजलियां अर्पित करते हैं तो कुछ अपनी सुविधा के अनुसार इसके लिये समय निकालते हैं। पारिवारिक और सामाजिक कार्यों के लिये वे समय के मामले में स्वच्छंद होते हैं। कुछ लोग सिनेमा देखना पसंद करते हैं तो कुछ शहर के बाहर रात बिताते हैं।

कोरिया की राजधानी तथा अन्य बड़े नगरों में आधुनिक सुपर बाजारों की भरमार है

...रि... में लोगों के जीवन में पहला और साठवां जन्म दिन सबसे महत्व का म. .ा जाता है। दोनों अवसरों पर सम्बन्धियों और मित्रों के लिये भ.ज का आयोजन किया जाता है।

प्रथम जन्म दिन के अवसर पर आयोजित प्रीतिभोज में, बच्चे को रंग-बिरगा परम्परागत वस्त्र पहना कर बैठाया जाता है तथा उसके चारो ओर केक, कुक्की और फलों के ढेर होते हैं। बच्चे को उसके भविष्य की जीवन-वृत्ति के प्रतीक के रूप में कई चीजें भेंट की जाती हैं––जैसे लेखक के लिये कलम, व्यापारी के लिये सिक्का, आदि। वह जो सबसे पहले पकड़ता है, उससे उसकी जीवन-वृत्ति की भविष्यवाणी की जाती है।

साठवें जन्म दिवस के अवसर पर दीर्घ जीवन का उत्सव मनाने के लिये व्यक्ति को "ह्वान-गब" भोज का आयोजन करना पड़ता है।

कन्फ्यूशी परम्परा के अनुसार अन्त्येष्टि के अवसर पर शव यात्रा के अतिरिक्त कई अन्य औपचारिकतायें निभानी पड़ती थी। लेकिन, इन रीति रिवाजों को अब काफी सरल कर दिया गया है।

पुराने ढंग के विवाहोत्सव, जिसमें दुल्हा घोड़े या गदहे दर चढ़कर दुल्हन के घर जाता था और पहली मुलाकात में उसके साथ शराब की चुस्की लेता था, अब बहुत कम देखने को मिलते हैं।

इसकी जगह पाश्चात्य ढंग के आधे घंटे के समारोह वाला विवाह अब अधिक प्रचलित है।

लड़का-लड़की की मुलाकात के बिना परिवार के सदस्यों द्वारा विवाह के निर्णय किये जाने तथा सारी विधियां सम्पन्न किये जाने की प्रथा समाप्त हो चुकी है। लड़के-लड़कियां कालेजों में, दैनन्दिन व्यापार में तथा अपने अपने पेशे के लगे रहते हुये अपना जीवन साथी ढूढने में स्वयं भी पहल करती हैं और विवाह के बारे में खुद निर्णय करती हैं।

लेकिन, आमतौर पर बरेखिये (जोड़ा मिलाने वाले) लड़का अथवा लड़की के अभिभावक के सामने योग्य वधु अथवा वर का प्रस्ताव रखते हैं। इसके बाद लड़का लड़की की भेंट होती है और वे आपस में परिचय प्राप्त करते हैं। भेंट के उपरांत भी बचन बद्ध होने न होने के सम्बन्ध में उन्हें पूरा अधिकार होता है।

पर्यटन

कोरिया अधिकांश पर्यटकों के लिये बहुगत मार्ग से दूर है। यही कारण है कि चीजों की कीमतें यहां दुनिया के औसत से कम हैं। कोई भी पर्यटक यहा यात्रियों की देखभाल करने वाली एजेंसियों की सेवाओं का लाभ उठा सकता है।

वास्तव में, इस "अदृश्य व्यापार" से अधिक से अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करने की सरकारी नीति के अन्तर्गत पिछले एक दशक में कोरिया में पर्यटन सुविधाओं का काफी विस्तार किया गया है। इस समय बाहर से आने वाले सभी प्रकार के यात्रियों की, चाहे वह अकेले हो अथवा समूह में, या अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने के लिये प्रतिनिधि मंडल के रूप में आते हों, देश उनकी अच्छी प्रकार देखभाल करने के लिये सक्षम है।

पर्यटन स्थल

सउल और अड़ोस-पड़ोस : कोरिया की राजधानी सउल लगभग साठ लाख की आबादी वाला एक पूर्ण रूपेण आधुनिक नगर है। सुख सुविधा की दृष्टि से आधुनिक होते हुये भी सउल में ६०० वर्षों से भी अधिक पुरानी कोरिया की संस्कृति के अवशेष भरे पड़े हैं। कोलम्बस द्वारा अमेरिका का पता लगाये जाने के भी सौ वर्ष पूर्व राष्ट्र की राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित इस नगर में, और भी प्राचीन सांस्कृतिक निधियां और परम्परायें प्रतिष्ठापित हैं। यहां सब जगह कोरिया की कला और इतिहास की झलक मिलती है।

नगर के मध्य स्थित बड़े बड़े होटलों से कुछ ही कदम पर डुकसू पैलेस है, जो नवीन और प्राचीन के अभूतपूर्व सम्मिश्रण का एक उदाहरण है। पैलेस के सामने का मैदान आज कल एक सार्वजनिक उद्यान है, किन्तु, भवन आज भी उसी अवस्था में हैं, जैसा राजपरिवार के आवास के रूप में था। ग्रीक शैली के दो राजकीय भवनों के बाद ही राज सिंहासन का प्राचीन भवन है, जहां कोरिया के राजा किसी समय विदेशी दूतों का स्वागत करते थे। इन भवनों का निर्माण इस सदी के प्रारंभ में हुआ था, जब पश्चिम की नकल की प्रवृत्ति शुरू हो गई थी।

ग्योंगवग पैलेस, जिसका निर्माण १३९४ में हुआ था, कोरिया का अपने ढंग का सबसे पुराना भवन है। इस किले के मैदान में बने सुन्दर भवनों में

◄ कोरिया का चोसुन होटल उन आरामदेह होटलों में से है, जहां सारी आधुनिक सुविधाओं के साथ तरणताल भी है

एक राज सिंहासन का भवन गुनजंग-जन है, जहां से ४ वंश काल के राजा शासन का कार्य चलाते थे। दूसरा एक शानदार भोज मंडप कमल के फूलों वाले तालाब में अवस्थित है। इसी किले में माडर्न आर्ट गैलरी भी है, जहां प्रतिवर्ष शरद ऋतु के अन्त में राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी आयोजित की जाती है। राष्ट्रीय संग्रहालय भी इसी किले में है।

यहां दर्शक कोरिया की प्राचीन कला की अमूल्य निधियों के नमूने देख सकते हैं, जैसे अर्ध बर्बर युग से बनती आ रही कांसे की बुद्ध की मूर्तियां, पुरानी कब्रों के विलक्षण भित्ति-चित्र, अकृत्रिम वैभव युक्त टोप की शकल का बना एक राज मुकुट, सभ्यता के विकास के युग की मनमोहक चित्रकारी, मृतिका-शिल्प की विश्व विख्यात वस्तुयें आदि।

कुछ ही दूर पर चांग डोंग पैलेस है। यह एक विशाल पुराना राज निवास है, जो दर्शकों के लिये खुला है। इसके प्राच्य शैली के भवनों में पिछले वंश के स्मृति-चिन्ह अंकित हैं। यहां दर्शकों के लिये शाही सवारी और अंतिम राजाओं द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली शुरू शुरू की मोटर गाड़ियां भी रखी हैं। इनके अलावा नीले खपड़ों की बनी एक अनोखी छत, पुराने पोशाक, हथियार एवं अन्य कलाकृतियां भी यहां प्रदर्शित की गई हैं।

किले के पास ही "सीकरेट गार्डन" है। वृक्ष संकुल ढलानों को मिलाने वाली सड़कों की गुत्थियां, कमल के फूलों वाले सरोवर और विलास मंडप इस उद्यान को परीलोक का रूप प्रदान करते हैं। इसके निकट ही नगर-पालिका का चिड़ियाघर और मनोरंजन उद्यान हैं, जहां हमेशा चहल-पहल रहती है। गर्मी के दिनों में तो यह उद्यान और भी अनुप्राणित रहता है।

सउल में तथा आस-पास कई और उद्यान, किले, संग्रहालय और मंदिर हैं। लेकिन, पर्यटक दृश्यावलोकन के साथ साथ स्मृति-चिन्हों की खोज और कुछ चीजें खरीदने का अवसर नहीं खोना चाहेंगे। इसके लिये आधुनिक डिपार्टमेंट स्टोर, आच्छादित मार्ग वाले बाजार अथवा कोलाहल पूर्ण, किन्तु, रंगीन परम्परागत बाजार उपयुक्त हैं।

पर्यटक किसी आधुनिक रेस्तरां अथवा सुसज्जित गीसाएंग हाउस में कोरियाई भोजन का आनन्द ले सकते हैं। इसके अलावा उत्तम से उत्तम चीनी और जापानी भोजन भी उपलब्ध हैं। मैक्सिकन, इटालियन, फ्रेंच और अन्य युरोपीय भोजन भी मिल सकते हैं। अधिकांश होटलों और

कारोबारी इमारतों की ऊपरी मंजिलों पर नाईट क्लब, कैबरे और टी-रूम, सउल के रात्रि जीवन को सजीव बनाते हैं। अच्छे क्लबों में नृत्य-दल और स्थानीय वाद्य कलाकार अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। क्लबों मे आयातित शराब भी मिलती है तथा बेटर और परिचारिकायें अंग्रेजी बोलती हैं। परिष्कृत मनोरंजन पसंद करने वाले वाकर हिल गये बिना नहीं रह सकते। यह एक विशाल सैरगाह है। यह प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर है
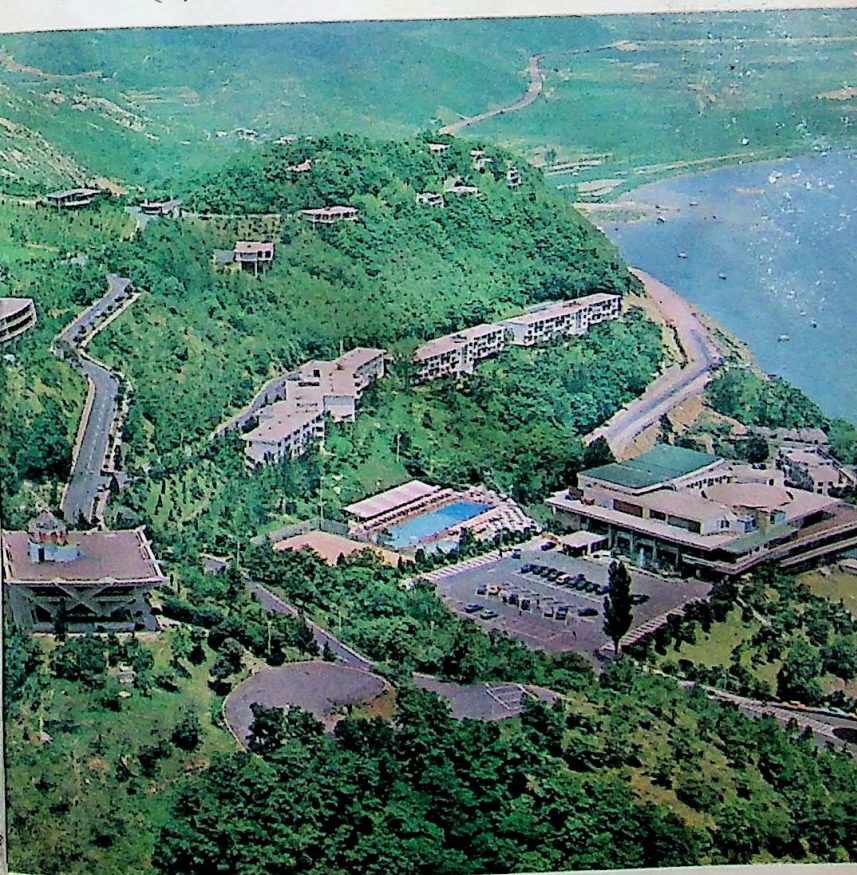
वाकर हिल सैरगाह का एक हवाई दृश्य, जहां सउल से कार द्वारा २० मिनट में पहुंचा जा सकता है

तथा सामने हान नदी की घाटी दीखती है। वाकर हिल सउल से बीस मिनट की सफर है। यहां सभी प्रकार के सुख-सुविधा सम्पन्न पांच होटल, कई प्राईवेट बंगले, एक शानदार नाईट क्लब, मधुशालायें, टर्किश बाथ, तरण ताल, तथा विभिन्न प्रकार के इन डोर और आउट डोर खेल और मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं। यहां एशिया का एक सबसे अधिक चालू जुआखाना भी है। जो शास्त्रीय संगीत में रूचि रखते हैं, उनके लिये सउल में कई स्वसंगति, संगीत गोष्ठियां, ऑपेरा, स्थानीय और बाहर से आने वाले कलाकारों के प्रोग्राम, स्पेशल टी रूम, जहां फर्माइश के अनुसार गीतों के रिकार्ड बजाये जाते हैं, आदि उपलब्ध हैं। राष्ट्रीय शास्त्रीय संगीत संस्थान में दरबार के परम्परागत संगीत और नृत्य अभी भी सुरक्षित हैं तथा उनके प्रदर्शन के आयोजन भी किये जाते हैं।

जो पर्यटक केवल एक दिन के लिये सउल आता है, उसके लिये दो स्थान संभवतः अनिवार्य रूप से दर्शनीय होंगे। एक तो माउन्ट नमसन, जहां से नगर का सिंहावलोकन किया जा सकता है। माउन्ट नमसन की चोटी पर केवुल कार से जाया जा सकता है। दूसरा स्थान कोरिया हाउस है।

कोरिया हाउस सरकार की ओर से संचालित एक पुरानी कोठी है, जहां कोरिया की कला कृतियां और भोजन के नमूने देखे अथवा लेने के लिये छांटे जा सकते हैं। रेस्तरां में भोजन को छोड़ कर बाकी किसी चीज का शुल्क नहीं लगता। सप्ताह के अंत में अपराह्न काल लोक नृत्य के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं, जो जनता के लिये खुले होते हैं। कोरिया हाउस, उन पर्यटकों के लिये, जिनके पास समय कम होता है, प्राचीन कोरिया के जीवन के किसी अंश की झांकी भी प्रस्तुत करता है।

बूसन और अड़ोस-पड़ोस : बूसन सउल से एक्सप्रेस बस से चार घंटे और हवाई जहाज से एक घन्टे की सफर है। यह कोरिया का मुख्य बन्दरगाह और दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा नगर है। प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर स्थित इस नगर की जलवायु सउल से किंचित नरम है। उपयुक्त जलवायु एवं तटवर्ती नगर होने के कारण आस पास स्नान के लिये कई बीच (समुद्रतट) विकसित हो गये हैं। हेनडे और डोंगरे दो अत्यंत साफ-सुथरे और वालुकामय बीच (समुद्रतट) हैं। यहां का पानी गरम, धारा मन्द और गर्मी का मौसम, अनुप्राणित करने वाला होता है। हर नगर में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कई होटल हैं। डोंगरे खास तौर से गर्म जल की धारा के लिये प्रसिद्ध है, जहां स्वास्थ्य लाभ के लिये लोग स्नान करते हैं।

वाकर हिल सैरगाह में विदेशी पर्यटकों के मनोरंजन के लिए कोरिया के परम्परागत नृत्यों के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं

बूसन नगर के बाहर संयुक्त राष्ट्रसंघ का कब्रिस्तान है, जो दुनिया में अपने ढंग का अनोखा है। यहां कोरिया की लड़ाई में मारे गये उन सैनिकों की समाधि हैं, जो १६ विभिन्न मित्र राष्ट्रों द्वारा सहायता के लिये भेजे गये सैन्यदल में आये थे। बोमोसा और तोंग्डो-सा कोरिया के दो प्रसिद्ध बौद्ध मंदिर हैं, जहां बूसन से कार द्वारा एक घंटे में जाया जा सकता है। अन्य मंदिरों की तरह ये भी अन्नानास के वृक्षों से भरपूर पहाड़ों की ढलान पर स्थित हैं जहां बस या कार से पहुंचा जा सकता है। जो राष्ट्र के औद्योगिक विकास में रुचि रखते हैं, उनके लिये पूर्वी तट पर स्थित बुल्सन औद्योगिक केन्द्र का परिदर्शन अनिवार्य है।

ग्योंगजू क्षेत्र : ग्योंगजू नगर प्राचीन इतिहास और कला के अवशेषों का, संभवत: सबसे बड़ा भंडार है। आजकल यह केवल एक प्रान्तीय नगर रह गया है, हालांकि किसी जमाने में यह सिल्ला वंशकाल (५६ ई० पू० ९३५) की वैभव सम्पन्न राजधानी थी।

ग्योंगजू, वस्तुत: बिना दीवारों वाला एक संग्रहालय है। नगर में

स्थान स्थान पर सिल्ला वंश काल के मंदिरों, कब्रों, स्मारकों, पैगोडे तथा राज प्रासादों और किलों के अवशेष भरे पड़े हैं। एशिया का संभवत सबसे पुराना पत्थर का बना वेधशाला भी यहीं है। इस नगरी में राष्ट्रीय संग्रहालय की एक शाखा भी है, जहां छोटी छोटी और अपेक्षाकृत जल्दी नष्ट होने वाली वस्तुयें प्रदर्शित की गई हैं।

ग्योंगजू की दो सर्वोत्कृष्ट निधियां बलकुक मंदिर और शोक्कुलम का गुफा है। बलकुक मंदिर शहर के ठीक बाहर स्थित है तथा वहां आसानी से जाया जा सकता है। यह कोरिया के सबसे सुन्दर मंदिरों में से एक है। शोक्कुलम की गुफा जो पत्थर की बनी है, पास के पर्वत शिखर पर है। यह गुफा पत्थर की मूर्तियों और चित्र बल्लरियों, जो बौद्ध कला के उत्कर्ष की पराकाष्ठा मानी जाती है, के लिये सारे संसार में प्रसिद्ध है।

यदि किसी पर्यटक के पास सउल के बाहर किसी एक स्थान के भ्रमण के लिये ही समय है, तो उसे ग्योंगजू अवश्य जाना चाहिये। सउल से ट्रेन द्वारा एक रात की सफर है। न्यू एक्सप्रेस वे की बस सर्विस से भी ग्योंगजू जाया जा सकता है। यहां बलकुक मंदिर के पास ही पाश्चात्य ढंग का एक होटल है।

पूर्व तटीय पर्यटन स्थल : कोरिया के पूर्वी तट के उत्तर का भाग काफी कटावदार और पहाड़ी है तथा प्राकृतिक दृश्यों से परिपूर्ण होने के कारण इसे "एशिया का आल्प्स" भी कहा जाता है। यहां सउल से विमान अथवा रेल द्वारा आया जा सकता है। स्काईंग और शरद ऋतु के अन्य खेलों के लिये उपयुक्त स्थान होने के कारण यहां सालो भर लोग आते हैं। यहां का सबसे लोकप्रिय मनोरंजन गर्मी में तैरना और गर्मी कम होने पर पर्वतारोहन है। यहां के बीच (समुद्र तट) कोरिया में सबसे सुन्दर है।

देश के भीतर प्रमुख सैरगाह सिवलाग पर्वत है, जहां पर्यटकों के आवास के लिये पाश्चात्य शैली का एक भवन है। इसमें अलग अलग केबिन बने हुये हैं। समुद्र के किनारे पर भी गंगनंग बन्दरगाह के बाहर पर्यटकों के लिये एक होटल है। समुद्र तटीय क्षेत्र में अनेक स्थानों पर, खास तौर से जो प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर हैं, कई मंडप बने हैं, जहां प्राचीन काल के कवि चन्द्र दर्शन और मद्यपान के लिये एकत्र होते थे।

पनमुनजोम : यह एक गांव है जहां कोरिया की लड़ाई समाप्त करने के लिये एक विराम संधि पर हस्ताक्षर हुआ था। इस गांव में आने वाले किसी व्यक्ति को यह अनुमान लगाने में कठिनाई नहीं होगी कि शीतयुद्ध

अभी भी जारी है, यहां आज भी संयुक्त राष्ट्रसंघ और कम्युनिस्टों के प्रतिनिधि विराम संधि के उल्लंघन सम्बन्धी विवादों को लेकर मिलते रहते हैं। पनमुनजोम, वह स्थान है जहां अमरीकी नौ सेना के जहाज प्यूब्लो के ८२ कर्मचारी ११ मास तक कैद में रहने के बाद उत्तर कोरिया से वापस लौटे थे। उन्होंने "ब्रिज ऑफ नो रिटर्न" पार किया और २३ दिसंबर, १९६८ को वे पुन: मुक्त क्षेत्र में वापस आये। पनमुनजोम सउल से बस मार्ग से ३५ मील है। यहां आने और युद्धविराम आयोग की बैठक देखने के लिये सउल स्थित संयुक्त राष्ट्रसंघ कमान को काफी पहले आवेदन-पत्र देने होते हैं, ताकि यहां उनके ठहरने की व्यवस्था की जा सके।

गाया पर्वत क्षेत्र : गाया पर्वत देगू से ढाई घन्टे की बस की सफर है। १४३० मीटर ऊंचा यह पर्वत हेन मंदिर के लिये प्रसिद्ध है, जहां कोरियो वंश काल की ८०,००० उन काष्ठ पट्टिकाओं को सुरक्षित रखा गया है, जिन पर बौद्ध धर्मग्रन्थों की पंक्तियां अंकित करायी गयी थी। इस कार्य में १६ वर्ष लगे थे। इस मंदिर का निर्माण ८०२ ई० में हुआ था तथा बाद में इसका विस्तार किया गया था।

जेजू द्वीप : जेजू कोरिया का एकमात्र द्वीप है, जिसे प्रान्त का दर्जा दिया गया है। यहां सउल से विमान द्वारा दो घंटे में पहुंचा जा सकता है। दक्षिण के बन्दरगाह बूसन से जेजू ६० मील दूर है। यहां की जलवायु अर्द्ध समशीतोष्ण है तथा सालों भर मौसम सुहावना रहता है। जलवायु के अनुसार यहां के पेड़ पौधे तथा प्राकृतिक दृश्य भी मुख्य भूमि से भिन्न हैं।

इस द्वीप के कुछ विशिष्ट सौंदर्य हैं। इनमें एक दक्षिण कोरिया का सबसे ऊंचा पर्वत हानरा है, जो कभी ज्वालामुखी था। यहां की गोताखोर महिलायें भी प्रसिद्ध हैं, जो गहराई में जाकर समुद्र से खाद्य पदार्थ तथा अन्य वस्तुयें निकालती हैं। उनका यह कार्य सर्दियों में भी चलता है।

जेजू में दो आधुनिक होटल हैं तथा दृश्यावलोकन की सुविधा के लिये द्वीप के चारों ओर एक वृत्ताकार मार्ग भी है।

होटल की सुविधायें

कोरिया में अनेक अच्छे होटल हैं, जहां विदेशी ठहरते हैं। पर्यटकों के लिये सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ७६ होटल हैं, जिनमें ५,७६३ कमरे हैं। ये होटल प्राय: सभी प्रमुख पर्यटन स्थलों पर हैं तथा इनमें उच्च स्तर की सेवायें और सुविधायें उपलब्ध हैं। पर्यटकों के लिये बने होटलों में अकेला ठहरने के लिये कमरे का कम से कम शुल्क ६ डालर प्रतिदिन है। दो सीटों

वाले कमरे के लिये ८ डालर से १३ डालर तक तथा सूट के लिये १६ डालर से ३० डालर तक शुल्क देने होते हैं। इस प्रकार औसतन शुल्क भगभग दस डालर आता है। इन होटलों में काउन्टर पर तथा दुकानों, मधुशालाओं और रेस्तरां में अंग्रेजी बोली जाती है। पर्यटकों के लिये विशेष सुविधा के अन्तर्गत सरकार से पंजीकृत अनेक होटल हैं, जहां पाश्चात्य भोजन और मद्यपान की सुविधायें उपलब्ध हैं।

जो पर्यटक कम खर्च में काम चलाना चाहते हैं उनके लिये भी अनेक होटल और सराय उपलब्ध हैं। यहां प्राईवेट बाथरूम की सुविधा तथा भोजन सहित अथवा रहित दो डालर से चार डालर तक कमरे का किराया देना पड़ता है। यहां पर्यटक कोरिया के स्वाभाविक आतिथ्य का आनन्द ले सकते हैं।
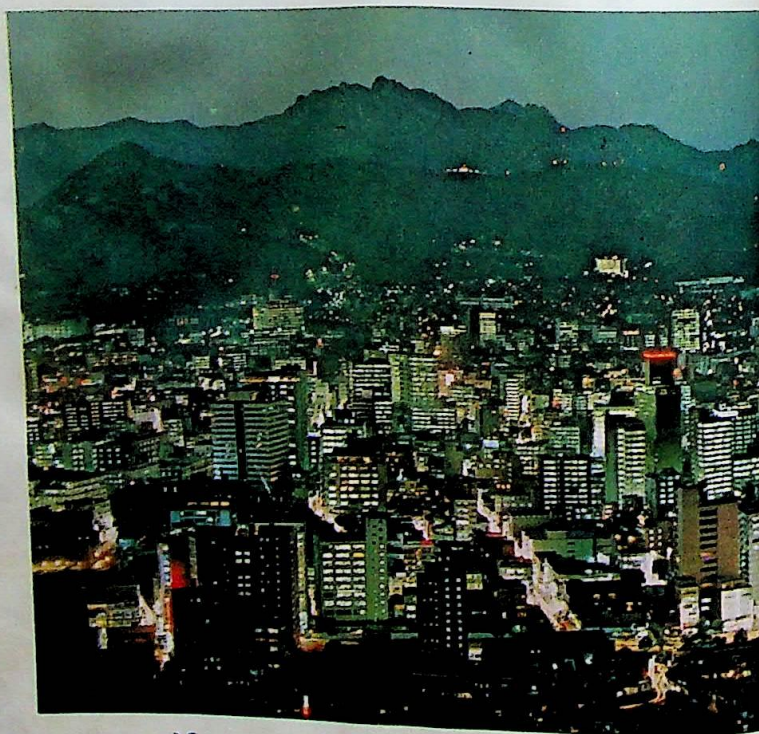
कोरिया की राजधानी सउल की जगमगाती रात का एक दृश्

परिवहन

पर्यटक हवाई अथवा जल मार्ग से कोरिया आ सकते हैं। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय विमान सेवायें जैसे एन० डब्ल्यू० ए०, टी० डब्ल्यू० ए०, सी० पी० ए०, सी० ए० टी०, जे० ए० एल० और थाई इन्टरनेशनल कोरिया आने के लिये सुलभ हैं। कोरिया की अपनी विमान सेवा कोरियन एयर लाइन्स भी उपलब्ध हैं। जापान के शिमोनोसेकी से कोरिया के बूसन बन्दरगाह तक बू-ग्वान फेरी से भी आया जा सकता है।

कोरियन एयर लाइन्स की टोकियो, ओसाका, तायवान, हांककांग और बैंकाक की सप्ताह में ६२ उड़ानें हैं। सप्ताह में दो उड़ानें लॉस एंजिल्स
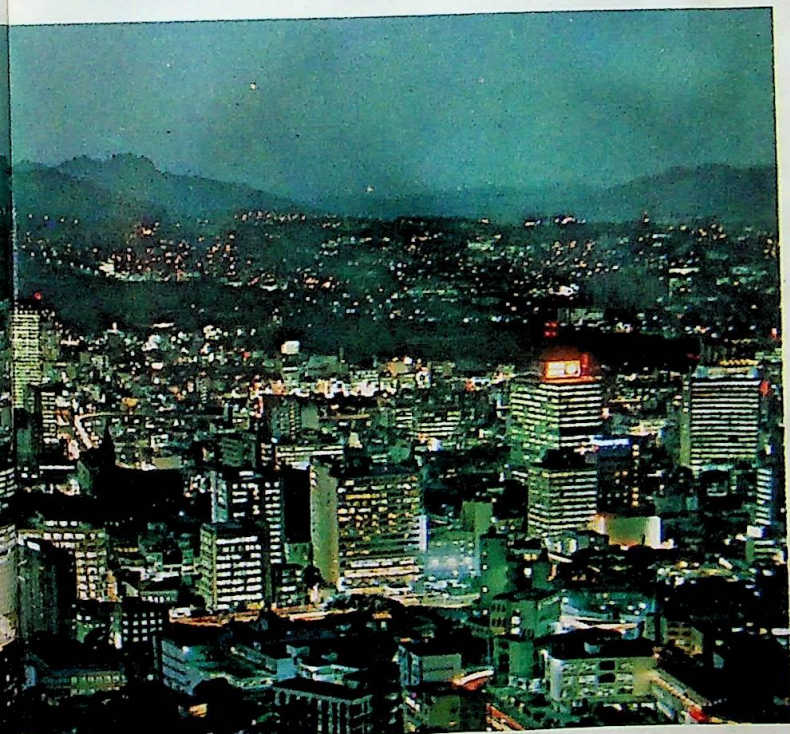
जो इस नगर के तीव्र विकास का द्योतक है

(अमेरिका) की भी होती हैं। जापान एयर लाइन्स व पड़ोसी देशों के बीच प्रति सप्ताह १४ उड़ानें हैं। अमेरिका के पश्चिमी तट से थाई इन्टरनेशनल की तीन उड़ानें हैं। सीट्ल, सन फ्रांसिस्को और लास एंजिल्स से टोकियो के लिये नार्थ वेस्ट ओरिएन्ट एयर लाइन्स, सी० पी० ए० और कोरियन एयर लाइन्स की सेवायें रोज ही उपलब्ध हैं। कोरिया एवं जापान, हांग-कांग, तायपेई तथा कुछ अन्य स्थानों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय विमान सेवाओं की प्रति सप्ताह कुल ७० उड़ानें हैं।

बूसन के लिये फेरी सेवा जून, १९७०, में प्रारम्भ हुई। तब से जल मार्ग द्वारा अपनी कार साथ लेकर कोरिया आने वाले पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि होती रही है। जल मार्ग से यात्रा के दो प्रमुख आकर्षण हैं-- एक तो भाड़े में काफी बचत होती है (द्वितीय श्रणी के लिये १४ डालर) और दूसरा यह कि पर्यटक अपनी गाड़ी भी साथ ला सकते हैं।

अन्तर्देशीय भ्रमण : कोरिया की अन्तर्देशीय परिवहन सेवा में हाल के वर्षों में काफी सुधार हुआ है। सड़क, रेल और हवाई सेवायें प्राय: सभी प्रमुख पर्यटन स्थलों के लिये उपलब्ध हैं (नक्शा देखें)। पर्यटकों के लिये यात्रा की सारी सुविधायें इनमें उपलब्ध करायी गई हैं। सउल से इंछन, बूसन, ग्वांगजू और वोंजू के लिये तीव्रगामी और सुविधाजनक बस एवं कार सेवायें उपलब्ध हैं। प्राईवेट कार के लिये प्रति ३०० मील यात्रा पर ५ डालर से भी कम देने पड़ते हैं। विदेशी माडॅल की एक्सप्रेस बसों का महसूल और भी कम है। सउल से बूसन तक का भाड़ा ५ डालर से भी कम होता है। रेल सेवायें सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। कोरिया के पूर्वतटीय क्षेत्र की यात्रा के लिये तो रेल मार्ग सबसे उत्तम है। जो पर्यटक बस की अपेक्षा रेल से यात्रा करना अधिक पसंद करते हैं, उनके लिये ग्वान ग्वांग हो डीलक्स टूरिस्ट ट्रेन, जो सउल और बूसन के बीच चलती है, बहुत ही अच्छा है, क्योंकि इसमें कोरिया के गांवों के दृश्यावलोकन का भी अच्छा अवसर मिलता है।

विमान से भी कोरिया के प्रमुख नगरों की यात्रा की जा सकती है। कोरियन एयरलाइन्स की १६ प्रमुख नगरों के लिये प्रतिदिन कुल १६४ उड़ानें हैं। कहीं भी एक घंटे के भीतर पहुंचा जा सकता है। यात्रा का अन्य साधन नौका भी है। हालांकि यह सभी स्थानों के लिये सुलभ नहीं हो सकता फिर भी, विभिन्न द्वीपों के लिये निकटतम बन्दरगाह से जहाज द्वारा ही यात्रा करनी पड़ती है।

शॉपिंग

बड़े बड़े नगरों में कई फारेनर्स कमिश्नरी हैं, जहां आयातित शराब, प्रसाधन तथा नाना प्रकार के अन्य सामान मिलते हैं। पर्यटक डिपार्टमेंट स्टोर्स, आच्छादित मार्गों वाली दुकानों तथा अन्य परम्परागत बाजारों से अपनी जरूरत की चीजें तथा स्मृति-चिन्ह, आदि खरीद सकते हैं। कोरिया के जरी के काम वाले सिल्क, चमड़े के सामान, स्वेटर, पीतल के वर्तन, रेडीमेड कपड़े आदि की सर्वोत्तम सामानों में गणना होती है। हाथ से सिले टबुल क्लॉथ तथा सजावट की अन्य वस्तुयें, सोने के आभूषण, कीमती पत्थर, तिनके की बुनी अनूठी वस्तुयें, ऊनी कपड़े आदि अत्यन्त अभिलषित वस्तुओं में होते हैं।

प्रवेश सूचना

कोरिया टूरिस्ट एसोसियेशन के किसी भी समुद्रपारीय कार्यालय से कोरिया में यात्रा सम्बन्धी सूचनायें निःशुल्क प्राप्त की जा सकती हैं। कोरिया की ३० से भी अधिक ट्रॅवेल एजेंसियां, जो विश्व के प्रमुख पर्यटन संगठनों से सम्बद्ध हैं, अकेले अथवा योजनावद्ध ढंग से समूह में यात्रा करने वाले विदेशी पर्यटकों को उनकी आवश्कयता के अनुसार यात्रा का कार्यक्रम तैयार करने में सहायता कर सकते हैं। इन टूरिस्ट एजेंसियों की सेवायें १९७० में ५०,००० से भी अधिक पर्यटकों को उपलब्ध हुई।

हाल में पर्यटकों के लिये विभिन्न नियमों और प्रक्रियायों को और भी सरल बना दिया गया है। बहत्तर घन्टे तक के वास के लिये किसी पर्यटक को वीसा लेने की जरूरत नहीं होती। कोरिया पहुंचने पर एक तटीय प्रवेश पत्र दिया जाता है, जिसकी अवधि आग्रह करने पर आगे बढ़ा दी जाती है। मुद्रा और सामानों की जानकारी देने के लिये केवल एक रजिस्ट्रेशन फार्म भरना पड़ता है। चेचक के टीके का हाल का प्रमाण-पत्र, एकमात्र मेडिकल प्रमाण-पत्र हैं, जो किसी पर्यटक के लिये प्रस्तुत करना आवश्यक होता है। लम्बी अवधि के लिये वीसा के सम्बन्ध में तथा अन्य सूचनायें निकटतम कोरियाई वाणिज्य दूतावास से प्राप्त की जा सकती हैं।

भारत-कोरिया सम्बन्ध

सांस्कृतिक बंधन

भारत और कोरिया के सांस्कृतिक सम्बन्धों का आधार बौद्ध धम रहा है। दो हजार वर्ष पुराना यह सम्बन्ध आज भी उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। अनेक ऐतिहासिक अवशेष दोनों देशों के सांस्कृतिक संबन्धों के साक्षी हैं।

आधुनिक युग में भारत कोरिया के और निकट आया। १९४९ में कोरिया में हुये प्रथम जनतांत्रिक चुनाव का संचालन एक भारतीय ने किया। पेकिंग में भारत के प्रथम राजदूत श्री के० पी० एस० मेनन, राष्ट्र-संघीय आयोग के अध्यक्ष के रूप में सम्पूर्ण कोरिया में मुक्त चुनाव का निरीक्षण करने के लिये भेजे गये। उन्हें उत्तर कोरिया में इस कार्य के लिये प्रवेश की अनुमति नहीं मिली।

१९५० में जब कोरिया की लड़ाई शुरू हुई, तो मध्यस्थता के लिये पहल करने वाला प्रथम देश भारत था। युद्ध विराम कराने में भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू की महत्वपूर्ण भूमिका रही। युद्ध विराम को कारगर बनाने के लिये जुलाई, १९५३ में जनरल के० एस० थिमैया के नेतृत्व में भारतीय सेना के ५००० जवान और २०० अफसर कोरिया भेजे गये।

व्यापार संबंध

कोरिया ने अप्रैल, १९६२ में अपना वाणिज्य दूतावास खोला। अप्रैल १९६४ में दोनों देशों के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर हुआ। अक्तूबर १९६८ में भारत ने भी सउल में महावाणिज्य दूतावास स्थापित किया।

कोरिया के विदेश मंत्री श्री वांग शिक किम जुलाई, १९७२ में भारत की यात्रा पर आये। यात्रा के दौरान उनका व्यस्त कार्यक्रम रहा। वे राष्ट्रपति वी० वी० गिरि और प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी से मिले। विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिह के साथ बातचीत में उन्होंने दोनों देशों के बीच आर्थिक सम्बन्धों की समीक्षा की और उस पर संतोष प्रकट किया।

दिल्ली में आयोजित एशियायी व्यापार मेले में भाग लेने वाले देशों में कोरिया का भी प्रमुख स्थान था। मेले में कोरिया के मंडप में दस लाख

से भी अधिक दर्शक पधारे। प्रधानमंत्री इंदिरागांधी भी ६ दिसंवर, १९७२ को कोरिया का मंडप देखने आयीं।

उसी वर्ष २७ और २८ नवम्बर को नई दिल्ली में ठसाठस भरे कमानी हॉल में कोरिया की लोक कला मंडली ने अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस मंडली ने राष्ट्रपति श्री गिरि और प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से भी भेंट की।

एशिया ७२ व्यापार मेले में ४ दिसम्वर, १९७२ को प्रातः आयोजित "कोरिया दिवस" में कोरिया के वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री नक सुन ली भी उपस्थित थे।

३० मार्च, १९७३ दोनों देशों के लिये एक स्मरणीय दिवस है। इस दिन लोक सभा के अध्यक्ष डा० गुरदयाल सिंह ढिल्लों ने भारत-कोरिया सोसायटी का विधिवत उद्‌घाटन किया।

२५ जून, १९७३ को डा० ढिल्लों के नेतृत्व में भारत का एक चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल कोरिया की ६ दिनों की यात्रा पर सउल आया। डा० ढिल्लो, जो कोरिया गणतंत्र की राष्ट्रीय असेम्वली के अध्यक्ष श्री चुंग इल काउन के निमंत्रण पर आये थे, २६ जून को राष्ट्रपति पक चुंग ही से मिले। डा० ढिल्लों और राष्ट्रपति पक ने भारत-कोरिया सम्बन्धों को और सुदृढ़ बनाने के उपायों पर विचार विमर्श किया।

सउल के सुंग क्यून क्वान विश्वविद्यालय की ओर से डा० ढिल्लों को डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया।

उत्तरोत्तर वढ़ते हुये व्यापारिक और आर्थिक सहयोग से भारत-कोरिया सम्वन्ध और मजबूत हुआ है। यह प्रसन्नता का विषय है कि १९६५–७० की अवधि में भारत से कोरिया को होनें वाले निर्यात में २३ गुनी वृद्धि हुई है। इस अवधि में कोरिया से भारत को होने वाला निर्यात साढ़े ५ गुना बढ़ा है।

भारत से कच्चा लोहा खरीदने वाले सुदूर पूर्व के देशों में जापान के वाद कोरिया का ही स्थान है। भारत इसके बदले में कोरिया से रसायनिक खाद प्राप्त कर रहा है। १९७२ में कोरिया ने भारत से ४.२७ करोड़ के उर्वरक का आयात किया।

एशिया के इन दोनों विकास शील देशों के बीच विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते हुये सहयोग और मैत्री के ये कुछ थोड़े से उदाहरण हैं।
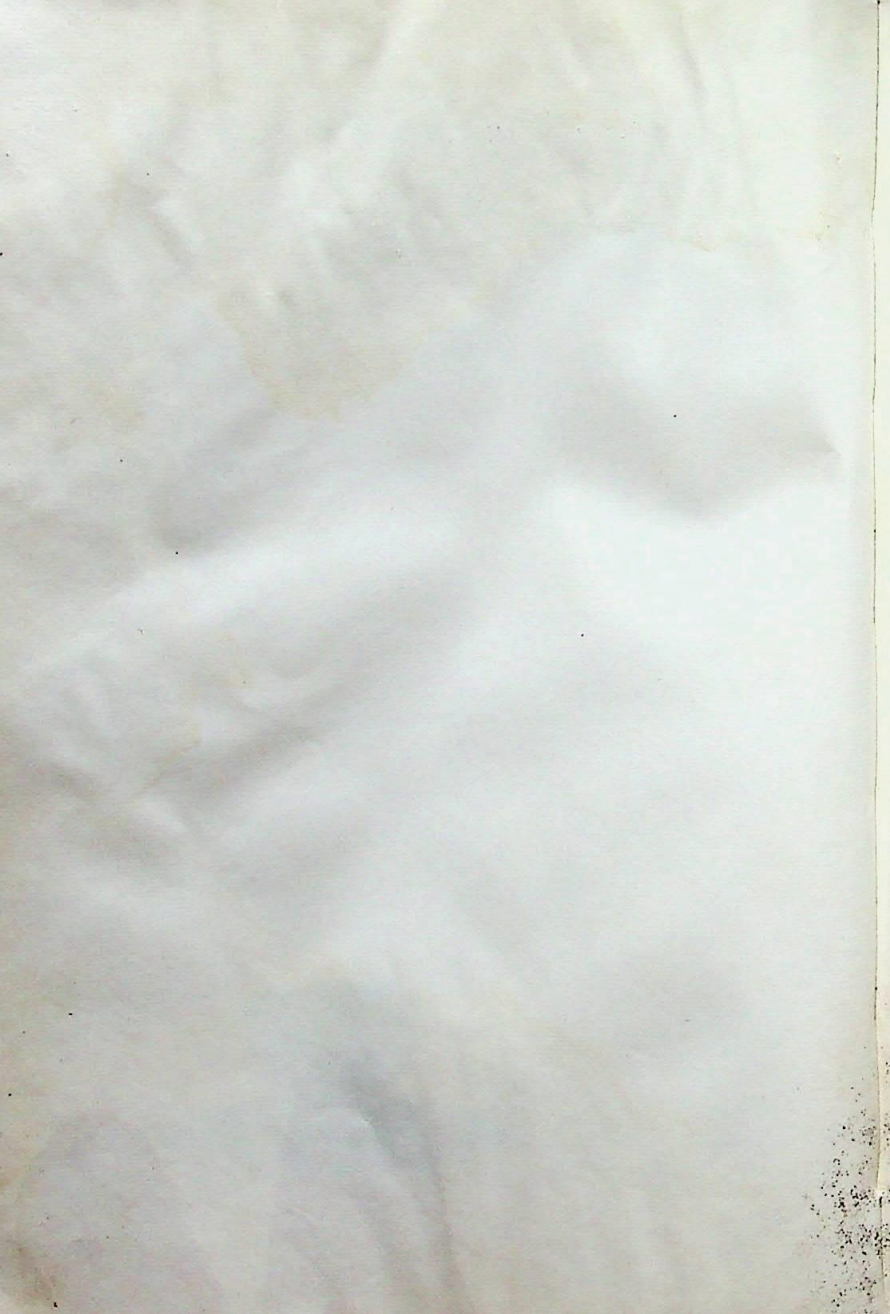
राष्ट्र ध्वज
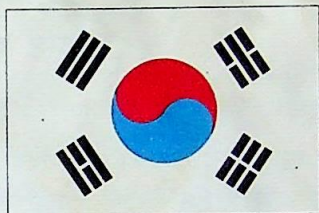
ते गुक की

कोरिया का राष्ट्र ध्वज मुख्यतः, प्राच्य दर्शन, आध्यात्म और चिन्तन का प्रतीक है। ध्वज के प्रतीक को, और, कभी कभी ध्वज को ही, ते गुक कहते हैं।

ध्वज के मध्य में एक वृत है, जो बराबर-बराबर दो भागों में विभाजित और संतुलित है। ऊपर का लाल रंग वाला हिस्सा यांग तथा नीचे का नीले रंग वाला हिस्सा अम का प्रतिनिधित्व करता है। यह सृष्टि के सम्बन्ध में चीन की मूल कल्पना का प्रतीक है। ये दो प्रतिमुख सृष्टि की द्वयात्मकता को अभिव्यक्त करते हैं, जैसे, आग और पानी, दिन और रात, अंधकार और प्रकाश, सृष्टि और विनाश, नर और नारी, सक्रिय और निष्क्रिय, उष्ण और शीत, जोड़ और घटाव आदि।

ते गुक की मूल कल्पना यह है कि अनन्त यदि अनवरत गतिशील है, तो इसमें संतुलन और सामंजस्य भी है। उदाहरण के लिये दया और निर्दयता पर विचार कीजिये। यदि माता-पिता अपने बच्चे के प्रति दयालु हैं, तो, यह अच्छा है, लेकिन, इस प्रकार वे उसे बिगाड़ भी सकते हैं और वह अपने पूर्वजों को कलंकित करने वाला एक व्यक्ति भी सिद्ध हो सकता है।

हर कोने पर तीन-तीन डंडे भी विरोध और संतुलन की कल्पना को ही अभिव्यक्त करते हैं। तीन रेखायें जो टूटी नहीं हैं, स्वर्ग के प्रतीक हैं। इसके विपरीत टूटी हुई तीन रेखायें पृथ्वी के प्रतीक हैं। ध्वज के नीचे बाईं ओर की तीन रेखाओं में एक बीच वाली टूटी हुई है। यह अग्नि का प्रतीक है। इसके विपरीत पानी का प्रतीक दर्शाया गया है।

छुट्टियां और घटनायें

१ जनवरी : **वर्ष का प्रथम दिन**––आम तौर पर वर्ष के प्रथम तीन दिन उत्सव मनाये जाते हैं। कोरिया के अधिकांश लोग सदियों पुरानी परम्परा के अनुसार चन्द्रमा की गति पर आधारित पंचांग के अनुसार अपनी छुट्टियां मनाते हैं।

१ मार्च : **स्वतंत्रता आंदोलन दिवस**––कोरिया की जनता १ मार्च को जापानी शासन के विरुद्ध आजादी की लड़ाई की वर्षगांठ मनाती है। यह लड़ाई १ मार्च, १९१९ को छेड़ी गई थी।

चन्द्र पंचांग के चौथे माह का आठवां दिन : बुद्धजयंती––इस अवसर पर सभी बौद्ध मंदिरों में समारोह आयोजित किये जाते हैं। दिन भर के उत्सवों की परिणति लालटेन जुलूस में होती है।

चन्द्र पंचांग के पांचवे माह का पांचवा दिन : दानो का त्यौहार––यह एक बड़ा राष्ट्रीय पर्व और छुट्टी का दिन है। इस दिन युवकों की दंगल और युवतियों की तैराक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

१६ मई : १६ मई को १९६१ की क्रांति की वर्षगांठ मनाई जाती है।

६ जून : **स्मृति दिवस**––इस दिन राष्ट्र युद्ध के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करता है। सउल के राष्ट्रीय कब्रगाह पर इस दिन शहीदों की स्मृति में प्रार्थना का आयोजन किया जाता है।

१७ जुलाई : **संविधान दिवस**––यह दिवस १९४८ में कोरिया गणतंत्र के संविधान की प्रतिष्ठा की स्मृति में मनाया जाता है।

१५ अगस्त : **मुक्ति दिवस**––इस दिन १९[illegible] में कोरिया ने जापानियों की ३६ वर्ष की पराधीनता से मुक्ति [illegible]ी थी।

१ अक्तूबर : **सशस्त्र सेना दिवस**—यह दिवस काफी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन मिलीटरी परेड और सलामी तथा हवाई प्रदर्शन आदि का आयोजन किया जाता है।

३ अक्तूबर : राष्ट्रीय स्थापना दिवस—पौराणिक कथा के अनुसार ४३०५ वर्ष पूर्व (२३३३ ई० पू०) में दांगुन ने कोरिया की स्थापना की थी। यह दिवस उसी उपलक्ष में मनाया जाता है।

चन्द्र पंचांग के आठवें माह का पन्द्रहवां दिन : चुसोक अथवा चन्द्र-पर्व दिवस—इस दिन संध्या समय पूर्णिमा का चांद देखने का रिवाज है। यह कोरिया की प्रमुख राष्ट्रीय छुट्टियों में से एक है और यह धन्यवाद दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

९ अक्तूबर : हंगुल (कोरियाई वर्णमाला) दिवस—यह दिवस यी वंशकाल के राजा सेजोंग द्वारा १४४६ में हंगुल की घोषणा की वर्षगांठ के रूप में मनाया जाता है।

२४ अक्तूबर : संयुक्त राष्ट्र दिवस—बूसन में संयुक्त राष्ट्र संघ के कब्रिस्तान पर इस दिन कोरिया की लड़ाई में मारे गये संयुक्त राष्ट्र संघ की सेना के जवानों की स्मृति में प्रार्थना का आयोजन किया जाता है।

२५ दिसम्बर : क्रिशमस—ईसाई एवं अन्य नागरिक भी इस पवित्र दिवस को पश्चिम की भांति ही मनाते हैं।
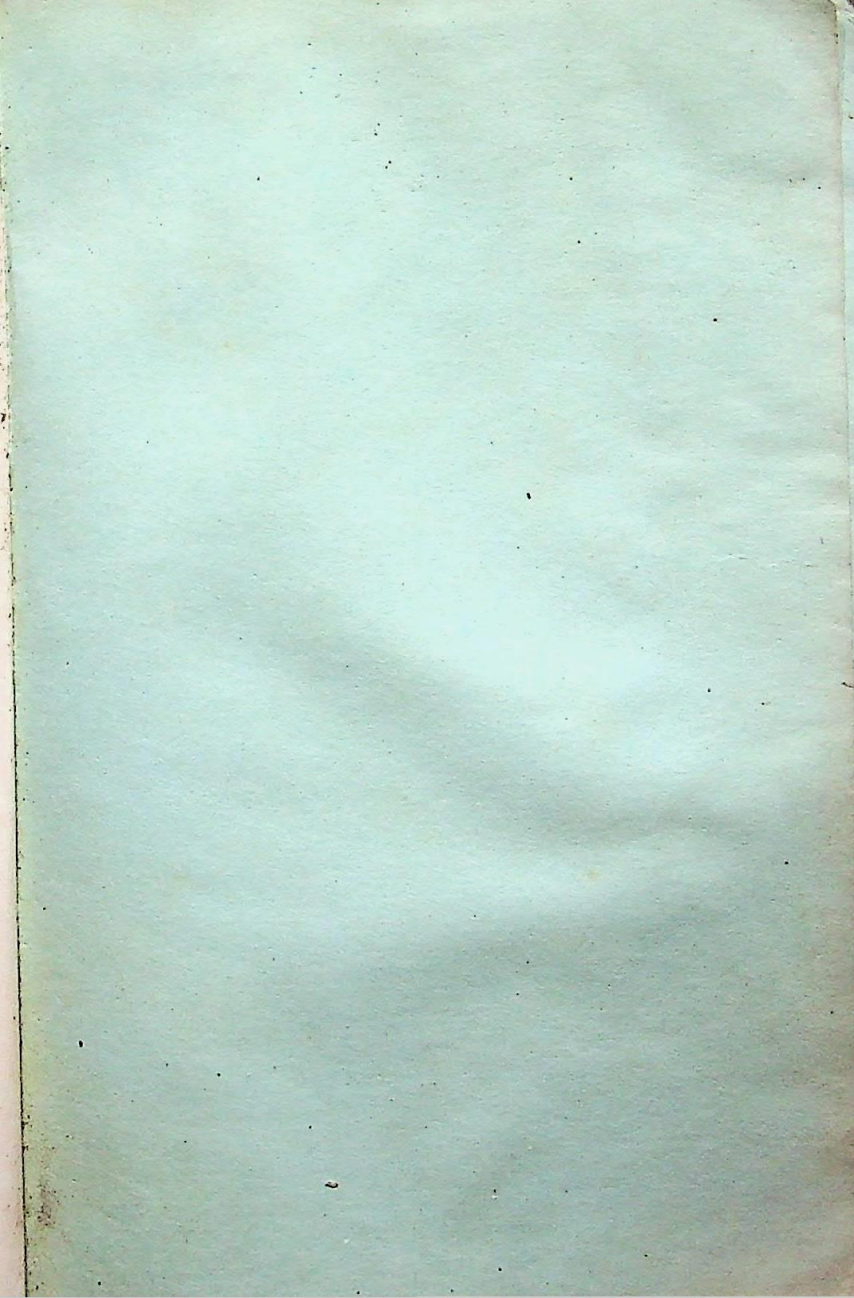
कोरिया की समुद्रपारीय सूचना सेवा
सउल, कोरिया